स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना

उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश

(व्यक्तित्व विकास एवं कॅरियर मार्गदर्शन हेतु स्नातक द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के लिए दृष्टि-पथ)

प्रार्थना

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को मेरा नमस्कार, वर दायिनी माँ भगवती को मेरा प्रणाम। अपनी विद्या आरम्भ करने से पूर्व आपका नमन करती/करता हूँ, मुझ पर अपनी सिद्धि की कृपा बनाये रखें।

शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपद:
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोस्तुते ॥

ऐसे देवता को प्रणाम करती/ करता हूँ, जो कल्याण करता है, रोग मुक्त रखता है, धन सम्पदा देता है, जो विपरीत बुद्धि का नाश करके मुझे सद मार्ग दिखाता है, ऐसी दिव्य ज्योति को मेरा नमस्कार।

ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात्, पूर्ण मुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवा वशिष्यते।
ॐ शांति: शांति: शांति:।।

वह जो (परब्रह्म) दिखाई नहीं देता है, वह अनंत और पूर्ण है, क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की ही उत्पत्ति होती है। यह दृश्यमान जगत भी अनंत है। उस अनंत से विश्व बहिर्गत हुआ। यह अनंत विश्व उस अनंत से बहिर्गत होने पर भी अनंत ही रह गया। ॐ शांति: शांति: शांति:।।

स्मरणीय बातें - जय जवान → जय किसान → जय विज्ञान → जय अनुसंधान

पञ्च प्रण :

(1) भारत को विकसित देश बनाना है।

(2) जीवन से गुलामी का अंश मिटाना है।

(3) हमें अपनी विरासत पर गर्व हो।

(4) एकता और एकजुटता पर जोर।

(5) नागरिकता के पालन पर जोर।

जुलाई –अगस्त

आषाढ़-श्रावण : परम्परा मानती है कि विद्यार्थी और शिक्षक के मध्य जो सम्बन्ध होता है, वह विद्यार्थी के अन्दर की निहित क्षमता को उत्प्रेरित कर बाहर लाता है। उसका पथ प्रदर्शन करता है। उसके भावी जीवन में आनेवाली चुनौतियों को सफलतापूर्वक सुलझाने में उसको दिशा बोध कराता है। यह बोध केवल किताबों को पढ़ लेने से नहीं आता। कबीर दास जी ने कहा है – 'गुरु कुम्हार सिख कुम्भ है, गढ़ि- गढ़ि काढ़े खोट। अंतर हाथ सहार दई, बाहर मारे चोट॥

यह चोट कौन सी है, तो ध्यान में आता है कि धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीयता का जागरण करना। पराधीनता काल में हमारे धर्म, संस्कृति के प्रति अनास्था पैदा करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से प्रयास हुए। शिक्षा में भी इस पक्ष की घोर उपेक्षा की गई। परिणाम यह कि स्वाधीनता से आज तक भी राष्ट्र, संस्कृति और जीवन मूल्यों के प्रति जो जागरूकता आनी चाहिए, नहीं आई।

आषाढ महीने की पूर्णिमा अर्थात् व्यास पूजा का दिन। व्यास पूजा का पवित्र दिन संस्कृति के निर्माताओं के पूजन का दिन होता है। वेदव्यास ने सभी विचारों का संकलन करके संसार को **'भारत: पंचमों वेद'** दिया। श्री कृष्ण ने **' मुनीनामप्यहम व्यास:'** कहकर उन्हें विभूति कहा। इसी तरह श्रावण पूर्णिमा, ज्ञाननिष्ठ व्रतियों के यज्ञोपवीत धारण करने का दिन , भाई-बहन के रक्षाबंधन का दिन, वंचित समाज के बीच जाकर उनको रक्षा-सूत्र बाँध कर सामाजिक समरसता बोध कराने का दिन है। ऐसे उत्सवों को सामूहिक रूप से मनाना चाहिए। स्थानीय कार्यक्रमों से विद्यार्थियों को सामाजिक सौहार्द बढाने की भूमिका समझाई जानी चाहिए। उद्यमिता अन्तर्गत महविद्यालयों में बने रक्षा-सूत्र अपने गाँव, महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गाँव की सेवा बस्तियों में वितरित किए जाने चाहिए तथा बांधने का कार्यक्रम भी रखना चाहिए। हरियाली महोत्सव अंतर्गत वृक्षारोपण का महत्व बताना चाहिए।

शिक्षक -विद्यार्थी करणीय कार्यक्रम: (i) प्रवेशिव विद्यार्थियों से रोजगार-स्वरोजगार हेतु रुचि के फॉर्म भरवाए जाएं। (ii) गुरुपूर्णिमा एवं रक्षाबंधन का उत्सव मनाया जाए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

पृष्ठभूमि: भारतीय संविधान के नीति निदेशक तत्वों में कहा गया है कि 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिये अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाए। 1948 में डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन हुआ था। तभी से राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण होना भी शुरू हुआ था। कोठारी आयोग (1964-1966) की सिफारिशों पर आधारित 1968 में पहली बार महत्त्वपूर्ण बदलाव वाला प्रस्ताव पारित हुआ था।

अगस्त 1985 'शिक्षा की चुनौती' नामक एक दस्तावेज तैयार किया गया, जिसमें भारत के विभिन्न वर्गों (बौद्धिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक, प्रशासकीय आदि) ने अपनी शिक्षा सम्बन्धी टिप्पणियाँ दीं और 1986 में भारत सरकार ने 'नई शिक्षा नीति 1986' का प्रारूप तैयार किया। इस नीति की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इसमें सारे देश के लिए एक समान शैक्षिक ढाँचे को स्वीकार किया और अधिकांश राज्यों ने 10 + 2 + 3 की संरचना को अपनाया। इस नीति में 1992 में संशोधन किया गया था। 2019 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति के लिये जनता से सलाह मांगना शुरू किया था। 7 अगस्त 2020 को शिक्षा नीति-2020 पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में ऑनलाइन बैठक हुई जिसमें प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. के कस्तूरीरंगन के साथ बिड़ला प्रोद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान , पिलानी, जामिया, पंजाब विश्वविद्यालय,तेजपुर विश्वविद्यालय तथा कालीकट विश्वविद्यालय, केरल ने भाग लिया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 क्या है ? : शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति 1986 में बनाई गई थी और 1992 में संशोधित की गई थी। एनईपी 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है और यह चौंतीस वर्ष बाद लाई गई है। इक्विटी, गुणवत्ता, वहनीयता और जवाबदेही के मूलभूत स्तंभों पर निर्मित यह नीति सतत विकास के लिए 2030 के एजेंडा के अनुरूप है। इसका उद्देश्य भारत को एक जीवंत ज्ञानी

समाज और वैश्विक ज्ञान महाशक्ति के रूप में बदलना है, जिसमें विद्यालयों और महाविद्यालयों दोनों को अधिक समग्र, लचीला, बहु-विषयक, 21वीं सदी की जरूरतों के अनुकूल बनाया गया है और इसका उद्देश्य प्रत्येक छात्र की अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना है।

29 जुलाई को तत्कालीन एमएचआरडी मंत्री रमेश पोखरियाल ने नई शिक्षा नीति 2020 का ड्राफ्ट पेश किया , राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 कब लागू होगी, इसके संबंध में कोई तिथि निर्धारित नहीं की गई थी। ड्राफ्टिंग विशेषज्ञों ने पूर्व कैबिनेट सचिव टी एस सुब्रमण्यन की अध्यक्षता वाले पैनल और एचआरडी मंत्रालय द्वारा गठित पैनल की रिपोर्ट को भी ध्यान में रखा। इसकी अध्यक्षता केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी कर रही थीं। केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 मंजूर की गई, जिनमें शीर्ष विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में कैंपस स्थापित करने की अनुमति देना, छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस नीति का लक्ष्य "भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति" बनाना है। 2040 तक, सभी उच्च शिक्षा संस्थान (HEI) का उद्देश्य बहु-विषयक संस्थान बनना होगा, जिनमें से प्रत्येक का लक्ष्य 3,000 या अधिक छात्र होंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्वरुप : (i) " राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 प्राथमिक से उच्च शिक्षा स्तर तक भारत की शिक्षा प्रणाली का भविष्य है। इसका उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना तथा शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाना है।" (ii) इस नीति के माध्यम से स्कूली बच्चों में से 2 करोड़ को मुख्य धारा में वापस लाया जाएगा। (iii) 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 साल की आंगनवाड़ी / प्री-स्कूलिंग के साथ एक नया 5 + 3 + 3 + 4 स्कूली पाठ्यक्रम शुरू किया गया है। (iv) राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के तहत वर्ष 2030 तक सकल नामांकन अनुपात जी ई आर (Gross Enrolment Ratio-GER) को 100% लाने का लक्ष्य रखा गया है। (v) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत शिक्षा क्षेत्र पर सकल घरेलू उत्पाद के 6% हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है। (vi) 'मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय' का नाम परिवर्तित कर 'शिक्षा मंत्रालय' कर दिया गया है।(vii) पाँचवीं कक्षा तक की शिक्षा में मातृभाषा/स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है। साथ ही मातृभाषा को कक्षा-8 और आगे की शिक्षा के लिये प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है। (viii) देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिये "भारतीय उच्च शिक्षा परिषद" नामक एक एकल नियामक की परिकल्पना की गई है। (ix) भारत की नई शिक्षा नीति के तहत स्टूडेंट को एक बड़ी राहत छठी कक्षा में मिलेगी क्योंकि छठी कक्षा से व्यवसायिक प्रशिक्षण इंटर्नशिप को भी आरंभ कर दिया जाएगा।
(x) पांचवी कक्षा तक मातृभाषा या फिर क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्रदान की जाएगी।

स्कूल शिक्षा के चार चरण- (i) **फाउंडेशन स्टेज :** फाउंडेशन स्टेज में 3 से 8 साल के बच्चे शामिल किए गए हैं , इस स्टेज में तीन साल की अपनी स्कूली शिक्षा तथा 2 साल की स्कूली शिक्षा जिसमें कक्षा 1 तथा 2 शामिल है। फाउंडेशन स्टेज में विद्यार्थियों को भाषा कौशल और शिक्षण के विकास के बारे में सिखाया जाएगा और इस पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। (ii) **प्रीप्रेटरी स्टेज** : प्रीप्रेटरी स्टेज के तहत 8 से लेकर 11 साल के बच्चे को शामिल किया गया है , प्रीप्रेटरी स्टेज के तहत कक्षा 3 से कक्षा 5 के बच्चे शामिल होंगे और इस स्टेज में बच्चों की भाषा और संख्यात्मक कौशल विकास शिक्षकों का उद्देश्य रहेगा। प्रीप्रेटरी स्टेज तक बच्चों को क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाया जाएगा। **(iii) मिडिल स्टेज** : मिडिल स्टेज के अंतर्गत कक्षा 6 से कक्षा 8 के विद्यार्थी शामिल होंगे, मिडिल स्टेज के तहत कक्षा 6 के विद्यार्थियों को कोडिंग सिखाया जाएगा , साथ ही उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण और इंटर्नशिप भी प्रदान की जाएगी। **(iv) सेकेंडरी स्टेज :** सेकेंडरी स्टेज में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है , सेकेंडरी स्टेज में विद्यार्थी पहले साइंस कॉमर्स तथा आर्ट्स लेते थे किंतु अब विद्यार्थी अपनी पसंद के साइंस और आर्टस के विषयों की पढ़ाई एक साथ कर सकेंगे।

प्रमुख परिवर्तन: शिक्षा तंत्र पर सकल घरेलू उत्पाद का कुल 6 प्रतिशत खर्च करने का लक्ष्य है जो इस समय 4.43% है। अब अनुसंधान के लिये तीन साल के स्नातक डिग्री के बाद एक साल स्नातकोत्तर करके पीएचडी में प्रवेश लिया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। व्यापक सुधार के लिए शिक्षक - प्रशिक्षण और सभी शिक्षा कार्यक्रमों को विश्वविद्यालयों या महाविद्यालयों के स्तर पर शामिल करने की सिफारिश की गई है।

प्राइवेट स्कूलों में मनमाने ढंग से फीस रखने और बढ़ाने को भी रोकने का प्रयास किया जाएगा। पहले 'समूह' के अनुसार विषय चुने जाते थे, किन्तु अब उसमें भी बदलाव किया गया है। जो छात्र इंजीनियरिंग कर रहे हैं, वह संगीत को भी अपने विषय के साथ पढ़ सकते हैं। इसमें रट्टा विद्या को ख़त्म करने की भी कोशिश की गई है जिसको मौजूदा व्यवस्था की बड़ी खामी माना जाता है। यदि किसी कारणवश विद्यार्थी उच्च शिक्षा के बीच में ही कोर्स छोड़ के चले जाते हैं तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पहले वर्ष में कोर्स को छोड़ने पर प्रमाण पत्र, दूसरे वर्ष में डिप्लोमा एवं अंतिम वर्ष में छोड़ने पर डिग्री देने का प्रावधान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत छात्र अब फिजिक्स के साथ फैशन डिजाइनिंग और केमिस्ट्री के साथ म्यूजिक भी पढ़ सकेंगे।

इस तरह राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य शैक्षिक क्षेत्र में भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाना है और भारत के लिए नई शैक्षिक नीतियों के माध्यम से संपूर्ण भारत में शिक्षा को उच्च स्तर प्रदान करना है। विद्यार्थियों को तकनीकी तथा रचनात्मकता के साथ-साथ शिक्षा की गुणवत्ता के महत्व से अवगत कराना है। शिक्षा में गुणवक्ता लाने के लिए यह केंद्र सरकार के तहत राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शुरू किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत छात्रों को मूल्य आधारित समावेशी शिक्षा प्रदान की जाएगी, उनके वैज्ञानिक मिजाज़ को विकसित किया जाएगा तथा उन्हें कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षकों की गुणवत्ता का स्तर और ऊपर उठाने के लिए कई प्रावधान किए गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) के स्वरूप में भी बदलाव होंगे। अभी तक टीईटी परीक्षा दो हिस्सों में बंटी हुई थी- पार्ट 1 और पार्ट 2 , लेकिन अब स्कूली शिक्षा व्यवस्था का स्ट्रक्चर चार हिस्सों में बंटा होगा – फाउंडेशन, प्रीपेरेटरी, मिडिल और सेकेंडरी। इसी के आधार पर टीईटी का पैटर्न भी सेट किया जाएगा। विषय शिक्षकों की भर्ती के समय टीईटी या संबंधित सब्जेक्ट में एनटीए टेस्ट स्कोर भी चेक किया जा सकता है। सभी विषयों की परीक्षाएं और एक कॉमन एप्टीट्यूट टेस्ट का आयोजन नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) करेगा।

शिक्षा नीति पर प्रधानमंत्री का सम्बोधन : 7 अगस्त, 2020 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर देश को संबोधित किया। जिसके प्रमुख बिंदु निम्न प्रकार हैं - (i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति नए भारत का आधार बनेगी। (ii)) राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत के छात्रों को ग्लोबल सिटीजन बनाएगी और इसी के साथ यह उन्हें अपनी सभ्यता से भी जोड़े रखेगी। (iii) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से छात्रों को अपने पैशन को फॉलो करने का अवसर प्रदान किया जाएगा। (iv) प्रधानमंत्री जी ने हार्ड मेंटेलिटी का भी जिक्र किया। (v) छात्रों को अपने इंटरेस्ट, एबिलिटी और डिमांड की मैपिंग करनी चाहिए। (vi) छात्रों को क्रिटिकल थिंकिंग को डेवलप करने की आवश्यकता है।(vii) प्रधानमंत्री जी कहा कि हम ऐसे युग में प्रवेश करने जा रहे हैं जहां एक इंसान एक प्रोफेशन अपनी पूरी जिंदगी फॉलो नहीं करेगा।viii) प्रधानमंत्री जी ने कहा कि अब तक एजुकेशन पॉलिसी 'व्हाट यू थिंक' पर फोकस करती थी, लेकिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 'हाउ टू थिंक' पर फोकस करेंगी। (ix) राष्ट्रीय शिक्षा नीति को इंप्लीमेंट करने के लिए शिक्षा विभाग से जुड़े लोगों का बहुत बड़ा योगदान होगा। टीचर्स ट्रेनिंग पर भी खास ध्यान देने की बात की है। (x) प्रधानमंत्री जी ने अपने संबोधन में मल्टीपल एंट्री तथा एग्जिट के बारे में भी विस्तार पूर्वक समझाया।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय पुरुष :

हनुमान् जनको व्यासो वसिष्ठश्च शुको बलिः।
दधीचिविश्वकर्माणौ पृथुवाल्मीकिभार्गवाः ॥

श्रीमद्भगवतगीता

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ।।

इसलिए तू निरन्तर आसक्ति से रहित होकर सदा कर्तव्य कर्म को भली भाँति करता रह क्योंकि आसक्ति से रहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।

लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि ।।

जनकादि ज्ञानीजन भी आसक्ति रहित कर्म द्वारा ही परम सिद्धि को प्राप्त हुए थे। इसलिए लोकसंग्रह को देखते हुए भी तू कर्म करने को ही योग्य है अर्थात् तुझे कर्म करना ही उचित है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।

महापुरुष जो-जो आचरण करता है, सामान्य मनुष्य भी उसी का ही अनुसरण करते हैं, वह श्रेष्ठ-पुरुष जो कुछ आदर्श प्रस्तुत कर देता है, समस्त संसार भी उसी का अनुसरण करने लगता है।

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन।

नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ।।

हे अर्जुन ! मुझे इन तीनों लोकों में न तो कुछ कर्तव्य है न ही कोई भी प्राप्त करने योग्य वस्तु अप्राप्त है, तो भी मैं कर्म में ही बरतता हूँ ।

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यन्द्रितः।

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।

क्योंकि हे पार्थ ! यदि कदाचित् मैं सावधान होकर कर्मों में न बरतूँ तो बड़ी हानि हो जाए, क्योंकि मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं।

रामचरितमानस

तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दंडवत मुनि उर लाए।।

मुनि मन मोद न कछु कहि जाई। ब्रह्मानंद रासि जनु पाई।।

तब प्रभु श्री रामजी भरद्वाजजी के पास आए। उन्हें दण्डवत करते हुए ही मुनि ने हृदय से लगा लिया। मुनि के मन का आनंद कुछ कहा नहीं जाता, मानो उन्हें ब्रह्मानन्द की राशि मिल गई हो ।।

कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे ।।

कंद मूल फल अंकुर नीके। दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के ।।

कुशल पूछकर मुनिराज ने उनको आसन दिए और प्रेम सहित पूजन करके उन्हें संतुष्ट कर दिया। फिर मानो अमृत के ही बने हों, ऐसे अच्छे-अच्छे कन्द, मूल, फल और अंकुर लाकर दिए ।।

सीय लखन जन सहित सुहाए। अति रुचि राम मूल फल खाए।।

भए बिगत श्रम रामु सुखारे। भरद्वाज मृदु बचन उचारे।।

सीताजी, लक्ष्मणजी और सेवक गुह सहित श्री रामचन्द्रजी ने उन सुंदर मूल-फलों को बड़ी रुचि के साथ खाया। थकावट दूर होने से श्री रामचन्द्रजी सुखी हो गए। तब भरद्वाजजी ने उनसे कोमल वचन कहे ।।

करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार।

तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार॥

जब तक कर्म, वचन और मन से छल छोड़कर मनुष्य आपका दास नहीं हो जाता, तब तक करोड़ों उपाय करने से भी, स्वप्न में भी वह सुख नहीं पाता॥

सो बड़ सो सब गुन गन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू॥

मुनि रघुबीर परसपर नवहीं। बचन अगोचर सुखु अनुभवहीं॥

(राम ने कहा-) हे मुनीश्वर ! जिसको आप आदर दें, वही बड़ा है और वही सब गुण समूहों का घर है। इस प्रकार श्री रामजी और मुनि भरद्वाज जी दोनों परस्पर विनम्र हो रहे हैं और अनिर्वचनीय सुख का अनुभव कर रहे हैं॥

पुनि सियँ राम लखन कर जोरी। जमुनहि कीन्ह प्रनामु बहोरी॥

चले ससीय मुदित दोउ भाई। रबि तनुजा कइ करत बड़ाई॥

फिर सीता, श्री राम और लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर यमुना को पुनः प्रणाम किया और सूर्य कन्या यमुना की बड़ाई करते हुए सीताजी सहित दोनों भाई प्रसन्नतापूर्वक आगे चले॥

जानी श्रमित सीय मन माहीं। घरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं॥

नारि नर देखहिं सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा॥

मन में सीताजी को थकी हुई जानकर घड़ी भर बड़ की छाया में विश्राम किया। स्त्री-पुरुष आनंदित होकर शोभा देखते हैं। अनुपम रूप ने उनके नेत्र और मनों को लुभा लिया है॥

थके नारि नर प्रेम पिआसे। मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से॥

सीय समीप ग्रामतिय जाहीं। पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं॥

प्रेम के प्यासे स्त्री-पुरुष ऐसे थकित रह गए जैसे दीपक को देखकर हिरनी और हिरन ! गाँव की स्त्रियाँ सीताजी के पास जाती हैं, परन्तु अत्यन्त स्नेह के कारण पूछते सकुचाती हैं॥

स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी। बिलगु न मानब जानि गवाँरी॥

राजकुअँर दोउ सहज सलोने। इन्ह तें लही दुति मरकत सोने॥

हे स्वामिनी! हमारी ढिठाई क्षमा कीजिएगा और हमको गँवारी जानकर बुरा न मानिएगा। ये दोनों राजकुमार स्वभाव से ही लावण्यमय हैं। मरकतमणि और सुवर्ण ने कांति इन्हीं से पाई है॥

बोध वाक्य – 'केवल सुसंस्कृत वाणी पुरुष को भली प्रकार अलंकृत करती है, अन्य आभूषण तो नष्ट हो जाते हैं किन्तु वाणी रूपी आभूषण सदा आभूषण बना रहता है।'-भर्तुहरि

बोध कथा:

सबके अंदर एक ही परमात्मा का वास

ऋषि शौनक और अभिप्रतारी अपने आश्रम में भोजन कर रहे थे। उसी समय किसी ब्रह्मचारी ने भिक्षा के लिए आवाज लगाई। ऋषियों ने उसे भोजन देने से इनकार करते हुए कहा कि यह समय उन्हें भोजन देने का नहीं है। यह सुन ब्रह्मचारी ने ऋषियों से प्रश्न किया कि आप अपना कर्म किसके लिए करते हैं ? ऋषियों ने उत्तर दिया, ईश्वर के लिए। उन्होंने फिर प्रश्न किया, अपना कर्म करने के लिए आप किस चीज को प्रयोग में लाते हैं ? ऋषियों का उत्तर था, तन का। तब उन्होंने पूछा कि ईश्वरीय कार्य करने के लिए आप तन को क्या देते हैं ? ऋषियों ने कहा भोजन। ब्रह्मचारी बोला, हे ऋषिगण ! आप महान तपस्वी हैं, ज्ञानी हैं, आप ईश्वर की उपासना में लगे हैं। ईश्वर के

कार्यों का दायित्व कुशलता से पूर्ण हो, इसलिए शरीर को भोजन देते हैं। साथ ही आप यह भी मानते हैं कि अंत:करण में ईश्वर का अंश है। इस नाते तन को भोजन देना ईश्वरीय उपहार को सम्मानित करने के बराबर है, मैं भी इसी तन के माध्यम से ईश्वरीय कार्य करता हूँ और मेरे अंत:करण में भी उसी परमपिता परमेश्वर का अंश है, जो आपके तन में है। फिर मेरे अंदर मौजूद ईश्वर को आप भोजन क्यों नहीं देना चाहते हैं ? यह सुनकर ऋषि लज्जित हो गए और उन्होंने तुरंत भोजन की व्यवस्था की। कठोपनिषद में कहा गया है कि जिस तरह सभी भवन में वायु मौजूद है, लेकिन अलग-अलग वस्तुओं के प्रयोग के कारण सभी अलग-अलग दिखते हैं। ठीक उसी तरह सभी प्राणियों के भीतर रहने वाले परमात्मा भी एक है, जबकि प्राणियों का रूप अलग-अलग है। इसलिए किसी के प्रति प्रेम, तो किसी के प्रति घृणा का भाव रखना उचित नहीं है।

मासिक गीत / गान :

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती॥

अमर्त्य वीर पुत्र हो, ढृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो।
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो बढ़े चलो॥

असंख्य कीर्ति रश्मियाँ, विकीर्ण दिव्य दाह-सी।
सपूत मातृभूमि के, रुको न शूर साहसी॥

अराति सैन्य सिन्धु में, सुबाड़वाग्नि से जलो।
प्रवीर हो जयी बनो, बढ़े चलो बढ़े चलो॥

(जय शंकर प्रसाद)

------------------------00------------------------------

प्राचीन - काल में कवियों की गणना के प्रसंग में सर्वश्रेष्ठ होने के कारण कालिदास का नाम कनिष्ठिका पर आया, किन्तु आज तक उनके समकक्ष कवि के अभाव के कारण, अनामिका पर किसी का नाम न आ सका और इस प्रकार अनामिका का नाम सार्थक हुआ। कालिदास कवि-कुल-गुरु माने जाते हैं। उन्होंने अपने विषय में कभी कुछ नहीं कहा, किन्तु उनकी रचनाएं ही उनका सम्यक् एवम् सटीक परिचय देती हैं। परम्परानुसार कालिदास उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों में से एक थे।

सितम्बर

भाद्रपद : श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक माह को चातुर्मास कहा जाता है। सनातन धर्म में चातुर्मास का बहुत महत्व है। इस चातुर्मास में आषाढ़ माह के पंद्रह और फिर श्रावण, भाद्रपद, आश्विन माह के बाद कार्तिक माह के पंद्रह दिन जुड़कर कुल चार माह का समय पूर्ण होता है। देश अलग -अलग प्रकार से श्री कृष्ण जी का जन्मोत्सव मनाता है। सितम्बर माह हिंदी दिवस के रूप में भी आता है। वस्तुत: मातृभाषा / राजभाषा हिंदी हमें अपनी संस्कृति के स्वरुप को समझने तथा उसके अनुरूप अपने जीवन को ढालने का अवसर प्रदान तो करती ही है,रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध कराती है। राजभाषा हमें राजपुत्र बनाती है। राजभाषा की शुभकामनाएं ।

शिक्षक -विद्यार्थी करणीय कार्यक्रम : -14 सितम्बर को हिंदी दिवस के अवसर पर मातृभाषा, राज्यभाषा, राजभाषा , सम्पर्क भाषा का परिचय कराया जाए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री:

पारस्परिक कौशल

पारस्परिक कौशल(Interpersonal Skills): पारस्परिक कौशल को रोजगार योग्यता कौशल भी कहा जाता है। रोजगार योग्यता कौशल वे कौशल हैं जो रोजगार पाने में सक्षम होते हैं। कई व्यक्तित्व कारक जो दूसरों के साथ बातचीत करते समय हमारे व्यवहार को प्रभावित करते हैं, उन्हें पारस्परिक कौशल कहा जाता है। प्रभावी पारस्परिक कौशल रखने वाले विभिन्न लोगों के साथ उचित रूप से संवाद करने में सक्षम होते हैं। इनमें से कुछ पारस्परिक कौशल कुछ हद तक अंतर्निहित हैं लेकिन उन्हें प्रयास से पोषित और विकसित भी किया जा सकता है। संबंधपरक कारक बताता है कि व्यक्ति अपना सर्वश्रेष्ठ काम क्यों करते हैं जब यह उनके अंतर्निहित हितों से सबसे अधिक निकटता से मेल खाता है। सॉफ्ट स्किल्स शब्द का व्यापक रूप से चयन और भर्ती में उपयोग किया जाता है। सॉफ्ट स्किल्स में लोगों के कौशल, सामाजिक कौशल, संचार कौशल, चरित्र या व्यक्तित्व लक्षण, दृष्टिकोण, कॅरियर विशेषताएँ, सामाजिक बुद्धिमत्ता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक संयोजन शामिल है, जो लोगों को अपने वातावरण के माध्यम से काम करने, दूसरों के साथ मिलकर काम करने और हासिल करने में सक्षम बनाता है।

अंतर्वैयक्तिक कौशल विकसित करने के लिए - (i) संचार कौशल- मौखिक और लिखित दोनों तरह से दूसरों के साथ स्पष्ट और प्रभावी ढंग से संवाद करें। सुनना भी एक ऐसा कौशल है जो अच्छे संचार के साथ-साथ चलता है। (ii) संघर्ष समाधान- वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा दो या दो से अधिक पक्ष किसी विवाद के शांतिपूर्ण समाधान पर पहुंचते हैं। यदि आपके पास यह क्षमता है तो यह कार्यस्थल पर उत्पादकता में मदद करता है। (iii) टीम वर्क- भले ही नौकरी में स्वतंत्र कार्य शामिल हो, लेकिन हमेशा ऐसे क्षेत्र होंगे जहां किसी को दूसरों के साथ सहयोग करने की आवश्यकता होती है। (iv) सहानुभूति- दूसरों के साथ जो हो रहा है उसे समझना और महसूस करना आपको सहानुभूतिपूर्ण और मानवीय बनाता है। रोजगार के लिए एक बहुत ही वांछनीय गुण। (v) सकारात्मक दृष्टिकोण- आपको मिलनसार, उज्ज्वल, सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला और अपने सहयोगियों के साथ किसी प्रकार के सकारात्मक संबंध विकसित करने के लिए तैयार होना चाहिए। (vi) बातचीत- इसमें औपचारिक समझौते (या अनुबंध) बनाना, किसी समस्या का समाधान करना और समाधान निर्धारित करना शामिल हो सकता है। एक अच्छा वार्ताकार बनने के लिए, आपको दूसरों की बात सुननी चाहिए, समस्या समाधान करने के लिए रचनात्मक होना चाहिए और एक ऐसे परिणाम पर पहुंचने के लिए तैयार रहना चाहिए जो सभी को संतुष्ट करे। (vii) प्रभाव- एक रोजगारपरक व्यक्ति का आसपास के लोगों पर बहुत प्रभाव होता है। इससे काम आसानी से करने में मदद मिलती है। (viii) पारस्परिक सुविधा- यदि आप दूसरों के काम को सुगम बनाने में मदद करने की क्षमता रखते हैं, तो यह एक बहुत ही सकारात्मक कौशल है। (ix) संबंधपरक रचनात्मकता- रचनात्मकता मुद्दों को एक निश्चित दृष्टिकोण के बजाय एक अलग दृष्टिकोण से देखने में मदद करती है। (x) टीम नेतृत्व- जो टीम के काम करने के लिए प्रेरित करने, प्रोत्साहित करने, जिम्मेदार होने और जवाबदेह बने रहने के इच्छुक हैं, टीम नेतृत्व का प्रदर्शन करते हैं।

पारस्परिक कौशल का उद्देश्य: - अच्छे श्रोता, गैर-आलोचनात्मक, दूसरों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखने के लिए आवश्यक कौशल। (i) क्षमता निर्माण- दूसरों के साथ रचनात्मक रूप से कार्य करना, स्पष्ट रूप से संवाद करना, नए विचारों को शामिल करना, समूह इनपुट और प्रतिक्रिया को कार्य में शामिल करना। (ii) संघर्ष समाधान- इसमें मित्रों और परिवार के सदस्यों के बीच एक ऐसे मुद्दे को हल करने की क्षमता शामिल हो सकती है जो कार्यस्थल में भी अपेक्षित है। आपको दोनों पक्षों के प्रति निष्पक्ष होना होगा और समाधान पर पहुंचने के लिए रचनात्मक समाधान का उपयोग करना होगा।

पारस्परिक कौशल का महत्व: किसी व्यक्ति के बारे में जानकारी एकत्र करना। दूसरों के दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करना। संपर्क बनाना और संबंध बनाए रखना। व्यक्तिगत जरूरतों को व्यक्त करने और दूसरों की जरूरतों को समझने के लिए। भावनात्मक समर्थन दें और प्राप्त करें। निर्णय लें और समस्याओं का समाधान करें। शक्ति को विनियमित करें।

अशाब्दिक संचार की भूमिका- (i) चेहरे के भाव अशाब्दिक संचार के एक बड़े अनुपात के लिए जिम्मेदार हैं। (ii) इशारों में संख्यात्मक मात्रा को इंगित करना और उंगलियों का उपयोग करना शामिल है। वोकल कम्युनिकेशन में आवाज की टोन, लाउडनेस और पिच जैसे कारक शामिल होते हैं। (iii) शरीर की भाषा और मुद्रा किसी व्यक्ति के बारे में सूक्ष्म पहलुओं को भी संप्रेषित कर सकती है। (iv) किसी अन्य व्यक्ति के साथ आकस्मिक बातचीत करते समय आवश्यक व्यक्तिगत स्थान की मात्रा आमतौर पर 18 इंच से चार फीट के बीच होती है। वहीं भीड़ से बात करते समय आवश्यक व्यक्तिगत दूरी लगभग 10 से 12 फीट है। (v) लगातार आँख मिलाना इस बात का संकेत हो सकता है कि कोई व्यक्ति सच कह रहा है और भरोसेमंद है। आँख से संपर्क बनाए रखने में असमर्थता, यह संकेत दे सकती है कि कोई व्यक्ति झूठ बोल रहा है या धोखा दे रहा है।

प्रश्न जो पारस्परिक कौशल का परीक्षण करते हैं- (i) आपका सबसे अच्छा और सबसे बुरा दोस्त कौन था, और क्यों ? (ii) आपकी सेवा से आपको क्या अपेक्षाएं हैं ? (iii) आप अपने घर के झगड़ों का समाधान कैसे करते हैं ? (iv) आप अपने मित्र को प्रेरित करने के लिए किन तरीकों का उपयोग करेंगे ? (v) क्या आप किसी टीम का हिस्सा बनना चाहेंगे या काम करते हुए अकेले रहना चाहेंगे ? (vi) जब लोग आपकी आलोचना करते हैं, तो वे सबसे ज्यादा किसका जिक्र करते हैं ? (vii) दूसरों के साथ घुलने-मिलने में क्या दिक्कत आती है, वो क्या है ? (viii) आप किस तरह के व्यक्ति के लिए काम करना पसंद करते हैं ? (ix) हाई स्कूल से लेकर आज तक अपने बदलाव का आप कैसे वर्णन करेंगे ? (x) मुझे उन चुनौतियों के बारे में बताएं जिनका सामना आप दूसरों के साथ मिलकर करते हैं ? (xi) कुछ व्यक्तिगत लक्षणों के नाम बताइए जो सफलता प्राप्त करने के लिए अनिवार्य हैं ? (xii) अपने जीवन और कॅरियर में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति का नाम बताएं ? (xiii). अपने नए दोस्तों में आप कौन से बुनियादी गुण चाहते हैं ? (xiv) अपने बचपन के करीबी दोस्त के व्यक्तित्व, रुचियों के बारे में बताएं जिन्होंने आपको बहुत प्रभावित किया है ? (xv) अगर कोई विकल्प होता तो आप अपने व्यक्तित्व के बारे में क्या बदलेंगे ?

सकारात्मक व्यक्तित्व परिवर्तन और पारस्परिक कौशल विकसित करने के लिए: (i) सभी प्रासंगिक तथ्यों के बारे में स्वय संतुष्ट हों (ii) एक दूसरे में आपसी विश्वास स्थापित करें और कभी भी अविश्वास के साथ बातचीत शुरू न करें (iii) अनुभव का एक सामान्य आधार खोजें और संबंध बनाने की कोशिश करें (iv) परस्पर ज्ञात शब्दों का प्रयोग करें और पहली बैठक में अपनी शब्दावली दिखाने से बचें (v) संदर्भ के लिए सम्मान रखें और विभिन्न पृष्ठभूमि को स्वीकार करें (vi) रिसीवर को ध्यान से सुनें और पकड़ें तथा शीघ्रता से बचें (vii) उदाहरणों, दृश्य विज्ञापनों और हास्य को तभी उपयोग करें जब आत्मविश्वास हो (viii) प्रतिक्रियाओं में देरी करने और अत्यधिक राय व्यक्त करने का अभ्यास करें।

सत्र का निष्कर्ष : अपने कवरिंग लेटर और रिज्यूमे में अपने पारस्परिक कौशल पर जोर देना याद रखें, और फिर नौकरी के साक्षात्कार के दौरान अपने व्यवहार के साथ उन कौशलों को दिखाएं। एक्सटेम्पोर स्पीच का मतलब है कि आपको अपने व्यक्तिगत साक्षात्कार के दौरान बिना किसी तैयारी के किसी भी विषय पर एक या दो मिनट के लिए बोलने की आवश्यकता है। जहाँ तक संभव हो

अतिश्योक्ति से बचें और प्रश्नों के सभी संभावित उत्तरों के लिए तैयार रहें। प्रभावी पारस्परिक कौशल हमारे पक्ष में दूसरों के व्यवहार और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा:

स्मरणीय पुरुष -

भगीरथश्चैकलव्यो मनुर्धन्वन्तरिस्तथा।

शिविश्च रन्तिदेवश्च पुराणोद्गीतकीर्तय: ॥

श्रीमद्भगवतगीता

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।

अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥

जीवात्मा अहंकार के प्रभाव से मोहग्रस्त हो कर अपने आपको समस्त कर्मों का कर्ता मान बैठता है जबकि वास्तव में जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी कर्म प्रकृति के गुणों के द्वारा सम्पन्न किए जाते हैं।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

अच्छी प्रकार आचरण में लाए हुए दूसरों के धर्म से गुण रहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है॥

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।

महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम्॥

श्री कृष्ण ने कहा - इसका कारण रजोगुण से उत्पन्न होने वाले काम (विषय-वासना) और क्रोध बड़े पापी है, तू इन्हे ही इस संसार में अग्नि के समान कभी न तृप्त होने वाले महान-शत्रु समझ।

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।

विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्॥

श्री भगवान बोले,मैंने इस अविनाशी योग को सूर्य से कहा था, सूर्य ने अपने पुत्र वैवस्वत मनु से कहा और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु से कहा॥

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

हे भारत ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ॥

रामचरितमानस

ग्राम बधूटियों से सीता का संवाद -

कोटि मनोज लजावनिहारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे॥

सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी॥

हे सुमुखि! कहो तो अपनी सुंदरता से करोड़ों कामदेवों को लजाने वाले ये तुम्हारे कौन हैं ? उनकी ऐसी प्रेममयी सुंदर वाणी सुनकर सीताजी सकुचा गईं और मन ही मन मुस्कुराईं॥

तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी। दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी॥

सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी। बोली मधुर बचन पिकबयनी॥

उत्तम गौरवर्ण वाली सीता जी उनको देखकर पृथ्वी की ओर देखती हैं। वे दोनों ओर के संकोच से सकुचा रही हैं। हिरन के बच्चे के सदृश नेत्रवाली और कोकिल की सी वाणी वाली सीता जी सकुचाकर प्रेम सहित मधुर वचन बोलीं॥

सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नामु लखनु लघु देवर मोरे॥

बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी। पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी॥

ये जो सहज स्वभाव, सुंदर और गोरे शरीर के हैं, उनका नाम लक्ष्मण है, ये मेरे छोटे देवर हैं। फिर सीता जी ने अपने चन्द्रमुख को आँचल से ढँककर और प्रियतम की ओर निहारकर भौंहें टेढ़ी करके॥

खंजन मंजु तिरीछे नयननि। निज पति कहेउ तिन्हहि सियँ सयननि॥

भईं मुदित सब ग्राम बधूटीं। रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं॥

खंजन पक्षी के से सुंदर नेत्रों को तिरछा करके सीता जी ने इशारे से उन्हें कहा कि ये मेरे पति हैं। यह जानकर गाँव की सब युवती स्त्रियाँ इस प्रकार आनंदित हुईं, मानो कंगालों ने धन की राशियाँ लूट ली हों॥

पारबती सम पतिप्रिय होहू। देबि न हम पर छाड़ब छोहू॥

पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी। जौं एहि मारग फिरिअ बहोरी॥

पार्वती जी के समान अपने पति की प्यारी होओ। हे देवी ! हम पर कृपा न छोड़ना। हम बार-बार हाथ जोड़कर विनती करती हैं, जिससे आप फिर इसी रास्ते लौटें॥

लखन जानकी सहित तब गवनु कीन्ह रघुनाथ।

फेरे सब प्रिय बचन कहि लिए लाइ मन साथ॥

तब लक्ष्मणजी और जानकी जी सहित श्री रघुनाथजी ने गमन किया और सब लोगों को प्रिय वचन कहकर लौटाया, किन्तु उनके मनों को अपने साथ ही लगा लिया॥

आगें रामु लखनु बने पाछें। तापस बेष बिराजत काछें॥

उभय बीच सिय सोहति कैसें। ब्रह्म जीव बिच माया जैसें॥

आगे श्री रामजी हैं, पीछे लक्ष्मणजी सुशोभित हैं। तपस्वियों के वेष बनाए दोनों बड़ी ही शोभा पा रहे हैं। दोनों के बीच में सीताजी कैसी सुशोभित हो रही हैं, जैसे ब्रह्म और जीव के बीच में माया !॥

श्री राम-वाल्मीकि संवाद:

मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा। आसिरबादु बिप्रबर दीन्हा॥

देखि राम छबि नयन जुड़ाने। करि सनमानु आश्रमहिं आने॥

श्री रामचन्द्रजी ने मुनि को दण्डवत किया। विप्र श्रेष्ठ मुनि ने उन्हें आशीर्वाद दिया। श्री रामचन्द्रजी की छबि देखकर मुनि के नेत्र शीतल हो गए। सम्मानपूर्वक मुनि उन्हें आश्रम में ले आए॥

तब कर कमल जोरि रघुराई। बोले बचन श्रवन सुखदाई॥

तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा। बिस्व बदर जिमि तुम्हरें हाथा॥

अस कहि प्रभु सब कथा बखानी। जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनु रानी॥

तब श्री रघुनाथजी कमल सदृश हाथों को जोड़कर, कानों को सुख देने वाले मधुर वचन बोले॥ हे मुनिनाथ ! आप त्रिकाल दर्शी हैं। सम्पूर्ण विश्व आपके लिए हथेली पर रखे हुए बेर के समान है। प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने ऐसा कहकर फिर जिस-जिस प्रकार से रानी कैकेयी ने वनवास दिया, वह सब कथा विस्तार से सुनाई॥

तात बचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ।

मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभाउ॥

हे प्रभो ! पिता की आज्ञा, माता का हित और भरत जैसे भाई का राजा होना और फिर मुझे आपके दर्शन होना, यह सब मेरे पुण्यों का प्रभाव है॥

मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं। ते नरेस बिनु पावक दहहीं॥

मंगल मूल बिप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू॥

क्योंकि जिनसे मुनि और तपस्वी दुःख पाते हैं, वे राजा बिना अग्नि के ही जलकर भस्म हो जाते हैं। ब्राह्मणों का संतोष सब मंगलों की जड़ है और भू-देव ब्राह्मणों का क्रोध करोड़ों कुलों को भस्म कर देता है॥

अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ॥

तहँ रचि रुचिर परन तृन साला। बासु करौं कछु काल कृपाला॥

ऐसा हृदय में समझकर- वह स्थान बतलाइए जहाँ मैं लक्ष्मण और सीता सहित जाऊँ और वहाँ सुंदर पत्तों और घास की कुटी बनाकर, हे दयालु ! कुछ समय निवास करूँ॥

राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धि पर।

अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह॥

हे राम ! आपका स्वरूप वाणी के अगोचर, बुद्धि से परे, अव्यक्त, अकथनीय और अपार है। वेद निरंतर उसका 'नेति-नेति' कहकर वर्णन करते हैं॥

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई॥

तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन॥

वही आपको जानता है, जिसे आप जना देते हैं और जानते ही वह आपका ही स्वरूप बन जाता है। हे रघुनंदन ! हे भक्तों के हृदय को शीतल करने वाले चंदन ! आपकी ही कृपा से भक्त आपको जान पाते हैं॥

चिदानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी॥

नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा॥

आपकी देह चिदानन्दमय है और सब विकारों से रहित है, इस रहस्य को अधिकारी पुरुष ही जानते हैं। आपने देवता और संतों के कार्य के लिए नर शरीर धारण किया है और प्राकृत राजाओं की तरह से कहते और करते हैं॥

राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे॥

तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा। जस काछिअ तस चाहिअ नाचा॥

हे राम! आपके चरित्रों को देख और सुनकर मूर्ख लोग तो मोह को प्राप्त होते हैं और ज्ञानी जन सुखी होते हैं। आप जो कुछ कहते, करते हैं, वह सब सत्य (उचित) ही है, क्योंकि जैसा स्वाँग भरे वैसा ही नाचना भी तो चाहिए॥

बोध वाक्य: "अगर हम दुनिया के इतिहास को देखें, तो पायेंगे की सभ्यता का निर्माण उन महान ऋषियों और वैज्ञानिकों के हाथ हुआ है, जो स्वयं विचार करने का सामर्थ्य रखते हैं, जो देश और काल की गहराइयों में प्रवेश करते हैं, उनके रहस्यों का पता लगाते हैं, और इस तरह से प्राप्त ज्ञान का उपयोग विश्व श्रेय या लोक कल्याण के लिए करते हैं।"- डॉ.राधाकृष्णन

बोध कथा :

प्रकृति, विकृति और संस्कृति

एक प्रसिद्ध कहावत है कि अपनी रोटी खाना प्रकृति, दूसरे की रोटी खा लेना विकृति, तथा अपनी रोटी दूसरे को खिला देना संस्कृति है। इस संबंध में एक पुराना प्रसंग- युद्धिष्ठिर ने एक बार राजसूय यज्ञ किया। यज्ञ के बाद दूर-दूर से आये विद्वानों को भरपूर दान देकर सम्मान सहित विदा किया गया। सब लोग यज्ञ की सफलता से बहुत प्रसन्न थे। एक दिन सभी परिवारजन बैठे थे कि एक नेवला वहां आया। उसे देखकर सब आश्चर्यचकित रह गये। उसके शरीर का आधा हिस्सा सुनहरा था, जबकि शेष हिस्सा सामान्य नेवले जैसा था। वह नेवला अचानक मनुष्यों जैसी भाषा बोलने लगा।

नेवला बोला - महाराज युद्धिष्टिर, यह ठीक है कि आपने यज्ञ में बहुत दान दिया है। यज्ञ भी समुचित विधि-विधान से हुआ है। आपको बहुत पुण्य और यश भी मिला है। फिर भी आपके यज्ञ में वह बात नहीं है, जो उस निर्धन अध्यापक के यज्ञ में थी। सब लोग हैरान हो गये। युद्धिष्टिर बोले तुम किस यज्ञ की बात कर रहे हो। कृपया हमें उसके बारे में कुछ बताओ तुम्हारे शरीर का आधा भाग सुनहरा और शेष भाग सामान्य नेवले जैसा क्यों है ?

नेवाला बोला -महाराज में जहां से आ रहा हूं वहां भयानक अकाल पड़ा है। वह एक निर्धन अध्यापक अपनी पत्नी, पुत्र और पुत्रवधू के साथ रहता था। वे घर आये अतिथि का भगवान समझकर सत्कार करते थे। वर्षो से वे इस परम्परा को निभा रहे थे लेकिन अकाल के कारण उन्हें प्रायः कई दिन तक भूखा रहना पड़ रहा था। एक दिन वह अध्यापक कहीं से थोड़ा आटा लाया। उसकी पुत्रवधू ने उससे पांच रोटी बनायी। एक रोटी भगवान को अर्पण कर उन्होंने एक-एक रोटी आपस में बांट ली। वे खाना प्रारम्भ कर ही रहे थे कि अचानक द्वारा पर एक भिक्षुक दिखायी दिया। उसके शरीर को देखकर ही लग रहा था कि कई दिनों उसके पेट में अन्न का दाना भी नहीं गया है।

अध्यापक ने उसका सत्कार किया और अपनी रोटी उसे दे दी। पर उसकी भूख शांत नहीं हुई। अब अध्यापक की पत्नी ने अपने हिस्से की रोटी भी उसकी थाली में डाल दी। इसी प्रकार क्रमशः पुत्र और पुत्रवधू ने भी अपनी रोटी उन अतिथि महोदय को दे दी। चारों रोटी खाकर वह तृप्त हो गया और आशीर्वाद देकर चला गया।

नेवला बोला- महाराज, उस भिक्षुक के जाने के बाद मैं वहां आया, तो उस धरती पर गिरे कुछ अन्नकण मेरे शरीर से छू गये। बस उसी समय मेरा आधा शरीर सुनहरा हो गया। तब से मैं देश-विदेश में भटक रहा हूँ। जहॉं भी कोई बड़ा धार्मिक कार्यक्रम होता है, वहां जाता हूँ। आपके यज्ञ की भी मैंने बहुत प्रशंसा सुनी थी, पर यहां भी मेरा शेष शरीर सुनहरा नहीं हुआ। इसका अर्थ साफ है कि आपके इस यज्ञ का महत्व निर्धन अध्यापक के यज्ञ से कम है। यह कहानी हमें प्रकृति, विकृति और संस्कृति का अंतर स्पष्ट करते हुए बताती है कि भारतीय संस्कृति ही अपनी रोटी दूसरे को खिला देने की प्रेरणा देती है।

मासिक गीत / गान :

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय कौ सूल।
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।
उन्नति पूरी है तबहिं जब घर उन्नति होय

निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय ।।
निज भाषा उन्नति बिना, कबहुं न ह्यैहैं सोय
लाख उपाय अनेक यों भले करे किन कोय ।।
इक भाषा इक जीव इक मति सब घर के लोग
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग ।।
और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात
निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात।।
तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनै जो कोय
यह गुन भाषा और महं, कबहूं नाहीं होय।।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार ।।
भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात ।।
सब मिल तासों छांड़ि कै, दूजे और उपाय
उन्नति भाषा की करहु, अहो भ्रातगन आय ।।

---------------------------------------00---------------------------------------

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वंगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकं वधीः काममोहितम् ।।

हे दुष्ट, तुमने प्रेम में मग्न क्रौंच पक्षी को मारा है। जा तुझे कभी भी प्रतिष्ठा की प्राप्ति नहीं हो पायेगी और तुझे भी वियोग झेलना पड़ेगा।

-------------------00-------------------

अक्टूबर

आश्विन : नवरात्रि अर्थात् शक्ति की उपासना के दिन। कोई भी नैतिक मूल्य केवल अच्छे होने से ही नहीं टिकते हैं , उनके अस्तित्व के लिए समर्थ लोगों की तपस्या चाहिए। दुर्बल लोगों के सत्य, संस्कार और संस्कृति को कोई नहीं पूछता है। नवरात्रि की कहानी में महिषासुर नाम का एक राक्षस आता है जो अपने बल से देवताओं को बार-बार पराजित करता है। माना जाता है की देवी देवताओं की प्रार्थना पर प्रसन्न होकर महिषासुर का वध करती हैं। हमारी यह धारणा भी ठीक नहीं कि असुर कोई बड़े दांत, नाखून और बड़ी आँखों वाले होते हैं। वास्तव में असुर यानी 'असुषु रमन्ते इति असुराः'। अनादि काल से सद्विचारों पर, दैवी विचारों पर आसुरी वृत्ति आक्रमण करती आई है। वस्तुत भारतीय संस्कृति वीरता की उपासक रही है, चाहे वह नवरात्रि हो या विजया दशमी। इसी तरह आश्विन माह में

शरद पूर्णिमा के दिन जागृति का उत्सव मनाया जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भी उस दिन चन्द्र पृथ्वी के अधिक समीप होता है। माना जाता है की उस दिन का चन्द्रमा वर्ष भर के चन्द्रमा से बड़ा दिखाई देता है।

शिक्षक – विद्यार्थी करणीय बातें- महर्षि वाल्मीकि जयंती, स्वामी रामतीर्थ, महात्मा गाँधी, लालबहादुर शास्त्री, जयप्रकाश नारायण के स्मरण का मास है। इन सब को आधार बना कर वक्तृत्व कला एवं नेतृत्व क्षमता के विकास के लिए सामान्य ज्ञान आधारित प्रश्न-मंच प्रतियोगिता का आयोजन कराना चाहिए। कुछ सांकेतिक प्रश्न - रामायण किसकी कृति है ? रामतीर्थ कौन थे ? आर्य समाज की स्थापना किसने की ? भारत में मुद्रास्फीति की गणना किस पर आधारित है ? रबी की फसलों की बुआई कब की जाती है? मांडू कहाँ स्थित है ? नर्मदा किस दिशा में बहती है ? रामचरित मानस में तीन वक्ता और तीन श्रोता कौन-कौन हैं ?

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

अंतर्वैयक्तिक कौशल भाग- एक

अंतर्वैयक्तिक कौशल दैनिक जीवन में आनेवाली समस्याओं के निराकरण/ निदान में सहायता प्रदान करता है। जीवन कौशल (व्यवहार कौशल सहित) व्यक्तित्व विकास और कौशल उन्नयन में वह सहायक साधन है, जो विद्यार्थीयों को न केवल रोजगारपरकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि उनके सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन को भी एक ऊँचाई प्रदान करता हैं। अंतर्वैयक्तिक कौशल हमें रोजगारपर तथा स्वरोजगार की ओर उन्मुख करता है।

व्यक्ति के विचारों को हर कोई सरलता से पढ़ नहीं सकता, ऐसे में हमें अपने आचरण / व्यवहार से अपने व्यक्तित्व का परिचय देना होता है। अंतर्वैयक्तिक कौशल के उपयोग से जीवन में आने वाली अनेक समास्याओं एवं जटिल परिस्तिथियों को भी संभाला जा सकता है। अंतर्वैयक्तिक कौशल एक प्रभावी साधन है, जो अन्य लोगों कि सोच को हमारे पक्ष में परिवर्तन करने में सहयोगी है। अंतर्वैयक्तिक कौशल का जितना अभ्यास करेंगे उतने सही ढंग से, सरलता और आत्मविश्वास से आप अपने जीवन में सहजता से इनका उपयोग कर सकेंगे और परिणामस्वरुप आपको अपेक्षित सफलता प्राप्त होगी।

1. **परिभाषा:** अंतर्वैयक्तिक कौशल वह प्रवृत्ति है जो हमारी उस दक्षता को प्रकाशित करती है, जिसके माध्यम से हम दूसरे लोगों से जुड़ते हैं। अंतर्वैयक्तिक कौशल को स्वयं और दूसरों के विकास के लिए पूर्ण रूप से आत्मसात करना आवश्यक है। यह सोच समझ के प्रतिक्रिया देने एवं व्यवहार कौशल में परिपक्वता प्रदर्शन करने हेतु उपयोगी है।
2. **अंतर्वैयक्तिक कौशल का महत्व** : किसी व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा करने तथा दूसरों के व्यवहार और मनोवृत्ति को प्रभावित करने में सहायक होता है। संपर्क जोड़ने और संबंध बनाए रखने, भावनात्मक समर्थन देने और प्राप्त करने एवं अपनी कार्य क्षमता एवं दक्षता को विनियमित करने में मददगार सिद्ध होता है।
3. **अंतर्वैयक्तिक कौशल के लाभ :** यह कौशल बातचीत, समझौता, सफलता में अहम् भूमिका निभाता है। स्वयं के व्यक्तित्व विकास में प्रेरणा देता है। व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन रहता है।
4. **पारस्परिक कौशल विकसित करने की प्रक्रिया- (i)** सभी प्रासंगिक तथ्यों के बारे में अपने को पूरी तरह से अद्यतन रखना **(ii)** हर परिस्थिति में पारस्परिक विश्वास स्थापित करें। **(iii)** अनुभव का एक सामान्य आधार खोजें और तालमेल बनाने का प्रयास करें। **(iv)** पहली भेंट में परस्पर ज्ञात शब्दों का प्रयोग करें। **(v)** सन्दर्भों का सम्मान करें और विभिन्न व्यक्तिगत पृष्ठभूमियों को स्वीकार करें। **(vi)** दूसरों की भावनाओं का ध्यान रखें और अपनी ही बात करते रहने से बचे। **(vii)** बातचीत में हास्य का प्रयोग तभी करें जब पूर्ण विश्वास हो कि उपयुक्त समय और स्थान है।
5. **वर्तमान समय में अंतर्वैयक्तिक कौशल- (i)** ऐसे कौशल के कारण ही व्यक्ति में आत्मविश्वास तथा सम्बन्धों के निर्माण की प्रवृत्ति प्रबल होती है। **(ii)** विभिन्न परिस्थितियों में संवाद स्थापित करने में कोई झिझक नहीं होती और वह स्पष्टता के साथ

तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात रख पाता है। **(iii)** सामाजिक तथा सांस्कृतिक विविधता वाले इस देश में समस्याओं के समाधान के लिए इस कौशल से युक्त होना पड़ता है।

6. **प्रतिभा और अंतर्वैयक्तिक कौशल में अंतर:** प्रतिभा जन्मतः प्रदत्त क्षमता है, जबकि कौशल एक ऐसी क्षमता है जो आप समय देकर विकसित कर सकते हैं और प्रयास से बेहतर सुधार भी कर सकते हैं।
7. **भावनात्मक बुद्धि:** अंतर्वैयक्तिक कौशल के विकास के लिए भावनात्मक बुद्धि को बढ़ाने की आवश्यकता है। इसे संवेगात्मक बुद्धि भी कहा जा सकता है। अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने की क्षमता, अलग भावनाओं के बीच भेदभाव और उन्हें उचित रूप से पहचान कर उसके उपयोग करने को संवेगात्मक बुद्धि (इमोशनल इन्टेलिजेन्स) कहते हैं।
8. **अच्छे पारस्परिक कौशल के संकेत-** टीम वर्क , श्रवण कौशल का प्रदर्शन, उत्तरदायित्व वहन करने की क्षमता, दूसरों की प्रशंसा करना और परिस्थिति के अनुसार समायोजित होना।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय पुरुष :

बुद्धा जिनेन्द्रा गोरक्षः पाणिनिश्च पतञ्जलिः।
शङ्करो मध्वनिंबार्कौ श्रीरामानुजवल्लभौ॥

श्रीमद्भगवतगीता

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ॥

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥

जो भक्त मुझे जिस प्रकार से भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार से भजता हूँ। हे अर्जुन! ऐसे सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं॥

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्धयकर्तारमव्ययम्॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र- इन चार वर्णों का समूह, गुण और कर्मों के विभाग पूर्वक मेरे द्वारा रचा गया है। इस प्रकार उस सृष्टि-रचनादि कर्म का कर्ता होने पर भी मुझ अविनाशी परमेश्वर को तू वास्तव में अकर्ता ही जान॥

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते॥

मुझे कर्मों के फल की कामना नहीं है इसलिए कर्म मुझे लिप्त नहीं करते। इस प्रकार जो तत्त्व से मुझे जान लेता है, वह भी कर्मों से नहीं बँधता॥

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पंडितं बुधाः॥

जिसके सम्पूर्ण शास्त्र सम्मत कर्म बिना कामना और संकल्प के होते हैं तथा जिसके समस्त कर्म ज्ञानरूप अग्नि द्वारा भस्म हो गए हैं, उस महापुरुष को ज्ञानीजन भी पंडित कहते हैं॥

रामचरितमानस

श्री राम को वाल्मीकि द्वारा निवास बताना :

पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ॥

आपने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ रहूँ? परन्तु मैं यह पूछते सकुचाता हूँ कि जहाँ आप न हों, वह स्थान बता दीजिए। तब मैं आपके रहने के लिए स्थान दिखाऊँ॥

सुनहु राम अब कहउँ निकेता। जहाँ बसहु सिय लखन समेता॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥

हे रामजी! सुनिए, अब मैं वे स्थान बताता हूँ, जहाँ आप, सीता और लक्ष्मण समेत निवास कीजिए। जिनके कान समुद्र की भाँति आपकी सुंदर कथा रूपी अनेक सुंदर नदियों से॥

भरहिं निरंतर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे॥

निरंतर भरते रहते हैं, परन्तु कभी पूरे नहीं होते, उनके हृदय आपके लिए सुंदर घर हैं और जिन्होंने अपने नेत्रों को चातक बना रखा है, जो आपके दर्शन रूपी मेघ के लिए सदा लालायित रहते हैं॥

निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं सुखारी॥
तिन्ह कें हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक॥

तथा जो भारी-भारी नदियों, समुद्रों और झीलों का निरादर करते हैं और आपके सौंदर्य की एक बूँद जल से सुखी हो जाते हैं, हे रघुनाथ जी ! उन लोगों के हृदय रूपी सुखदायी भवनों में आप भाई लक्ष्मण जी और सीता जी सहित निवास कीजिए॥

जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु॥

आपके यश रूपी निर्मल मानसरोवर में जिसकी जीभ हंसनी बनी हुई आपके गुण समूह रूपी मोतियों को चुगती रहती है, हे रामजी ! आप उसके हृदय में बसिए॥

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा। सादर जासु लहइ नित नासा॥
तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं॥

जिसकी नासिका प्रभु के पवित्र और सुगंधित सुंदर प्रसाद को नित्य आदर के साथ ग्रहण करती है और जो आपको अर्पण करके भोजन करते हैं और आपके प्रसाद रूप ही वस्त्राभूषण धारण करते हैं॥

सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी। प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी॥
कर नित करहिं राम पद पूजा। राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा॥

जिनके मस्तक देवता, गुरु और ब्राह्मणों को देखकर बड़ी नम्रता के साथ प्रेम सहित झुक जाते हैं, जिनके हाथ नित्य श्री रामचन्द्रजी के चरणों की पूजा करते हैं और जिनके हृदय में श्री रामचन्द्रजी का ही भरोसा है, दूसरा नहीं॥

चरन राम तीरथ चलि जाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥
मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा। पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा॥

तथा जिनके चरण श्री रामचन्द्र जी के तीर्थों में चलकर जाते हैं, हे रामजी! आप उनके मन में निवास कीजिए। जो नित्य आपके मंत्रराज को जपते हैं और परिवार सहित आपकी पूजा करते हैं॥

तरपन होम करहिं बिधि नाना। बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना॥
तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी। सकल भायँ सेवहिं सनमानी॥

जो अनेक प्रकार से तर्पण और हवन करते हैं तथा ब्राह्मणों को भोजन कराकर बहुत दान देते हैं तथा जो गुरु को हृदय में आपसे भी अधिक जानकर सर्वभाव से सम्मान करके उनकी सेवा करते हैं॥

सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होउ।
तिन्ह कें मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ॥

और ये सब कर्म करके सबका एक मात्र यही फल माँगते हैं कि श्री रामचन्द्रजी के चरणों में हमारी प्रीति हो, उन लोगों के मन रूपी मंदिरों में सीताजी और रघुकुल को आनंदित करने वाले आप दोनों बसिए॥

काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया॥

जिनके न तो काम, क्रोध, मद, अभिमान और मोह हैं, न लोभ है, न क्षोभ है, न राग है, न द्वेष है और न कपट, दम्भ और माया ही है- हे रघुराज! आप उनके हृदय में निवास कीजिए॥

सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥

जो सबके प्रिय और सबका हित करने वाले हैं, जिन्हें दुःख और सुख तथा प्रशंसा और गाली समान है, जो विचारकर सत्य और प्रिय वचन बोलते हैं तथा जो जागते-सोते आपकी ही शरण हैं॥

बोध वाक्य: हिन्दुस्थान के साथ जिसके सारे हित संबंध जुड़े हैं, जो इस देश को भारतमाता कह कर अति पवित्र दृष्टि से देखता है तथा जिसका देश के बाहर कोई अन्य आधार नहीं है, ऐसा महान धर्म और संस्कृति से एकसूत्र में गुंथा हुआ समाज ही यहाँ का राष्ट्रीय समाज है.-डॉ. हेडगेवार

बोध कथा: कुष्ठ रोगी पर दया करो

गुरु नानकदेव धर्म प्रचार करते हुए उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले के एक गांव में पहुंचे। उनके साथ भाई मर्दाना भी थे। गांव वाले संत-महात्माओं के महत्व से अनभिज्ञ थे। उन्होंने दोनों को रात में आश्रय देने से इनकार कर दिया। गांव के बाहर एक कोढ़ी कुटिया में रहता था। उसे गांव-वालों ने निकाल दिया था। उसने दोनों साधुओं को जाते देखा, तो हाथ जोडक़र प्रणाम किया और उनसे अपनी कुटिया में ठहरने की प्रार्थना की। सवेरा होते ही कोढ़ी ने गुरुजी से कहा, बाबा, गांव वाले मुझसे घृणा करते हैं, कहते हैं कि मेरे शरीर से निकल रही दुर्गंध से अन्य गांव वालों को भी यह रोग हो जाएगा। आप बताएं कि मेरा कल्याण कैसे हो ? गुरुजी के मुख से सहसा निकला,'जीओ तपत है बारोबार, तप-तप चापै बहुत बेकार। तो तन बाणी बिसर जाए, जिओ पक्का रोगी बिललाए।'गुरुजी की पवित्र वाणी सुनकर कोढ़ी उनके चरणों में गिर गया और उनके आशीर्वाद से वह भला-चंगा हो गया। गांव वालों को जब पता चला कि वे दोनों सिद्ध संत हैं, जिन्होंने कोढ़ी को स्वस्थ कर दिया है, तो वे भागते -भागते कुटिया पहुंचे और गुरु नानकदेव जी के चरणों में गिरकर क्षमा मांगने लगे। गुरुजी ने उन्हें उपदेश देते हुए का, 'किसी भी रोगी से घृणा न करके उसके प्रति दयावान बनना चाहिए, गुरुजी के आदेश से गांववालों ने धर्मशाला और सरोवरों का निर्माण कराया। आज वह जगह गुरुद्वारा कोढ़ीवाला धार साहिब श्रद्धा का केंद्र है।

मासिक गीत /गान :

जिस दिन सोया राष्ट्र जगेगा
दिस-दिस फैला तमस हटेगा ॥

भारत विश्व बंधु का गायक
भारत मानवता का नायक
सदियों से था, युगों रहेगा,
दिस-दिस फैला तमस हटेगा ।

जिस दिन सोया राष्ट्र जगेगा
दिस-दिस फैला तमस हटेगा ॥

वैभवशाली जब हम होंगे ,
नहीं किसी से हम कम होंगे
क्यों ना फिर गंतव्य मिलेगा ,
दिस-दिस फैला तमस हटेगा ।

जिस दिन सोया राष्ट्र जगेगा ,
दिस-दिस फैला तमस हटेगा ॥

हम सबकी तो राह एक है,
कोटि हृदय और भाव एक हैं,
बात हमारी विश्व सुनेगा,
दिस-दिस फैला तमस हटेगा ।

जिस दिन सोया राष्ट्र जगेगा ,
दिस-दिस फैला तमस हटेगा ॥

---------------------00--------------------

नवंबर

कार्तिक : कार्तिक माह में शरद-पूर्णिमा, करवा चौथ, धनतेरस, रूप चौदस, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भैया दूज, देव उठनी एकादशी आदि महत्वपूर्ण तीज त्यौहार आते हैं। शरद पूर्णिमा में चन्द्रमा की शीतल किरणें खेतों में, पेड़ों में, अन्न में, औषधियों के गुण प्रविष्ट कराती हैं। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में कहा है, रसात्मक सोम बनकर मैं सर्व औषधियों को पुष्ट करता हूँ- '**पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः**'। नरक चौदस- इस दिन महाकाली का पूजन होता है। धनतेरस, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भैया दूज, देव उठनी एकादशी सभी उत्सव जहां व्यक्तिगत आराधना को बढ़ावा देते हैं, वही गोवर्धन पूजा भाई दूज जैसे आयोजन सामाजिक समरसता को बढ़ाते हैं।

नवम्बर माह मध्यप्रदेश का स्थापना दिवस है। वर्तमान में मध्यप्रदेश के उत्तर में उत्तर प्रदेश, पूर्व में छत्तीसगढ़ दक्षिण में महाराष्ट्र, पश्चिम में गुजरात, तथा उत्तर पश्चिम में राजस्थान है। 1 नवंबर को प्रति वर्ष मध्यप्रदेश का स्थापना दिवस मनाया जाता है। यह कार्यक्रम प्रदेश के भौगोलिक परिचय का संज्ञान तो कराता ही है, कला, संस्कृति, बोलियों, लोकगीतों के माध्यम से क्षेत्रीय परम्पराओं से भी परिचय कराता है। यह केवल कार्यक्रम नहीं बल्कि प्रदेश और देश की मानव चेतना के इतिहास को अगली पीढ़ी को भी सौंपता है। प्रदेश में जन्में कलाकारों, साहित्यकारों, स्वतन्त्रता सेनानियों, वैज्ञानिकों की सफलता की कहानी भी हमें नई ऊर्जा देती हैं।

शिक्षक- विद्यार्थी करणीय कार्यक्रम : 1 नवंबर को मप्र स्थापना दिवस पर महाविद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। जिसके अंतगर्त मप्र के तीर्थ स्थल, पर्यटन स्थल एंव औद्यौगिक स्थलों का परिचय कराया जाए। इस माह वासुदेव बळवंत फड़के, महाराणा रणजीत सिंह, शेर-ए पंजाब के नाम से प्रसिद्ध हैं के ऊपर कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री:

अंतर्वैयक्तिक कौशल (भाग – दो)

अन्तर्वैयक्तिक कौशल का उपयोग प्रामाणिक रूप से सम्प्रेषण/संवाद / संचार में सूचनाओं के आदान-प्रदान करने हेतु उपयोग किया जाता है। तभी बाहरी जगत का हमारे आतंरिक गुणों से परिचय होगा। अंतर्वैयक्तिक कौशल से नए विचारों का समावेश एवं सामूहिक प्रतिपुष्टि से क्षमता निर्माण का महत्वपूर्ण आशय पूर्ण होता है। अतः गतिशील नए परिदृश्य में अन्तर्वैयक्तिक कौशल रोजगार प्राप्त करने हेतु निर्णय के लिए अत्यावश्यक है। इस आवश्यक जीवन कौशल के विकास से हम इंटरव्यू एवं ग्रुप डिस्कशन में भी सक्रिय और प्रभावी भागीधारी प्रदान करने में सशक्त होंगे। अन्तर्वैयक्तिक कौशल नए सम्बन्धों के निर्माण तथा पुराने सम्बन्धों को बनाए रखने हेतु बहुत जरूरी है।

(1) अंतर्वैयक्तिक कौशल हेतु दक्षताएं : (i) **आत्मजागृत:** स्वयं को समझने से इस कौशल का विकास शुरू होता है। स्वयं के सुधार अर्थात अपने चिंतन, मनन और विचार में परिवर्तन और उन्नयन के लिए जब पूरी तरह से सजग रहते हुए, पूरी एकाग्रता के साथ प्रयास करें, तो आत्म-जागृत अवस्था का अनुभव किया जा सकता है। (ii) **स्व-प्रबंधन:** यह हमारे व्यवहार, विचारों और भावनाओं को सचेत रखने और नवीन ऊर्जा के साथ प्रबंधित करने की हमारी क्षमता है। यह अपनी चिंतन और कार्य क्षमताओं का अधिक से अधिक विकास और उपयोग करने हेतु आवश्यक है। (iii) **सामाजिक जागरूकता:** सामाजिक चेतना जब किसी विशिष्ट विचारधारा, चिंतन और विशेष आदर्श से प्रभावित होती है और लोगों में उसके कारण एक नव-जागरण पैदा होता है, तभी उसे हम सामाजिक जागरूकता कह सकते हैं। (iv) **संबंध-प्रबंधन**: इसका विश्वास कायम करने, नियमों और अपेक्षाओं को मजबूत करने और सीमाओं की स्थापना करने में अहम योगदान रहता है। इसे रिलेशनशिप मैनेजमेंट भी कहा जा सकता है। आपसी विश्वास संबंध प्रबंधन में महत्वपूर्ण भाग है। (v) **संचालन :** निरंतर अभ्यास करें और प्रत्येक दक्षता को आत्मसात कर जीवन में सम्मिलित करें। प्रयास करते रहने से स्वतः ही हम अपने अभ्यास और प्रयास में सफल होते सिद्ध होंगे। (vi) **समय सारणी** : प्रत्येक क्षमता को एकाग्रता के साथ सुनिश्चित दिनों में प्रयोग में लाए। उदाहरण के लिए हर हफ्ते हम स्वः-प्रबंधन पर ध्यान केन्द्रित कर दैनिक जीवन में यथा संभव प्रयोग करें, ऐसे चार हफ्तों में क्रमश: सभी दक्षताएं विकसित होती महसूस होती दिखेंगी और यह कब तक करना है ? जीवन भर हम कर सकते है क्योंकि बहुत कुछ इस विषय में सीख सकते हैं।

(2) अविकसित अंतर्वैयक्तिक कौशल के कारण: रोजगार पाने के लिए अपेक्षित ज्ञान के साथ-साथ अंतर्वैयक्तिक कौशल एक उत्साह-वर्धक और लाभकारी तत्व है। कुछ कारणों से यह कौशल विकसित नहीं हो पाते। इन्हें इस प्रकार से समझ सकते हैं **(i)**अनुभव की कमी। **(ii)**आत्मविश्वास कमी। **(iii)** तैयारी में कमी। **(iv)** उत्साह में कमी। **(v)** स्वयं में सकारात्मकता की कमी।

(3) अंतर्वैयक्तिक कौशल का अभ्यास ऐसे करे: (i) मतभेद सुलझाइए। (ii) दूसरों की प्रशंसा करें। (iii) दूसरों को बिना कारण दोष न दें। (iv) कभी किसी को हतोत्साहित न करें। (v) कभी भी सारा श्रेय खुद न लें। (vi) सही समय का ध्यान और ज्ञान हो।

(4) समस्या निवारण: (i) प्रतिस्पर्धा समाधान ढूंढने की क्षमता में हो। (ii) नकारत्मक प्रतिक्रियाओं में देरी करें (iii) अत्यधिक राय व्यक्त न करे।

(5) सारांश: आज के जटिल परिवेश में सफल होने के लिए इसमें उल्लिखित सभी दक्षताएं आत्मसात करें। बदलते समय की रोजगारमूलक आवश्यकताओं को समझने तथा ज्ञान एवं अनुभव के परस्पर आदान-प्रदान में भी अन्तर्वैयक्तिक कौशल महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है। अंतर्वैयक्तिक कौशल के आचरण से व्यक्तित्व विकास कि क्षमता में वृद्धि संभव है तथा पूर्ण रूप से स्वयं कि सहायता, समस्या समाधान में सृजनात्मकता और नव-प्रवर्तन में बढ़ावा भी होता है। जहाँ तक संभव हो अतिश्योक्ति से बचें और प्रश्नों के सभी संभावित संक्षिप्त उत्तरों के लिए अभ्यास करे।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय पुरुष :

झूलेलालोऽथ चैतन्य: तिरुवल्लुवरस्तथा।
नायन्मारालवाराश्च कंबश्च बसवेश्वर: ॥

श्रीमद्भगवतगीता

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रय:।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति स: ॥

जो पुरुष समस्त कर्मों में और उनके फल में आसक्ति का सर्वथा त्याग करके संसार के आश्रय से रहित हो गया है और परमात्मा में नित्य तृप्त है, वह कर्मों में भलीभाँति बर्तता हुआ भी वास्तव में कुछ भी नहीं करता

यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सर:।
सम: सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते॥

जो स्वत: प्राप्त वस्तु से संतुष्ट, द्वंद्वों (हर्ष-शोक आदि) से अतीत, ईर्ष्या रहित और सफलता- असफलता में समान रहने वाला हो, वह कर्मों को करता हुआ भी उनसे नहीं बँधता ॥

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतस:।
यज्ञायाचरत: कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥

जिसकी आसक्ति नष्ट हो गई है, जिसका चित्त निरन्तर मुक्ति के ज्ञान में स्थित है- केवल यज्ञ सम्पादन के लिए कर्म करने वाले उस मनुष्य के सम्पूर्ण कर्म विलीन हो जाते हैं ॥

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥

जिस यज्ञ में अर्पण अर्थात स्रुवा आदि भी ब्रह्म है और हवन किए जाने योग्य द्रव्य भी ब्रह्म है तथा ब्रह्मरूप कर्ता द्वारा ब्रह्मरूप अग्नि में आहुति देना रूप क्रिया भी ब्रह्म है, उस ब्रह्मकर्म में स्थित रहने वाले योगी द्वारा प्राप्त किए जाने योग्य फल भी ब्रह्म ही हैं

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणा: ॥
अपरे नियताहारा: प्राणान्प्राणेषु जुह्वति।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषा: ॥

दूसरे कितने ही योगीजन अपान वायु में प्राणवायु को हवन करते हैं, वैसे ही अन्य योगीजन प्राणवायु में अपान वायु को हवन करते हैं तथा अन्य कितने ही नियमित आहार करने वाले प्राणायाम परायण पुरुष प्राण और अपान की गति को रोककर प्राणों को प्राणों में ही हवन किया करते हैं। ये सभी साधक यज्ञों द्वारा पापों का नाश कर देने वाले और यज्ञों को जानने वाले हैं ॥

रामचरितमानस

राम का निवास -

तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥
जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी ॥

और आपको छोड़कर जिनके दूसरे कोई गति नहीं है, हे रामजी ! आप उनके मन में बसिए। जो पराई स्त्री को जन्म देने वाली माता के समान जानते हैं, और पराया धन जिन्हें विष से भी भारी विष है ॥

जे हरषहिं पर संपति देखी । दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी ॥
जिन्हहि राम तुम्ह प्रान पिआरे । तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे ॥

जो दूसरे की सम्पत्ति देखकर हर्षित होते हैं और दूसरे की विपत्ति देखकर विशेष रूप से दुःखी होते हैं और हे रामजी ! जिन्हें आप प्राणों के समान प्यारे हैं, उनके मन आपके रहने योग्य शुभ भवन हैं ॥

स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात ।
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात ॥

हे तात ! जिनके स्वामी, सखा, पिता, माता और गुरु सब कुछ आप ही हैं, उनके मन रूपी मंदिर में सीता सहित आप दोनों भाई निवास कीजिए ॥

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं । बिप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका। घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ॥

जो अवगुणों को छोड़कर सबके गुणों को ग्रहण करते हैं, ब्राह्मण और गौ के लिए संकट सहते हैं, नीति-निपुणता में जिनकी जगत में मर्यादा है, उनका सुंदर मन आपका घर है ॥

गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा । जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा ॥
राम भगत प्रिय लागहिं जेही । तेहि उर बसहु सहित बैदेही ॥

जो गुणों को आपका और दोषों को अपना समझता है, जिसे सब प्रकार से आपका ही भरोसा है और राम भक्त जिसे प्यारे लगते हैं, उसके हृदय में आप सीता सहित निवास कीजिए ॥

जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई । प्रिय परिवार सदन सुखदाई ॥
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई । तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई ॥

जाति, पाँति, धन, धर्म, बड़ाई, प्यारा परिवार और सुख देने वाला घर, सबको छोड़कर जो केवल आपको ही हृदय में धारण किए रहता है, हे रघुनाथजी! आप उसके हृदय में रहिए ॥

सरगु नरकु अपबरगु समाना । जहँ तहँ देख धरें धनु बाना ॥
करम बचन मन राउर चेरा । राम करहु तेहि कें उर डेरा ॥

स्वर्ग, नरक और मोक्ष जिसकी दृष्टि में समान हैं, क्योंकि वह जहाँ-तहाँ (सब जगह) केवल धनुष-बाण धारण किए आपको ही देखता है और जो कर्म से, वचन से और मन से आपका दास है, हे रामजी! आप उसके हृदय में डेरा कीजिए ॥

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु॥

जिसको कभी कुछ भी नहीं चाहिए और जिसका आपसे स्वाभाविक प्रेम है, आप उसके मन में निरंतर निवास कीजिए, वह आपका अपना घर है॥

चित्रकूट पर्वत पर निवास:

चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ।
आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ॥

महामुनि वाल्मीकि जी ने चित्रकूट की अपरिमित महिमा बखान कर कही। तब सीताजी सहित दोनों भाइयों ने आकर श्रेष्ठ नदी मंदाकिनी में स्नान किया॥

नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चुकइ न घात मार मुठभेरी॥

नदी (मंदाकिनी) उस धनुष की प्रत्यंचा और शम, दम, दान बाण के समान है जो कलियुग के समस्त पाप को नष्ट करती है। उसके अनेक हिंसक पशु हैं। चित्रकूट ही मानो अचल शिकारी है, जिसका निशाना कभी चूकता नहीं और जो सामने से मारता है॥

अस कहि लखन ठाउँ देखरावा। थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा॥
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना। चले सहित सुर थपति प्रधाना॥

ऐसा कहकर लक्ष्मणजी ने स्थान दिखाया। स्थान को देखकर श्री रामचन्द्रजी ने सुख पाया। जब देवताओं ने जाना कि श्री रामचन्द्रजी का मन यहाँ रम गया, तब वे देवताओं के प्रधान थवति विश्वकर्मा को साथ लेकर चले॥

कोल किरात बेष सब आए। रचे परन तृन सदन सुहाए॥
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला। एक ललित लघु एक बिसाला॥

सब देवता कोल-भीलों के वेष में आए और उन्होंने (दिव्य) पत्तों और घासों के सुंदर घर बना दिए। दो ऐसी सुंदर कुटिया बनाईं जिनका वर्णन नहीं हो सकता। उनमें एक बड़ी सुंदर छोटी सी थी और दूसरी बड़ी थी॥

लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत॥

लक्ष्मणजी और जानकीजी सहित प्रभु श्री रामचन्द्रजी सुंदर घास-पत्तों के घर में शोभायमान हैं। मानो कामदेव मुनि का वेष धारण करके पत्नी रति और वसंत ऋतु के साथ सुशोभित हो॥

रामहि केवल प्रेमु पिआरा। जानि लेउ जो जान निहारा॥
राम सकल बनचर तब तोषे। कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे॥

श्री रामचन्द्रजी को केवल प्रेम प्यारा है, जो जानने वाला हो (जानना चाहता हो), वह जान ले। तब श्री रामचन्द्रजी ने प्रेम से परिपुष्ट हुए (प्रेमपूर्ण) कोमल वचन कहकर उन सब वन में विचरण करने वाले लोगों को संतुष्ट किया॥

रामु लखन सीता सहित सोहत परन निकेत।
जिमि बासव बस अमरपुर सची जयंत समेत॥

लक्ष्मणजी और सीताजी सहित श्री रामचन्द्रजी पर्णकुटी में ऐसे सुशोभित हैं, जैसे अमरावती में इन्द्र अपनी पत्नी शची और पुत्र जयंत सहित बसता है॥

बोध वाक्य- 'किसी भी मनुष्य की इच्छाशक्ति अगर उसके साथ हो तो वह कोई भी काम बड़े आसानी से कर सकता है। इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प मनुष्य को रंक से राजा बना सकता है।'– महर्षि वाल्मीकि

बोध कथा :

अपने देश को ना भूलें

खगोल-शास्त्र के एक प्रसिद्ध विद्वान थे। प्रायः रात में वह चंद्रमा, तारों आदि का अध्ययन करते रहते थे। एक बार वे आकाश की ओर देखते हुए चल रहे थे और साथ में नक्षत्रों का अध्ययन भी कर रहे थे। अचानक चलते-चलते वह एक सूखे कुएं में गिर गये। चोट और दर्द से कराहते हुए वे सहायता की पुकार करने लगे।

कुछ देर बाद वहां से गुजर रहे लोगों ने उनकी आवाज सुनी, तो उन्हें निकाला। दुर्घटना का कारण पूछने पर वह बोले-मैं आकाश की ओर देखने में इतना तल्लीन था की धरती का ध्यान ही नहीं रहा। ऐसे ही जो लोग दुनिया भर की चिंता करने में व्यस्त रहते हैं यदि वे अपने देश की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं देंगे तो उनका हाल भी उन्हीं विद्वान की तरह होगा।

मासिक गीत / गान :

चन्दन है इस देश की माटी , तपो भूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा बच्चा राम है।
हर शरीर मंदिर सा पावन , हर मानव उपकारी है।
जहां सिंह बन गए खिलौने, गाय जहां माँ प्यारी है।
जहां सवेरा शंख बजाता , लोरी गाती शाम है ॥
चन्दन है.....
जहां कर्म से भाग्य बदलते, श्रम निष्ठा कल्याणी है,
त्याग और ताप की गाथाएँ, गाती कवि की वाणी है।
ज्ञान जहां का गंगा जल है, निर्मल है, अविराम है ॥
चन्दन है....
इसके सैनिक समर भूमि में गाया करते गीता है,
जहां खेत में हल के नीचे खेला करती सीता हैं।
जीवन का आदर्श जहां पर परमेश्वर का धाम है ॥
चन्दन है.......

--------------------------------------00--

दिसम्बर

मार्गशीर्ष (अगहन) : महाप्रतापी राजा दुष्यंत और रानी शकुन्तला के तेजस्वी पुत्र का नाम भरत था। वह बचपन में निर्भीकता से सिंह – शावकों के साथ खेलता था। उनके मुंह में हाथ डालकर उनके दांत गिनता था। एक मत है कि उनके नाम पर ही अपने देश का नाम भारत पड़ा। हमारी उत्तरी सीमा की रक्षा करता हिमालय पर्वत है। दक्षिण में भारतमाता के चरण धोता सागर हमारी रक्षा करता है। भारत की सीमाओं में - पूर्व में हमारी सीमाओं से लगे देश ब्रह्मदेश (म्यामार), बँगला देश हैं। पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान हैं। उत्तर में नेपाल, तिब्बत तथा भूटान हैं और दक्षिण में श्रीलंका हैं। देश के प्रत्येक नागरिक को की अपनी सीमाओं के साथ ही देश के एक स्थान का परिचय आज के नवयुवकों के लिए आवश्यक है और वह स्थान है अंडमान की सेल्युलर जेल जो

राष्ट्र को संगठित, सुदृढ़ रहकर गौरवमय जीवन जीने की प्रेरणा देता है। 30 दिसंबर, 1943 को यहाँ के जिमखाने मैदान में सुभाष चन्द्र बोस ने स्वतन्त्रता का तिरंगा फहराकर अंग्रेजों को आगाह किया था । उसी जेल के प्रांगण में स्वातंत्र्य ज्योति निरंतर क्रांतिवीरों के सम्मान में जल कर राष्ट्र को प्रेरणा देती है। रामधारी सिंह दिनकर ने ठीक ही लिखा है - 'तुमने दिया देश को जीवन देश तुम्हें क्या देगा। अपनी ज्योति तेज रखने को नाम तुम्हारा लेगा

शिक्षक- विद्यार्थी करणीय कार्यक्रम :

25 दिसम्बर, 'सुशासन दिवस' भारत में प्रतिवर्ष पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती के रूप में मनाया जाता है। सरकार की जवाबदेही के बारे में भारतीय लोगों के बीच जागरूकता को बढ़ावा देकर प्रधान मंत्री वाजपेयी को सम्मानित करने के लिए 2014 में सुशासन दिवस की स्थापना की गई थी। मध्यप्रदेश सरकार ने अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन स्कूल स्थापित किया है। हिंदी के प्रति समर्पित ओजस्वी साहित्यकार पंडित बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन', राष्ट्र को शिक्षा का उत्कृष्ट संस्थान देने वाले, स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक पंडित मदन मोहन मालवीय तथा कन्हैयालाल मुन्शी, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के जीवन पर कार्यक्रम आयोजित किये जाएँ ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री:

उद्यमिता

उद्यमिता की संकल्पना के साथ ही उद्यमिता कौशल, उद्यमी का अर्थ, उद्यमी के गुण आदि पर स्वाभाविक रूप से विचार आता है। अत: यहाँ पर इन सब बातों पर बारीकी से विचार किया जा रहा है ताकि हमारा विद्यार्थी उद्यमिता कौशल से संबंधित सभी अच्छे व बुरे परिणामों से अवगत हो सके। उसके आत्मविश्वास के स्तर में संवृद्धि हो तथा वह एक सफल उद्यमी के गुणों का ज्ञान आत्मसात कर अच्छा उद्यमी बन सके और अपेक्षित लाभ प्राप्त हो सके। उद्यमिता हमारे जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम यह कह सकते हैं कि उद्यमिता मानव जीवन का आधार है जो उसे "कर्म" करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह केवल धन अर्जन का साधन नहीं अपितु संपूर्ण व्यक्तिव विकास एवं सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है तथा मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक समाधान भी है। वास्तव में उद्यमिता न केवल एक कौशल या तकनीक है वरन् एक प्रकार की जीवन कला है। किसी भी अर्थव्यवस्था के बहुमुखी विकास के लिए उद्योग एवं व्यापार अत्यन्त आवश्यक हैं क्योंकि इससे रोजगार का सृजन होता है। लेकिन उद्योग एवं व्यापार की सफलता के लिए असीम साहस, बुद्धिमता एवं प्रबंधकीय कौशल की आवश्यकता होती है। विभिन्न प्रकार के जोखिम उठाना, नए अवसरों का लाभ उठाना, औद्योगिक वातावरण एवं दूरगामी लक्ष्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करना यह सभी उद्यमिता से ही संभव है, अतः उद्यमिता किसी भी अर्थव्यवस्था के औद्योगिक विकास के लिए अग्रदूत के रुप में कार्य करती है।

(1) उद्यमिता का अर्थ : हमने उद्यमिता के महत्व को देखा लेकिन प्रश्न यह है कि उद्यमी कौन है ? क्या केवल वह व्यक्ति जो उद्योग या व्यापार स्थापित करता है ? यदि हाँ तो उसे हम उद्योगपति या व्यापारी कह कर संबोधित कर सकते है। वास्तव में उद्यमी वह व्यक्ति है जो उद्योग/व्यापार के सभी प्रकार के जोखिम को सहने की शक्ति व सामर्थ्य रखता हो । अंग्रेजी में उद्यमिता को "Entrepreneurship" कहा जाता है। जो कि फ्रेंच शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है "Undertake" . 16 वीं शताब्दी में फ्रांसीसियों ने एक सैन्य अभियान किया जिसका नाम "Entrepreneur" था। इसके बाद 17 वीं शताब्दी में इसका प्रयोग ठेकेदारों, आर्किटेक्ट आदि के लिए किया गया लेकिन व्यापार व उद्योग में इसका प्रयोग 18 वीं शताब्दी में एक फ्रांसीसी अर्थशास्त्री केन्टीलोन द्वारा किया गया और उसके बाद इसका प्रयोग व्यवसाय / उद्योग के लिए पीटर.एफ.ड्रकर द्वारा किया गया। साधारण भाषा में उद्यमी वह व्यक्ति है जो उद्योग/ व्यवसाय के समस्त जोखिम उठाता है एवं जिसमें उत्पादन के विभिन्न साधनों को इस प्रकार प्रयोग करने का सामर्थ्य होता है कि अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकें। बदलाव एवं अविष्कार उद्यमिता के प्रमुख अवयव हैं। उद्यमी हमेशा बदलाव व अविष्कार की खोज में रहता हैं। तथा उनका अवसर के रुप में प्रयोग करता है। भारत में यह शब्द अत्यंत प्राचीन काल से प्रत्येक व्यक्ति

के लिए आवश्यक मानते हुए उपयोग होता आया है, कहा गया है –**उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः । न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः** ॥ अर्थात - परिश्रम करने से ही सारे कार्य हो सकते है, केवल सोचने से नहीं। सोते हुए शेर के मुँह में अपने आप ही हिरण प्रवेश नहीं करते। उसे शिकार करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है।

(2) उद्यमिता की संकल्पना : (i)जोखिम उठाने की क्षमता- यह उद्यमिता का एक महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि व्यापार - व्यवसाय में अनगिनत जोखिम होते हैं व उद्यमी इन्हें स्वेच्छा से उठाता है और अपने उत्पाद को अनिश्चित मूल्यों पर बेचने को तैयार रहता हैं। **(ii) प्रबंधन कौशल-** जोखिम उठाने के साथ-साथ उद्यमी को प्रबंधन में भी कुशल होना चाहिए जिससे वह अपने व्यवसाय पर नियंत्रण भी रख सके व सही दिशा निर्देशन कर सकें। **(iii) संगठन एवं समन्वय-** जे.बी.से के अनुसार संगठन एवं समन्वय उद्यमिता का महत्वपूर्ण घटक हैं। उद्यमी उत्पादन के साधनों का संगठन व समन्वय वस्तुओं व सेवाओं का समाज की आवश्यकतानुसार उत्पादन करता है। **(iv) नवाचार क्षमता-** शुम्पीटर के अनुसार नवाचार क्षमता उद्यमिता का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। उनके मत से एक उद्यमी नए-नए अविष्कार करता है एवं उनसे लाभ कमाता है। साथ ही वह अपनी रचनात्मकता व नवाचार क्षमता से नए उत्पाद, नए बाजार व नई तकनीक की खोज करता हैं।

(3) उद्यमी के गुण : एक सफल उद्यमी में कुछ विशेषताएं /गुण आवश्यक रूप से होने चाहिए। ये गुण (वित्तीय साधनों के अतिरिक्त) उद्यमी को अपने मार्ग पर अडिग रहने में सहायक होते हैं , अन्ततः उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता करते हैं। **(i) नैतिक गुण :** सच्च चरित्र, शील भाव, निष्ठा, ईमानदारी। **(ii) सामाजिक गुण** : दूसरे के प्रति आदर भाव, दूसरों के प्रति सहायता का भाव, सभ्य एवं सुशील। **(iii) व्यावसायिक गुण :** व्यावसायिक दृष्टिकोण, योजना की क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता, प्रबंधन कौशल **(iv) सामान्य गुण :** नेतृत्व कुशलता, आत्मविश्वास, नवाचार, जोखिम लेने की क्षमता, चुनौतियों को स्वीकार करना, संगठन, गतिशील प्रकिया, समय व संसाधनों का आवंटन, गिर के संभलना, मानसिक सशक्तता, स्वयं प्रर्वतक/प्रारंभ संचार कौशल, दृढ आत्मजागरुकता , जिज्ञासू प्रवृति, केन्द्र बिन्दु, स्वयं पर विश्वास, ईमानदारी/ सत्य निष्ठा, कार्य के प्रति निष्ठा, संभलने का सामर्थ्य दूसरों को सुनना, वास्तविक रुचि, तप/दृढ़ता, सामन्जस्य स्थापित करना, समस्या के समाधान की दक्षता, निश्चितता, धैर्य, बहुकार्यण, जोश।

(4) उद्यमिता कौशल का निर्माण किस प्रकार करें :उद्यमिता के संबंधित किताबें पढे, सेमिनार/वेबिनार में भागीदारी करें, ट्रेंनिग और कोर्स वर्क करे , मेन्टर की सहायता लें तथा समूह का हिस्सा बनें।

(5) उद्यमिता कौशल की आवश्यकता : चुनौतियों को ढूढ़ने और हल करने में सहायक होता है। उद्यमी को अपना ब्रांड स्थापित करने में सहायक है। जीवन और कार्य में सामन्जस्य बिठाता है। समाज के प्रति उत्तरदायी बनाता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय पुरुष :

देवलो रविदासश्च कबीरो गुरुनानकः।
नरसिस्तुलसीदासो दशमेशो दृढव्रतः ॥

श्रीमद्भगवतगीता

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्धवा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥

जितेन्द्रिय, साधनपरायण और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह बिना विलम्ब के तत्काल ही भगवत्प्राप्ति रूप परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है॥

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।

सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥

जिसका मन अपने वश में है, जो जितेन्द्रिय एवं विशुद्ध अन्तःकरण वाला है और सम्पूर्ण प्राणियों का आत्मरूप परमात्मा ही जिसका आत्मा है, ऐसा कर्मयोगी कर्म करता हुआ भी लिप्त नहीं होता ॥

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।

लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥

जो पुरुष सब कर्मों को परमात्मा में अर्पण करके और आसक्ति को त्याग कर कर्म करता है, वह पुरुष जल से कमल के पत्ते की भाँति पाप से लिप्त नहीं होता ॥

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।

न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥

परमेश्वर मनुष्यों के न तो कर्तापन की,न कर्मों की और न कर्मफल के संयोग की रचना करते हैं, किन्तु स्वभाव ही बर्त रहा है ॥

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥

वे ज्ञानीजन विद्या और विनययुक्त ब्राह्मण में तथा गौ, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में भी समदर्शी ही होते हैं ॥

रामचरितमानस

अनुसुइया सीता संवाद -

अनुसुइया के पद गहि सीता । मिली बहोरि सुसील बिनीता॥

रिषि पतिनी मन सुख अधिकाई । आसिष देइ निकट बैठाई॥

सीताजी अनसूया के चरण पकड़कर उनसे मिलीं । ऋषि पत्नी को सुख हुआ और आशीष देकर सीता को पास बैठा लिया ॥

दिब्य बसन भूषन पहिराए । जे नित नूतन अमल सुहाए ॥

कह रिषिबधू सरस मृदु बानी । नारि धर्म कछु ब्याज बखानी ॥

उन्हें ऐसे दिव्य वस्त्र और आभूषण पहनाए, जो नित्य-नए निर्मल और सुहावने बने रहते हैं । फिर ऋषि पत्नी उनके बहाने मधुर और कोमल वाणी से स्त्रियों के कुछ धर्म बखान कर कहने लगीं ॥

धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिअहिं चारी ॥

जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं । बेद पुरान संत सब कहहीं ॥

उत्तम के अस बस मन माहीं । सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥

धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री- इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है । वेद, पुराण और संत सब ऐसा कहते हैं कि जगत में चार प्रकार की पतिव्रताएँ हैं- उत्तम श्रेणी की पतिव्रता के मन में ऐसा भाव बसा रहता है कि जगत में दूसरा पुरुष स्वप्न में भी नहीं है ॥

मध्यम परपति देखइ कैसें । भ्राता पिता पुत्र निज जैसें ॥

धर्म बिचारि समुझि कुल रहई। सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई ॥

मध्यम श्रेणी की पतिव्रता पराए पति को कैसे देखती है, जैसे वह अपना सगा भाई, पिता या पुत्र हो जो धर्म को विचारकर और अपने कुल की मर्यादा समझकर बची रहती है, वह निकृष्ट स्त्री है, ऐसा वेद कहते हैं ॥

बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई॥

पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई॥

जो स्त्री मौका न मिलने से या भयवश पतिव्रता बनी रहती है, जगत में उसे अधम स्त्री जानना। पति को धोखा देने वाली जो स्त्री पराए पति से रति करती है, वह तो सौ कल्प तक रौरव नरक में पड़ी रहती है॥

छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी॥

बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई॥

क्षणभर के सुख के लिए जो सौ करोड़ (असंख्य) जन्मों के दुःख को नहीं समझती, उसके समान दुष्टा कौन होगी। जो स्त्री छल छोड़कर पतिव्रत धर्म को ग्रहण करती है, वह बिना ही परिश्रम परम गति को प्राप्त करती है॥

पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। बिधवा होइ पाइ तरुनाई॥

किन्तु जो पति के प्रतिकूल चलती है, वह जहाँ भी जाकर जन्म लेती है, वहीं जवानी पाकर विधवा हो जाती है॥

सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं।

तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित॥

हे सीता! सुनो, तुम्हारा तो नाम ही ले-लेकर स्त्रियाँ पतिव्रत धर्म का पालन करेंगी। तुम्हें तो श्री रामजी प्राणों के समान प्रिय हैं, यह (पतिव्रत धर्म की) कथा तो मैंने संसार के हित के लिए कही है॥

शरभंग आश्रम :

तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा। देखि दुखी निज धाम पठावा॥

पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा। सुंदर अनुज जानकी संगा॥

उसने तुरंत सुंदर रूप प्राप्त कर लिया। दुःखी देखकर प्रभु ने उसे अपने परम धाम को भेज दिया। फिर वे सुंदर छोटे भाई लक्ष्मणजी और सीताजी के साथ वहाँ आए जहाँ मुनि शरभंगजी थे॥

देखि राम मुख पंकज मुनिबर लोचन भृंग।

सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभंग॥

रामचन्द्रजी का मुखकमल देखकर मुनिश्रेष्ठ के नेत्र रूपी भौंरे अत्यन्त आदरपूर्वक उसका पान कर रहे हैं। शरभंगजी का जन्म धन्य है॥

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला। संकर मानस राजमराला॥

जात रहेउँ बिरंचि के धामा। सुनेउँ श्रवन बन ऐहहिं रामा॥

मुनि ने कहा- हे कृपालु रघुवीर! हे शंकरजी के मन रूपी मानसरोवर के राजहंस! सुनिए, मैं ब्रह्मलोक को जा रहा था। (इतने में) कानों से सुना कि श्री रामजी वन में आवेंगे॥

चितवत पंथ रहेउँ दिन राती। अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती॥

नाथ सकल साधन मैं हीना। कीन्ही कृपा जानि जन दीना॥

तब से मैं दिन-रात आपकी राह देखता रहा हूँ। अब प्रभु को देखकर मेरी छाती शीतल हो गई। हे नाथ! मैं सब साधनों से हीन हूँ। आपने अपना दीन सेवक जानकर मुझ पर कृपा की है॥

जोग जग्य जप तप ब्रत कीन्हा। प्रभु कहँ देइ भगति बर लीन्हा॥

एहि बिधि सर रचि मुनि सरभंगा। बैठे हृदयँ छाड़ि सब संगा॥

योग, यज्ञ, जप, तप जो कुछ व्रत आदि भी मुनि ने किया था, सब प्रभु को समर्पण करके बदले में भक्ति का वरदान ले लिया। इस प्रकार (दुर्लभ भक्ति प्राप्त करके फिर) चिता रचकर मुनि शरभंगजी हृदय से सब आसक्ति छोड़कर उस पर जा बैठे॥

सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम।
मम हियँ बसहु निरंतर सगुनरूप श्री राम॥

हे नीले मेघ के समान श्याम शरीर वाले सगुण रूप श्री रामजी ! सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित प्रभु (आप) निरंतर मेरे हृदय में निवास कीजिए॥

बोध वाक्य- "ऋग्वेद विज्ञान वेद है। इसमें तृण से लेकर ईश्वर पर्यंत सब पदार्थों का विज्ञान भरा हुआ है। प्रकृति क्या है ? अग्नि, वायु आदिभूतों के गुण विशेषताएं क्या है ? जीव का उद्देश्य क्या है ? और उस लक्ष्य प्राप्ति के साधन क्या है ? ईश्वर का स्वरूप क्या है ? उसकी प्राप्ति क्यों आवश्यक है और वह किस प्रकार हो सकती है? इत्यादि सभी बातों का वर्णन ऋग्वेद में मिलता है।" - स्वामी जगदीश्वरा नन्द सरस्वती

बोध कथा :

कालिंजर का मठाधीश

अवध के राजा दरवार में विराजमान थे। अचानक उन्होंने अपने मंत्री से कहा बाहर जाकर देखो, कोई दुखी प्राणी अन्याय के खिलाफ शिकायत दर्ज करने की इच्छा से राजद्वार पर आया है। मंत्री ने द्वार पर जाकर देखा ,उन्हें एक कुत्ता दिखाई दिया। वे उसे राजा के पास ले आए। राजा ने उसे दुखी देख हालचाल पूछा। कुत्ता बोला 'हे राजन! आप हमारे रक्षक है। मैं आपके पास न्याय की उम्मीद से आया हूं।'

राजा ने उसके साथ हुए अन्याय के बारे में पूछा। कुत्ते ने बताया स्वार्थ सिद्व नामक एक पंडित ने अकारण ही उसके सिर पर डण्डे से प्रहार किया। कुत्ते की शिकायत पर राजा के सामने उस पंडित को उपस्थित किया गया। पंडित बोला,हे राजन ! मैं भूखा था घर के सामने कुत्ते को बैठा देखा। मुझे लगा कि कुत्ते की वजह से आज भिक्षा नहीं मिल रही है। मेरे कहने के बावजूद कुत्ते के नहीं हटने पर मुझे भारी क्रोध आ गया और मैंने डंडा दे मारा। महाराज! मुझसे अपराध हुआ है आप मुझे जो चाहें, दण्ड दें।

राजा ने अपने सभासदों से पंडित को दंड देने बाबत परामर्श किया। सबने एक स्वर से निर्णय दिया,पंडित होने से इसे माफ किया जाना चाहिए। पर आप राजा है, चाहें तो उचित दण्ड दे सकते हैं। राजा ने कहा, इस बारे में निर्णय मैं भी नहीं करूंगा। कुत्ते से ही पूछा जाए कि पंडित को कैसे दण्डित किया जाए। राजा के पूछने पर कुत्ता बोला, राजन ! मेरी इच्छा है कि आप पंडित को कालिंजर का मठाधीश बना दें। यह सुनकर सबको आश्चर्य हुआ। ऐसा होने पर पंडित को भिक्षा-वृति से छुटकारा मिल जाएगा और मठाधीश होने के बाद उसे सारी सुख -सुविधाएं सहज प्राप्त होगीं।

राजा ने कुत्ते से पंडित को मठाधीश बनाने का प्रयोजन पूछा। उन्हें आश्चर्य हुआ कि पंडित को दंड देने की जगह कुत्ता उसे पुरस्कार देने की बात कह रहा है। राजा के पूछने पर कुत्ता बोला, राजन ! मैं भी पिछले जन्म में कालिंजर का मठाधीश था। फिर भी मुझे कुत्ते की योनि में जन्म लेना पड़ा। इसकी वजह इतनी ही थी कि शाम को मंदिर में आरती के समय घी का दिया लगाने के लिए बाती बनानी पड़ती थी। बाती बनाते समय थोड़ा सा घी मेरे नाखुनों के जरिए शाम को भोजन करते समय मेरे पेट में चला जाता। भगवान की आज्ञा के बिना मंदिर का घी खाने से मुझे कुत्ता बनना पड़ा। पंडित को कालिंजर का मठाधीश बनाने पर यह खूब मुफ्त का माल खाएगा और अगले जन्म में मेरी योनि में जन्म लेने से इसको सजा मिल जाएगी। राजा समेत सभी सभासदों को कुत्ते की बात ने प्रभावित किया। सभी ने कहा- कुत्ता ठीक कह रहा है। जो आदमी हराम की खायेगा ,उसे अगले जन्म में कुत्ते की योनि में जन्म लेना पड़ेगा।

मासिक गीत :

क़दम मिला कर चलना होगा
बाधाएँ आती हैं आएँ, घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पावों के नीचे अंगारे, सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों में हँसते-हँसते, आग लगाकर जलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रूदन में, तूफ़ानों में, अगर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में, अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना, पीड़ाओं में पलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में, अंधकार में, कल कहार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में, क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक, अरमानों को ढलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

सम्मुख फैला अगर ध्येय पथ, प्रगति चिरंतन कैसा इति अब,
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,असफल, सफल समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न मांगते, पावस बनकर ढलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

कुछ काँटों से सज्जित जीवन, प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुबन, परहित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में, जलना होगा, गलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।
(अटल बिहारी बाजपेई)

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे।
गजे साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥ - हितोपदेश

सभी पहाड़ों के पास कीमती पत्थर नहीं हैं, आपको सभी हाथियों से मोती नहीं मिलेंगे; परोपकारी लोग बहत आम नहीं हैं. चंदन परे जंगल में नहीं पाया जाता है।

---------------------------------------00-------------------------------------

जनवरी

पौष: पौष मास का हमारे जीवन से क्या सम्बन्ध है ? इस माह में नारायण के अलावा सूर्य देव की उपासना का विशेष महत्व माना गया है। पूजा पाठ और दान पुण्य के अलावा इस माह को पितृ को मुक्ति दिलाने वाला महीना माना जाता है। इस कारण तमाम लोग पौष के महीने में पिंडदान करते हैं। मानव जीवन विविध ऋणों से मुक्ति के लिए है। इसी माह में साल का सबसे छोटा दिन आता है, साथ ही लोहड़ी और मकर संक्रान्ति जैसे त्योहार पड़ते हैं।

इस माह हमारा संविधान दिवस भी आता है। एक स्वतन्त्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए 26 नवंबर 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा इसे अपनाया गया और 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया था। इसे लागू करने के लिये 26 जनवरी की तिथि को इसलिए चुना गया था, क्योंकि 1930 में इसी दिन भारतीय राष्टीय कांग्रेस ने भारत को पूर्ण स्वराज घोषित करने संकल्प लिया था। इस दिन हर भारतीय अपने देश के लिए प्राण देने वाले अमर सपूतों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। भारत के राष्ट्रपति दिल्ली के लाल किले पर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं।

1888 ई. में रामकृष्ण परमहंस ने महा समाधि ली। इसके पश्चात स्वामी विवेकानन्द तीर्थाटन के लिए निकले। अनेक तीर्थ स्थानों का भ्रमण करते हुए एक दिन वे कन्याकुमारी पहुंचे। यहाँ श्री मंदिर के पास ध्यान चित्त मुद्रा में बैठकर उन्हें भारत माता के भाव रूप में दर्शन हुए , उसी दिन उन्होंने भारत माता के पुरातन गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का संकल्प लिया। कुछ दिन पश्चात अमेरिका के शिकागो नगर में विराट धर्म सभा का आयोजन हुआ और स्वामी जी के मद्रासी शिष्यों ने उन्हें वहाँ भेजने का संकल्प किया। माँ शारदा देवी की आज्ञा से स्वामी जी ने 31 मई, 1893 ई. को अमेरिका प्रस्थान किया। 11 सितम्बर, 1893 को इस विराट धर्म सभा में स्वामी जी ने हिंदुत्व की महानता को प्रतिष्ठित कर पूरे विश्व को चौंका दिया। न्यूयार्क से उन्होंने पेरिस, लन्दन की यात्रा की और वहां उनसे प्रभावित होकर अनेक शिष्य बने। कालान्तर में कुमारी मार्गरेट अल्वा(भगिनी निवेदिता) उनकी प्रमुख शिष्या बनी, जिन्होंने शिक्षा और सेवा के क्षेत्र में स्वामी जी के सपनों को पूरा किया। स्वामी जी का सन्देश आज भी युवकों का आह्वान कर रहा है।

शिक्षक – विद्यार्थी करणीय बातें-10 जनवरी, विश्व हिंदी दिवस। 23 जनवरी 1897 -सुभाषचंद्र बोस जयंती। 12 जनवरी, स्वामी विवेकानंद जयंती पर महाविद्यालय में कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री:

स्वरोजगार के लिए आवश्यक संसाधन (भाग-एक)

शिक्षा के इस युग में स्वरोजगार एक महत्वाकांक्षी संकल्पना है, यह आत्मनिर्भरता की सबसे बड़ी संभावना मानी जाने लगी है और इसलिए इसको ठीक से समझने के लिए इसके संसाधनों को जानना अति आवश्यक है। बहुत से युवा जिनके पास शानदार व्यापारिक विचार होते हैं, लेकिन व्यवसाय योजना बनाने या उत्पाद एवं सेवा शुरू करने में उन्हें कठिनाइयाँ होती हैं। किसी व्यवसाय के लिए धन जुटाना भी मुश्किल हो सकता है, खासकर यदि भावी स्व-नियोजित व्यक्ति के पास अपनी पूंजी नहीं हो। बैंकों से धन प्राप्त करने हेतु भी प्रशिक्षण और प्रमाण-पत्र की आवश्यकता होती है।

(1) स्व-रोजगार चुनने का कारण: **(i)** स्व-रोजगार अपनी आय का साधन तो होता ही है, साथ ही आप चार अन्य लोगों को भी रोजगार दे सकते हैं। **(ii)** स्वयं के विचार/ न्याय, सामाजिक सोच को क्रियान्वित करने का अवसर प्राप्त होता है। **(iii)** पारिवारिक परम्परागत व्यवसाय को प्रोत्साहन।**(iv)** सामूहिक कार्य में नेतृत्व विकास के लिए अवसर।

(2) स्व-रोजगार के लाभ: **(i)** स्वायत्तता रहती है, स्वयं मालिक बनने का अवसर मिलता है। **(ii)** धन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। **(iii)** आर्थिक, सामजिक परिस्थिति के आधार पर कार्य उद्योग एवं रोजगार करने की अपनी इच्छा रहती है। **(iv)** अपने कौशल के विकास का अवसर प्राप्त होता है। **(v)** स्वयं की पसंद एवं मन के अनुकूल कार्य करना।

(3) स्वरोजगार के लिए आवश्यक गुण: (i) रिस्क उठाने का साहस होना चाहिए। **(ii)** अनिश्चितता की स्वीकृति अर्थात् समय के अनुसार चलने की मानसिकता बनानी पड़ती है। **(iii)** सामाजिक सरोकार की वृत्ति निर्माण करनी पड़ती है। **(iv)** स्व-अनुशासन रखना पड़ता है। **(v)** कड़ी मेहनत के लिए प्रतिबद्धता आवश्यक है। **(vi)** संकल्प शक्ति होनी चाहिए। **(vii)** शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक क्षमता एवं रचनात्मकता।

(4) स्व-रोजगार प्रारंभ करने के पहले के कुछ प्रश्न : (i) क्या मैं जोखिम लेने वाला हो सकता हूं ? **(ii)** मैं अनिश्चितता का जवाब कैसे दूं ? **(iii)** क्या मुझे अवसर का पता है ? **(iv)** मैं कितनी मेहनत कर सकता हूं ? **(v)** क्या मैं एक यथार्थवादी हूँ ? **(vi)** क्या मैं उपभोक्ता की नजर से देख सकता हूं ? **(vii)** मैं कितना अनुशासित हूँ ? क्या मैं आगे की योजना बना सकता हूँ ? **(xiii)** क्या मैं नेटवर्किंग कर पाऊंगा/पाऊंगी ? **(ix)** क्या मैं कंप्यूटर फ्रेण्डली हूँ ? **(x)** क्या मुझमें व्यावसायिक जागरूकता है ? **(xi)** मेरी प्रतिबद्धता और प्राथिमकता क्या है ? **(xii)** क्या मैं स्व-प्रेरित हूं ? **(xiii)** व्यावसायिकता का मेरे लिए क्या मतलब है?

(5) काम के सामान्य क्षेत्र: (i) सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) **(ii)** कृषि एवं उद्यानिकी **(iii)** क्राफ्ट **(iv)** स्वास्थ्य और बीमा **(v)** परम्परागत क्षेत्र। **(vi)** संचार-माध्यम **(vii)** सिनेमा– संगीत **(viii)** रचनात्मक लेखन **(ix)** लघु एवं कुटीर उद्योग **(x)** व्यापार और कानून आदि।

(6) व्यवसाय के प्रकार: (i) व्यापार उद्योग-व्यवसाय में भागीदारी **(ii)** लिमिटेड कंपनियां बनाना **(iii)** फ्रेंचाइजी लेना **(iv)** सहकारी समितियां**(v)** स्वतंत्र उद्यम **(vi)** समाज सेवा हेतु संचयन।

(7) व्यवसाय की सफलता : (i) व्यापार की योजना **(ii)** स्वरोजगार कौशल विचार/अवसर साध्यता **(iii)** बाजार की बारीक जानकारी **(iv)** वित्तीय – पोषण।

(8) स्व-रोजगार से सम्बन्धित कुछ खास बातें : (i) "स्व-नियोजित", "उद्यमी", "व्यवसाय के स्वामी" शब्द ऐसे किसी व्यक्ति की पहचान कराते हैं, जो व्यवसाय, अनुबंध या फ्रीलांस गतिविधि के रूप में अपनी कमाई करता है। **(ii)** स्व-नियोजित व्यक्ति वह है, जिसके पास अकेले या काम करने वाले लोगों के साथ नौकरी या गतिविधि है। **(iii)** स्व-रोजगार-निर्माण, माल और सेवाओं के उत्पादन के लिए नए, विचारों और तरीकों को लागू करता है। **(iv)** उद्यमिता का अर्थ है, एक प्रसिद्ध स्थानीय व्यवसाय, एक स्व-रोजगार गतिविधि या एक सफल उद्यमी के बारे में सोचना और एक वाक्य में वर्णन करने की कोशिश करना कि वे क्या करते हैं जैसे श्री वायलेट एक प्लंबर है, वह पानी से जुड़े काम करते है (जैसे सिंक, नल, पानी के पाइप, बाथरूम का निर्माण और मरम्मत करता है)।

(9) स्व-रोजगार स्थापित करने हेतु आवश्यक संसाधन: (i) वैकल्पिक कार्य स्थान **(ii)** कच्चे माल के लिए स्थानीय बाजार का उपयोग **(iii)** साहसी पूंजी की आवश्यकता **(iv)** बैंकिंग और वित्तीय **(v)** सेवा सदस्यों की जानकारी **(vi)** उद्यमिता बीमा स्रोत **(vii)** तकनीकी घटक।

(10) भौतिक संसाधन: ये ऐसे संसाधन हैं जिन्हें आप स्पर्श कर सकते हैं, महसूस कर सकते हैं और मूर्त हैं। भौतिक संसाधनों के उदाहरणों में शामिल हैं।**(i)** आधारभूत संरचना हेतु सामग्री और उपकरण।**(ii)** भवन और कार्यालय हेतु स्थान। **(iii)** वाहन और ट्रक। **(iv)**पॉइंट-ऑफ-सेल सिस्टम (जैसे स्क्वायर या शॉपीफाई)। **(v)** तकनीकी व्यवस्था (कम्प्यूटर, नेटवर्क, ई-मेल भी प्राथमिक व्यवस्था)।

(11) बौद्धिक संसाधन: ये वे संसाधन हैं जो अमूर्त हैं, लेकिन अक्सर भौतिक संसाधनों से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। बौद्धिक संसाधनों के उदाहरणों में शामिल हैं: किसी चीज़ या जानकारी को करने का एक निश्चित तरीका, जैसे -प्रोप्राइटरी ज्ञान, जो आपके लिए सबसे अच्छा काम करता है। सिस्टम और प्रक्रिया। ग्राहक ज्ञान। आपकी कंपनी का ब्रांड। कॉपीराइट और पेटेंट। ग्राहक डेटाबेस। सेवा-आधारित व्यवसाय के रूप में, बौद्धिक संपदा चीजों को प्राप्त करने और उन्हें अपने तरीके से करने के लिए बहुत अधिक निर्भर है। नियम-कानूनों की जानकारी(श्रम कानून/बाल अधिनियम आदि)।

(12) श्रम बल (श्रम शक्ति) के उदाहरणों में शामिल हैं: जो लोग उत्पाद या सेवा बनाते हैं। ट्रक ड्राइवर जो उत्पादों को वितरित करते हैं। ग्राहक सेवा एजेंट, प्रबंधक उत्पादन और बिक्री से जुड़े लोग।

(13) वित्तीय संसाधन: वित्तीय संसाधनों के उदाहरण-नकद, पैतृक उद्यम पूंजी, अनुदान और ऋण, कर्मचारियों के लिए वेतन-वित्तीय व्यवस्था विकल्प।

(14) अपना व्यवसाय स्थापित करना : व्यवसाय का क्षेत्र एवं नाम। स्वरोजगार के रूप में पंजीकृत होना। फैक्ट्री। ऑनलाइन कारोबार। दूसरों के साथ काम करना, सलाह और मदद। योजना की संक्षिप्त रूपरेखा। व्यवसाय अवधारणा। बाजार की संक्षिप्त जानकारी। वित्तीय योजना। जोखिम का साहस।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय पुरुष :

श्रीमत् शङ्करदेवश्च बन्धू सायणमाधवौ।
ज्ञानेश्वरस्तुकारामो रामदासः पुरन्दरः॥

श्रीमद्भगवतगीता

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्॥

काम-क्रोध से रहित, जीते हुए चित्तवाले, परब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार किए हुए ज्ञानी पुरुषों के लिए सब ओर से शांत परब्रह्म परमात्मा ही परिपूर्ण है॥

उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

अपने द्वारा अपना संसार रुपी समुद्र से उद्धार करे और अपने को अधोगति में न डाले क्योंकि यह मनुष्य आप ही तो अपना मित्र है और आप ही अपना शत्रु है॥

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥

जिस जीवात्मा द्वारा मन और इन्द्रियों सहित शरीर जीता हुआ है, उस जीवात्मा का तो वह आप ही मित्र है और जिसके द्वारा मन तथा इन्द्रियों सहित शरीर नहीं जीता गया है, उसके लिए वह आप ही शत्रु के सदृश शत्रुता का वर्ताव करता है॥

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः॥

सर्दी गरमी और-सुखदुःखादि में तथा मान और अपमान में जिसके अन्तःकरण की वृत्तियाँ भली भाँति शांत हैं-, ऐसे स्वाधीन आत्मावाले पुरुष के ज्ञान में सच्चिदानन्दघन परमात्मा सम्यक् प्रकार से स्थित है॥

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकांचनः॥

जिसका अन्तःकरण ज्ञानविज्ञान से तृप्त है-, जिसकी स्थिति विकार रहित है, जिसकी इन्द्रियाँ भली भाँति जीती हुई हैं और जिसके लिए मिट्टी, पत्थर और सुवर्ण समान हैं, वह योगी युक्त है, ऐसे कहा जाता है॥

रामचरितमानस

राम की प्रतिज्ञा :

पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिबर बृंद बिपुल सँग लागे॥
अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया॥

फिर श्री रघुनाथजी आगे वन में चले। श्रेष्ठ मुनियों के बहुत से समूह उनके साथ हो लिए। हड्डियों का ढेर देखकर श्री रघुनाथजी को बड़ी दया आई, उन्होंने मुनियों से पूछा ॥

जानतहूँ पूछिअ कस स्वामी। सबदरसी तुम्ह अंतरजामी ॥
निसिचर निकर सकल मुनि खाए। सुनि रघुबीर नयन जल छाए॥

(मुनियों ने कहा) हे स्वामी ! आप सर्वदर्शी और अंतर्यामी हैं। जानते हुए भी (अनजान की तरह) हमसे कैसे पूछ रहे हैं ? राक्षसों के दलों ने सब मुनियों को खा डाला है। यह सुनते ही श्री रघुवीर के नेत्रों में जल छा गया ॥

निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥

श्री रामजी ने भुजा उठाकर प्रण किया कि मैं पृथ्वी को राक्षसों से रहित कर दूँगा। फिर समस्त मुनियों के आश्रमों में जा-जाकर उनको (दर्शन एवं सम्भाषण का) सुख दिया ॥

सुतीक्ष्ण से भेंट :

प्रभु आगवनु श्रवन सुनि पावा। करत मनोरथ आतुर धावा ॥
हे बिधि दीनबंधु रघुराया। मो से सठ पर करिहहिं दाया ॥

उन्होंने ज्यों ही प्रभु का आगमन कानों से सुना, त्यों ही अनेक प्रकार के मनोरथ करते हुए वे आतुरता (शीघ्रता) से दौड़ चले। हे विधाता ! क्या दीनबन्धु श्री रघुनाथजी मुझ जैसे दुष्ट पर भी दया करेंगे ?॥

सहित अनुज मोहि राम गोसाईं। मिलिहहिं निज सेवक की नाईं ॥
मोरे जियँ भरोस दृढ़ नाहीं। भगति बिरति न ग्यान मन माहीं ॥

क्या स्वामी श्री रामजी छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित मुझसे अपने सेवक की तरह मिलेंगे ? मेरे हृदय में दृढ़ विश्वास नहीं होता, क्योंकि मेरे मन में भक्ति, वैराग्य या ज्ञान कुछ भी नहीं है ॥

नहिं सतसंग जोग जप जागा। नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा ॥
एक बानि करुनानिधान की। सो प्रिय जाकें गति न आन की ॥

मैंने न तो सत्संग, योग, जप अथवा यज्ञ ही किए हैं और न प्रभु के चरण कमलों में मेरा दृढ़ अनुराग ही है। हाँ, दया के भंडार प्रभु की एक बान है कि जिसे किसी दूसरे का सहारा नहीं है, वह उन्हें प्रिय होता है ॥

होइहैं सुफल आजु मम लोचन। देखि बदन पंकज भव मोचन ॥
निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी। कहि न जाइ सो दसा भवानी ॥

अहा ! भव बंधन से छुड़ाने वाले प्रभु के मुखारविंद को देखकर आज मेरे नेत्र सफल होंगे। हे भवानी! ज्ञानी मुनि प्रेम में पूर्ण रूप से निमग्न हैं। उनकी वह दशा कही नहीं जाती ॥

अबिरल प्रेम भगति मुनि पाई। प्रभु देखैं तरु ओट लुकाई ॥

अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा। प्रगटे हृदयँ हरन भव भीरा ॥

मुनि ने प्रगाढ़ प्रेमाभक्ति प्राप्त कर ली। प्रभु श्री रामजी वृक्ष की आड़ में छिपकर देख रहे हैं। मुनि का अत्यन्त प्रेम देखकर भवभय को हरने वाले श्री रघुनाथजी मुनि के हृदय में प्रकट हो गए॥

मुनिहि राम बहु भाँति जगावा। जाग न ध्यान जनित सुख पावा ॥

भूप रूप तब राम दुरावा। हृदयँ चतुर्भुज रूप देखावा ॥

श्री रामजी ने मुनि को बहुत प्रकार से जगाया, पर मुनि नहीं जागे, क्योंकि उन्हें प्रभु के ध्यान का सुख प्राप्त हो रहा था। तब श्री रामजी ने अपने राजरूप को छिपा लिया और उनके हृदय में अपना चतुर्भुज रूप प्रकट किया॥

मुनि अकुलाइ उठा तब कैसें। बिकल हीन मनि फनिबर जैसें ॥

आगें देखि राम तन स्यामा। सीता अनुज सहित सुख धामा ॥

तब (अपने ईष्ट स्वरूप के अंतर्धान होते ही) मुनि ऐसे व्याकुल होकर उठे, जैसे श्रेष्ठ (मणिधर) सर्प मणि के बिना व्याकुल हो जाता है। मुनि ने अपने सामने सीताजी और लक्ष्मणजी सहित श्यामसुंदर विग्रह सुखधाम श्री रामजी को देखा॥

परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी। प्रेम मगन मुनिबर बड़भागी ॥

भुज बिसाल गहि लिए उठाई। परम प्रीति राखे उर लाई ॥

प्रेम में मग्न हुए वे बड़भागी श्रेष्ठ मुनि लाठी की तरह गिरकर श्री रामजी के चरणों में लग गए। श्री रामजी ने अपनी विशाल भुजाओं से पकड़कर उन्हें उठा लिया और बड़े प्रेम से हृदय से लगा रखा॥

मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला। कनक तरुहि जनु भेंट तमाला ॥

राम बदनु बिलोक मुनि ठाढ़ा। मानहुँ चित्र माझ लिखि काढ़ा ॥

कृपालु श्री रामचन्द्रजी मुनि से मिलते हुए ऐसे शोभित हो रहे हैं, मानो सोने के वृक्ष से तमाल का वृक्ष गले लगकर मिल रहा हो। मुनि (निस्तब्ध) खड़े हुए (टकटकी लगाकर) श्री रामजी का मुख देख रहे हैं, मानो चित्र में लिखकर बनाए गए हों॥

कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी ॥

महिमा अमित मोरि मति थोरी। रबि सन्मुख खद्योत अँजोरी ॥

मुनि कहने लगे- हे प्रभो ! मेरी विनती सुनिए। मैं किस प्रकार से आपकी स्तुति करूँ ? आपकी महिमा अपार है और मेरी बुद्धि अल्प है। जैसे सूर्य के सामने जुगनू का उजाला !

परम प्रसन्न जानु मुनि मोही। जो बर मागहु देउँ सो तोही ॥

मुनि कह मैं बर कबहुँ न जाचा। समुझि न परइ झूठ का साचा ॥

(और कहा-) हे मुनि! मुझे परम प्रसन्न जानो। जो वर माँगो, वही मैं तुम्हें दूँ! मुनि सुतीक्ष्णजी ने कहा- मैंने तो वर कभी माँगा ही नहीं। मुझे समझ ही नहीं पड़ता की क्या झूठ है और क्या सत्य है, (क्या माँगू, क्या नहीं)॥

तुम्हहि नीक लागै रघुराई। सो मोहि देहु दास सुखदाई ॥

अबिरल भगति बिरति बिग्याना। होहु सकल गुन ग्यान निधाना ॥

हे रघुनाथजी! हे दासों को सुख देने वाले ! आपको जो अच्छा लगे, मुझे वही दीजिए। (श्री रामचंद्रजी ने कहा- हे मुने!) तुम प्रगाढ़ भक्ति, वैराग्य, विज्ञान और समस्त गुणों तथा ज्ञान के निधान हो जाओ॥

अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम।
मन हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम॥

हे प्रभो! हे श्री रामजी! छोटे भाई लक्ष्मणजी और सीताजी सहित धनुष-बाणधारी आप निष्काम (स्थिर) होकर मेरे हृदय रूपी आकाश में चंद्रमा की भाँति सदा निवास कीजिए॥

बोधवाक्य : 'जिसमें गुन अधिक होते है , सब ओर से उसी की प्रशंसा में वाणी ऐसे पहुंच जाती है, जैसे दुधारू गायें चारों ओर जंगल में विचरती हुई सायंकाल प्यारे बछड़े के पास को दौड़ती है। '- सामवेद

बोध कथा:

ठाकुर को दूध पिलाना

भारत में संतों की लम्बी परंपरा है। संत नामदेव संत ज्ञानेश्वर के समकालीन थे और उम्र में उनसे 5 साल बड़े थे। संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर के साथ पूरे महाराष्ट्र का भ्रमण किए। एक दिन नामदेव जी के पिता किसी काम से बाहर जा रहे थे। उन्होंने नामदेव से कहा कि अब हमारे स्थान पर तुम ठाकुर की सेवा करना, जैसे- ठाकुर को स्नान कराना, मन्दिर को स्वच्छ रखना और ठाकुर को दूध चढ़ाना। देखना लापरवाही या आलस्य मत करना नहीं तो ठाकुर जी नाराज हो जाएँगे।

नामदेव जी ने वैसा ही किया जैसे पिताजी समझाकर गए थे। नामदेव ने दूध का कटोरा भरकर ठाकुर जी के आगे रखा और हाथ जोड़कर देखते रहे कि ठाकुर जी किस तरह दूध पीते हैं ? ठाकुर को दूध कहाँ पीना था ? वह तो पत्थर की मूर्ति थे। नामदेव को इस बात का पता नहीं था कि ठाकुर को चम्मच भरकर दूध लगाया जाता व शेष दूध पंडित जी पी जाते थे। उन्होंने बिनती करनी शुरू की- हे प्रभु ! मैं तो आपका छोटा सा सेवक हूँ, दूध लेकर आया हूँ कृपा करके इसे ग्रहण कीजिए। हे प्रभु ! यह दूध मैं कपिला गाय से दुह कर लाया हूँ। हे मेरे गोविंद ! यदि आप दूध पी लेंगे तो मेरा मन शांत हो जाएगा, नहीं तो पिताजी नाराज़ होंगे। सोने की कटोरी मैंने आपके आगे रखी है। पीएं ! अवश्य पीएं ! मैंने कोई पाप नहीं किया। यदि मेरे पिताजी से प्रतिदिन दूध पीते हो तो मुझसे आप क्यों नहीं पी रहे ? हे प्रभु! दया करें। पिताजी मुझे पहले ही बुरा व निकम्मा समझते हैं। यदि आज आपने दूध न पिया तो मेरी खैर नहीं। पिताजी मुझे घर से बाहर निकाल देंगे। नामदेव ठाकुर जी के आगे प्रार्थना करते रहे।

अन्त में प्रभु भक्त की भक्ति पर खिंचे हुए चले गए। पत्थर की मूर्ति द्वारा हँसे। नामदेव ने इसका जिक्र इस प्रकार किया है - 'ऐकु भगतु मेरे हिरदे बसै। नामे देखि नराइनु हसै॥ नामदेव को देखकर प्रभु हँस पड़े। हँस कर उन्होंने दोनों हाथ आगे बढ़ाए और दूध पी लिया। दूध पीकर मूर्ति फिर वैसी ही हो गई - 'दूधु पी आई भगतु घरि गइआ। नामे हरि का दरसनु भइआ',दूध पिलाकर नामदेव जी घर चले गए। शुद्ध हृदय से की हुई प्रार्थना से उनके पास शक्तियाँ आ गई। वह भक्ति भाव वाले हो गए और जो वचन मुँह से निकालते वही सत्य होते। जब उनके पिताजी को यह ज्ञान हुआ कि ठाकुर जी ने दूध पिया तो वे बहुत प्रसन्न हुए।

मासिक गीत/ गान :

शांति रहे पर क्रांति रहे फूल हँसें खिलें नित फूलें,
पवन दोल पर सुख से झूलें किन्तु शूल को कभी न भूलें,
स्थिरता आती है जीवन में यदि कुछ नहीं अशान्ति रहे
शांति रहे पर क्रांति रहे !

यदि निदाघ क्षिति को न तपावे, तो क्या फिर घन जल बरसावे ?
कैसे जीवन जग में आवे ? यदि न बदलती रहे जगत में,
तो किसको प्रिय कांति रहे ? शांति रहे पर कांति रहे !

उन्नति हो अथवा अवनति हो , यदि निश्चित मनुष्य की गति हो ,
तो फिर किसे क्रम में रति हो ? रहे अटल विश्वास चित्त में ,
किन्तु तनिक सी भ्रान्ति रहे शांति रहे पर क्राँति रहे ?

(गोपालशरण सिंह

---00---

फरवरी

माघ :सनातन धर्म में माघ माह का बहुत अधिक महत्व बताया गया है। कहते हैं कि ये मास दान, जाप, ध्यान व स्नान के लिए महत्वपूर्ण होता है। इस मास में पवित्र नदियों में स्नान, पूजन, अर्चन, दान को विशेष महत्व दिया गया है। माना गया है कि ऐसा करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। बता दें कि इस माह में संपूर्ण भारत के प्रमुख तीर्थों पर मेलों का आयोजन होता है। प्रयाग, हरिद्वार, उत्तर काशी जगहों पर लगने वाले माघ मेलों में दूर-दूर से लोग आते हैं, कुछ तिथियों को स्नान के लिए विशेष माना जाता है। माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को षटतिला एकादशी कहते हैं। इस दिन तिलों का विशेष महत्व है। इस दिन तिल के जल से स्नान किया जाता है और साथ ही तिल से हवन होता है , तिल मिले जल का पान, तिल का भोजन एवं तिल का दान किया जाता है। काले तिल व काली गाय के दान का भी बहुत महत्व होता है। षटतिला एकादशी के लिए शास्त्रों में भी कहा गया है- तिलस्नायी तिलोद्वार्ती तिलहोमी तिलोद्की। तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला: पापनाशना: ॥ यानी तिल का उबटन लगाकर, जल में तिल मिलाकर स्नान करना, तिल से हवन करना, पानी में तिल को मिलाकर पीना, तिल से बने पदार्थों का भोजन करना और तिल अथवा तिल से बनी चीजों का दान करने से सभी मनुष्य स्वस्थ रहता है अर्थात् उसके दैहिक और भौतिक पापों का नाश होता है।

चार धाम - मंदिर निर्माण की भावना का जागरण कब से हुआ, इसका ठीक-ठीक पता लगाना संभव नहीं है , परन्तु मंदिर स्थापत्य कला का विकास स्वतंत्र रूप से अशोक के पूर्व ही जान पड़ता है. आचार्य शंकर ने चार धामों की स्थापना की- (1) बदरीनाथ- यह उत्तराखंड प्रान्त के चमोली जिले में स्थित है। बर्फ पड़ने के कारण बदरीनाथ के पट सर्दियों में चार माह बंद रहते हैं। इसके पुजारी केरल के नम्बूदरी ब्राहमण रावल कहे जाते हैं। प्रकृति कहें, ईश्वर कहें एक विचित्र लीला है कि बदरीनाथ में बर्फ से ढकी पहाड़ी की चोटियों से गर्म जल के सोते निकलते हैं। मंदिर में भगवान् विष्णु की मूर्ति की स्थापना की गई है। बदरीनाथ चारधामों में से एक धाम है। (2) जगन्नाथपूरी: पूरी उड़ीसा राज्य का एक नगर है। मंदिर में जगन्नाथ, सुभद्रा और बलराम के काष्ठ निर्मित विग्रह हैं। आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया के दिन निकलने वाली जगन्नाथ पूरी की यात्रा विश्व प्रसिद्ध है। (3) रामेश्वरम : बंगाल की खाड़ी और हिन्दु महासागर के संगम पर रामेश्वरम धाम है। यहाँ भगवान् राम ने शिवलिंग की स्थापना की थी। मंदिर में 22 कुँए और कुण्ड हैं, जिनमें तीर्थ यात्री स्नान करते हैं। रामेश्वरम मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भगवान राम के जीवन की अनेक घटनाएं इसके बाहर और भीतर अंकित हैं। विशालकाय बरामदे और बारादरियाँ यहाँ की विशेषताएँ हैं। (4) द्वारका धाम: गुजरात के सौराष्ट्र प्रान्त में पश्चिमी समुद्रतट पर स्थित श्री कृष्ण द्वारा स्थापित गण राज्य की राजधानी है। यह चार धामों में से एक धाम है।

शिक्षक- विद्यार्थी करणीय कार्यक्रम: वसंत पंचमी एवं निराला जयंती के अवसर पर महाविद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किए जाएं तथा विद्यार्थियों को भारतीय परंपरा के उत्सवों का परिचय कराया जाए (यथा रंगपंचमी , वर्ष प्रतिपदा)। इसके साथ ही विद्यार्थियों को भारत की छह ऋतुओं का परिचय कराया जाए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री:

स्वरोजगार के लिए आवश्यक संसाधन (भाग-दो)

1. **संसाधन की आवश्यकताएं:** **(i)** व्यवसाय शुरू करने और बढाने के लिए क्या आवश्यक है **(ii)** इसका विवरण इस प्रकार है- प्रौद्योगिकी: मशीनरी, फोटोकॉपियर, उपकरण, कंप्यूटर **(iii)** व्यक्ति: व्यावसायिक कौशल, विशेषज्ञ कर्मचारी, आपरेटर। बाहरी संसाधन: आपूर्तिकर्ता और उत्पाद/सेवाएँ कंपनी के बाहर **(iv)** अन्य: जैसे, वितरण, वित्तीय, कानूनी, पदोन्नति/विपणन, पेशेवर सदस्यता और लाइसेंस।
2. **बिक्री और विपणन:** **(i)** अपने ग्राहक को जानो **(ii)** अपने व्यवसाय को बढ़ावा देना **(iii)** अपने उत्पाद का विज्ञापन करें **(iv)** अनुबंधों के लिए टेंडरिंग **(v)** एम-कॉमर्स और ई-कॉमर्स।
3. **वित्त का प्रबंध करना:** स्व-वित्त, नकदी प्रवाह, लाभ, ओवरहेड्स, क्रेडिट/जमा, चालान-प्रक्रिया, बैंक खाते, वैट के लिए पंजीकरण, बुक कीपिंग एंड अकाउंटिंग, लोगों को रोजगार, नौकरी के प्रस्ताव और नौकरी अनुबंध, बीमा, पेंशन, विवाद।
4. **निधि:(i)** व्यवसाय शुरू करने के लिए आपको कितने पैसे की आवश्यकता होगी ? **(ii)** किन संसाधनों और उपकरणों की आवश्यकता होगी ? **(iii)** क्या आई.टी. सुविधाएं आवश्यक होंगी ? **(iv)** व्यवसाय की लागत क्या होगी ? **(v)** धन के कौन से स्रोत आप पहले लक्षित करेंगे? **(vi)** व्यवसाय शुरू करने के दौरान आप कैसे अपना समर्थन करेंगे
5. **चेकलिस्ट:** एक चेकलिस्ट तैयार करना चाहिए जिससे स्व-नियोजित होने पर विचार करने के लिए मुख्य बिंदुओं पर की गई कार्रवाई स्मरण दिलाने में सहायक होती है। नमूने के तौर पर- **(i)** व्यापार स्वरोजगार के आपके क्या कारण हैं ? **(ii)** आपका विचार कितना व्यावहारिक है और क्यों ? **(iii)** मेरे व्यवसाय का अनोखा विक्रय बिंदु क्या है ? **(iv)** मेरे द्वारा चुने गए क्षेत्र में किस प्रकार के ज्ञान, कौशल और योग्यता की आवश्यकता है ? अपने ज्ञान, कौशल और योग्यता को कैसे रखेंगे ? **(v)** हम व्यवसाय को कैसे बढ़ाना चाहते हैं ?
6. **स्मरणीय बिंदु-** स्व-रोजगार चुनने का कारण, व्यवसाय के प्रकार, स्व-रोजगार, स्व-रोजगार स्थापित करने हेतु आवश्यक संसाधन।
7. **विस्तारित शिक्षा :** वर्तमान व्यवसायियों के जीवंत उदाहरण, शार्क टाइम्स जैसे टीवी चैनलों पर लाइव शो, सफल उद्यमियों का इतिहास, एक उद्यम में आवश्यक वित्तीय संसाधनों पर केस स्टडी।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय पुरुष

बिरसा सहजानन्दो रामानन्दस्तथा महान्।
वितरन्तु सदैवैते दैवीं सद्गुणसंपदम्॥

बोध वाक्य-'मनुष्य को परस्पर उपदेश से परमेश्वर की स्तुति उपासना प्रार्थना का प्रचार करना चाहिए, जिससे ज्ञान का प्रकाश बढ़े।' – सामवेद

श्रीमद्भगवतगीता

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्॥

शुद्ध भूमि में, जिसके ऊपर क्रमशः कुशा, मृगछाला और वस्त्र बिछे हैं, जो न बहुत ऊँचा है और न बहुत नीचा, ऐसे अपने आसन को स्थिर स्थापन करके॥

तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः ।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥

उस आसन पर बैठकर चित्त और इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में रखते हुए मन को एकाग्र करके अन्तःकरण की शुद्धि के लिए योग का अभ्यास करे॥

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः ।
सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥

काया, सिर और गले को समान एवं अचल धारण करके और स्थिर होकर, अपनी नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि जमाकर,अन्य दिशाओं को न देखता हुआ ॥

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥

ब्रह्मचारी के व्रत में स्थित, भयरहित तथा भलीभाँति शांत अन्तःकरण वाला सावधान योगी मन को रोककर मुझमें चित्तवाला और मेरे परायण होकर स्थित हो॥

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः ।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥

वश में किए हुए मनवाला योगी इस प्रकार आत्मा को निरंतर मुझ परमेश्वर के स्वरूप में लगाता हुआ मुझमें रहने वाली परमानन्द की पराकाष्ठारूप शान्ति को प्राप्त होता है॥

रामचरितमानस

अगस्त्य से भेंट:

एवमस्तु करि रमानिवासा । हरषि चले कुंभज रिषि पासा ॥
सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए । हरि बिलोकि लोचन जल छाए ॥
मुनि पद कमल परे द्वौ भाई। रिषि अति प्रीति लिए उर लाई ॥

एवमस्तु' ऐसा उच्चारण कर लक्ष्मी निवास श्री रामचंद्रजी हर्षित होकर अगस्त्य ऋषि के पास चले । यह सुनते ही अगस्त्यजी तुरंत ही उठ दौड़े । भगवान् को देखते ही उनके नेत्रों में जल भर आया । दोनों भाई मुनि के चरण कमलों पर गिर पड़े । ऋषि ने बड़े प्रेम से उन्हें हृदय से लगा लिया ॥

मुनि समूह महँ बैठे सन्मुख सब की ओर ।
सरद इंदु तन चितवन मानहुँ निकर चकोर ॥

मुनियों के समूह में श्री रामचंद्रजी सबकी ओर सम्मुख होकर बैठे हैं । ऐसा जान पड़ता है मानो चकोरों का समुदाय शरदपूर्णिमा के चंद्रमा की ओर देख रहा है ॥

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं । तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥
तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ। ताते तात न कहि समुझायउँ ॥

तब श्री रामजी ने मुनि से कहा- हे प्रभो! आप से तो कुछ छिपाव है नहीं । मैं जिस कारण से आया हूँ, वह आप जानते ही हैं । इसी से हे तात! मैंने आपसे समझाकर कुछ नहीं कहा ॥

अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही॥

मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी। पूछेहु नाथ मोहि का जानी॥

हे प्रभो ! अब आप मुझे वही मंत्र (सलाह) दीजिए, जिस प्रकार मैं मुनियों के द्रोही राक्षसों को मारूँ। प्रभु की वाणी सुनकर मुनि मुस्कुराए और बोले- हे नाथ ! आपने क्या समझकर मुझसे यह प्रश्न किया?॥

तुम्हरेइँ भजन प्रभाव अघारी। जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी॥

ऊमरि तरु बिसाल तव माया। फल ब्रह्मांड अनेक निकाया॥

हे पापों का नाश करने वाले! मैं तो आप ही के भजन के प्रभाव से आपकी कुछ थोड़ी सी महिमा जानता हूँ। आपकी माया गूलर के विशाल वृक्ष के समान है, अनेकों ब्रह्मांडों के समूह ही जिसके फल हैं॥

जीव चराचर जंतु समाना। भीतर बसहिं न जानहिं आना॥

ते फल भच्छक कठिन कराला। तव भयँ डरत सदा सोउ काला॥

चर और अचर जीव जंतुओं के समान उन के भीतर बसते हैं और वे दूसरा कुछ नहीं जानते। उन फलों का भक्षण करने वाला कठिन और कराल काल है। वह काल भी सदा आपसे भयभीत रहता है॥

ते तुम्ह सकल लोकपति साईं। पूँछेहु मोहि मनुज की नाईं॥

यह बर मागउँ कृपानिकेता। बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता॥

उन्हीं आपने समस्त लोकपालों के स्वामी होकर भी मुझसे मनुष्य की तरह प्रश्न किया। हे कृपा के धाम! मैं तो यह वर माँगता हूँ कि आप श्री सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित मेरे हृदय में निवास कीजिए॥

अबिरल भगति बिरति सतसंगा। चरन सरोरुह प्रीति अभंगा॥

जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता। अनुभव गम्य भजहिं जेहि संता॥

मुझे प्रगाढ़ भक्ति, वैराग्य, सत्संग और आपके चरणकमलों में अटूट प्रेम प्राप्त हो। यद्यपि आप अखंड और अनंत ब्रह्म हैं, जो अनुभव से ही जानने में आते हैं और जिनका संतजन भजन करते हैं॥

है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पंचबटी तेहि नाऊँ॥

दंडक बन पुनीत प्रभु करहू। उग्र साप मुनिबर कर हरहू॥

हे प्रभो! एक परम मनोहर और पवित्र स्थान है, उसका नाम पंचवटी है। हे प्रभो! आप दण्डक वन को (जहाँ पंचवटी है) पवित्र कीजिए और श्रेष्ठ मुनि गौतमजी के कठोर शाप को हर लीजिए॥

बास करहु तहँ रघुकुल राया। कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया॥

चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहिं पंचबटी निअराई॥

हे रघुकुल के स्वामी! आप सब मुनियों पर दया करके वहीं निवास कीजिए। मुनि की आज्ञा पाकर श्री रामचंद्रजी वहाँ से चल दिए और शीघ्र ही पंचवटी के निकट पहुँच गए॥

गीधराज से भेंट:

गीधराज सै भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ।

गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ॥

वहाँ गिद्ध जटायु से भेंट हुई। उसके साथ बहुत प्रकार से प्रेम बढ़ाकर प्रभु श्री रामचंद्रजी गोदावरीजी के समीप पर्णकुटी छाकर रहने लगे॥

राम- लक्ष्मण संवाद :

एक बार प्रभु सुख आसीना। लछिमन बचन कहे छलहीना॥
सुर नर मुनि सचराचर साईं। मैं पूछउँ निज प्रभु की नाईं॥

एक बार प्रभु श्री रामजी सुख से बैठे हुए थे। उस समय लक्ष्मणजी ने उनसे छलरहित वचन कहे- हे देवता, मनुष्य, मुनि और चराचर के स्वामी! मैं अपने प्रभु की तरह आपसे पूछता हूँ॥

मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा। सब तजि करौं चरन रज सेवा॥
कहहु ग्यान बिराग अरु माया। कहहु सो भगति करहु जेहिं दाया॥

हे देव! मुझे समझाकर वही कहिए, जिससे सब छोड़कर मैं आपकी चरणरज की ही सेवा करूँ। ज्ञान, वैराग्य और माया का वर्णन कीजिए और उस भक्ति को कहिए, जिसके कारण आप दया करते हैं॥

ईस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाइ।
जातें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ॥

हे प्रभो! ईश्वर और जीव का भेद भी सब समझाकर कहिए,जिससे आपके चरणों में मेरी प्रीति हो और शोक, मोह तथा भ्रम नष्ट हो जाएँ॥

मैं अरु मोर तोर तैं माया। जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया॥
गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई॥
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ। बिद्या अपर अबिद्या दोऊ॥

मैं और मेरा, तू और तेरा- यही माया है, जिसने समस्त जीवों को वश में कर रखा है॥ इंद्रियों के विषयों को और जहाँ तक मन जाता है, हे भाई! उन सबको माया जानना। उसके भी एक विद्या और दूसरी अविद्या, इन दोनों भेदों को तुम सुनो॥

एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा। जा बस जीव परा भवकूपा॥
एक रचइ जग गुन बस जाकें। प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें॥

एक (अविद्या) दुष्ट (दोषयुक्त) है और अत्यंत दुःखरूप है, जिसके वश होकर जीव संसार रूपी कुएँ में पड़ा हुआ है और एक (विद्या) जिसके वश में गुण है और जो जगत् की रचना करती है, वह प्रभु से ही प्रेरित होती है, उसके अपना बल कुछ भी नही है॥

बोध वाक्य : अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुंचाना, यही तपस्या का स्वरूप है। -संत तिरुवल्लुवर

बोध कथा :

हीरे मोती की भिक्षा

विजय नगर के राजा कृष्णदेवराय ने अपने राजगुरु व्यासराय के मुंह से संत पुरंदरदास के सादगी भरे जीवन की प्रशंसा सुनी। राजा ने संत की परीक्षा लेने की मन में ठानी। एक दिन राज-सेवक के जरिए उन्होंने संत को राजमहल बुलाया। वापस जाते समय उनकी झोली में भिक्षा के चावल डाले। संत प्रसन्न होकर बोले,महाराज ! आपकी दया इसी तरह हमेशा बनी रहे |राजा ने भी रोज भिक्षा देने का वादा किया।

घर आकर पुरंदरदास ने हर रोज की तरह भिक्षा की झोली पत्नी सरस्वती देवी के हाथ में सौंपी। पत्नी जब चावल बीनने बैठी, तो देखा कि उसमें छोटे-छोटे हीरे मोती है। उन्होंने पति से पूछा, आप आज कहां से भिक्षा लाए हैं ? पति ने कहा- राजमहल से। पुरंदरदास की पत्नी ने उन्हें हीरे मोती दिखाए। पुरंदरदास ने उस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया और अगले दिन फिर से भिक्षा लेने राजमहल पहुंच गए। राजा ने भी फिर झोली में चावल के साथ हीरे माती डाल दिए। यह क्रम एक सप्ताह तक चलता रहा। राजा ने व्यासराय को बुलाकर कहा, महाराज ! आप तो कहते थे कि पुरंदरदास जैसा त्यागी बैरागी दूसरा कोई नहीं है। पर मुझे तो ये पूरे लोभी लालची दिखाई दिए। विश्वास नहीं हो, तो उनके घर चलिए और सच्चाई को अपनी आंख से देखिए।

दोनों जब पुरंदरदास की कुटिया में पहुंचे। उन्होने देखा कि लिपे-पुते आंगन में तुलसी के पौधे के पास सरस्वती देवी चावल बीन रही है। राजा कृष्ण राय ने पूछा बहन, आप चावल बीन रही है। सरस्वती देवी ने कहा, हां भाई ! क्या करूँ भिक्षा देने वाला रोज इसमें कंकर-पत्थर वाली भिक्षा दे देता हैं, इसलिए बीनना पड़ता हैं। मैने अपने पति से पूछा कि आप भिक्षादाता को ऐसा करने से मना क्यों नहीं करते। ये कहते हैं कि भिक्षा देने वाला राजा है। राजा का मन नहीं दुखे, इसलिए प्रसन्नता से ये कंकर -पत्थर वाली भिक्षा ले लेते हैं।

इनका क्या जाता है , मुझे इन कंकरों को बीनने में बहुत वक्त लगता है। राजा ने कहा, बहन ! तुम बड़ी भोली हो, जिसे कंकर-पत्थर कह रही हो, वेशकीमती हीरे-मोती हैं, राजा की बात पर सरस्वती देवी बोली हीरे-मोती आपके लिए हैं। हमारे लिए तो कंकर-पत्थर ही हैं। बीने हुए कंकणों को कूड़े के ढेर पर फेंकने दूर भी जान पड़ता है। राजा व्यासराय के साथ कूड़े के ढेर तक गए, वहां पिछले छह दिन से फेंके गए हीरे-मोती चमचमा रहे थे। यह देख व्यासराय के मुख पर संतोष की मंद मुस्कान फैल गई। राजा कृष्ण देव राय ने सरस्वती और पुरंदरदास के चरणों में अपना सिर नवाते हुए कहा, वास्तव में जिस वस्तु का रोजमर्रा के जीवन में उपयोग नहीं है, वह वस्तु कंकड -पत्थर से ज्यादा मोल नहीं रखती है।

मासिक गीत / गान :

दूर देश में किसी विदेशी गगन खंड के नीचे
सोये होगे तुम किरनों के तीरों की शैय्या पर
मानवता के तरुण रक्त से लिखा संदेशा पाकर
मृत्यु देवताओं ने होंगे प्राण तुम्हारे खींचे

प्राण तुम्हारे धूमकेतु से चीर गगन पट झीना
जिस दिन पहुंचे होंगे देवलोक की सीमाओं पर
अमर हो गई होगी आसन से मौत मूर्च्छिता होकर
और फट गया होगा ईश्वर के मरघट का सीना

और देवताओं ने ले कर ध्रुव तारों की टेक -
छिड़के होंगे तुम पर तरुनाई के खूनी फूल
खुद ईश्वर ने चीर अंगूठा अपनी सत्ता भूल
उठ कर स्वयं किया होगा विद्रोही का अभिषेक

किंतु स्वर्ग से असंतुष्ट तुम, यह स्वागत का शोर
धीमे-धीमे जबकि पड़ गया होगा बिलकुल शांत
और रह गया होगा जब वह स्वर्ग देश
खोल कफ़न ताका होगा तुमने भारत का भोर।

(धर्मवीर भारती)

--00--

मार्च

फाल्गुन: हिन्दू पंचांग के अनुसार वर्ष का आखिरी महीना फाल्गुन है। फाल्गुन के महीने के आते ही सारा वातावरण रंगीन हो जाता है, और चारों ओर खुशहाली छा जाती है। फागुन का महीना मस्ती से भरा होता है, जो सारी प्रकृति को नया रंग प्रदान कर देता है। पेड़-पौधों की शाखाएँ हरे-हरे पत्तों से लद जाती हैं। लाल-लाल कोंपलें अपार सुंदर लगती हैं। रंग-बिरंगे फूलों की बहार-सी छा जाती है। इससे वन की शोभा का वैभव पूरी तरह से प्रकट हो जाता है। प्रकृति ईश्वरीय शोभा को ले कर प्रकट हो जाती है, जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है। इस ऋतु में न गर्मी का प्रकोप होता है और न ही सर्दी की ठिठुरन। इसमें न तो हर समय की वर्षा होती है और न ही पतझड़ से ठूँठ बने वृक्ष। यह महीना तो अपार सुखदायी बन कर सबके मन को मोह लेता है।

शिक्षक विद्यार्थी करणीय कार्यक्रम : 8 मार्च, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस। 21 मार्च , विश्व वन दिवस। 22 मार्च, विश्व जल दिवस। 24 मार्च, विश्व क्षयरोग दिवस एवं 27 मार्च को विश्व रंगमंच दिवस के अवसर पर महाविद्यालयों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री:

उद्यमिता संचालन में विपणन कौशल (भाग - एक)

उत्पादन क्रियाओं के प्रारंभ होने से पूर्व ही विपणन चिन्तन (MarketingThinking) प्रारम्भ हो जाता है और उत्पादक को ग्राहकों को विक्रय के पश्चात भी उनकी आवश्यकताओं की संतुष्टि तक चालू रहता है। विक्रयोपरांत सेवाओं को भी इसमें सम्मिलित किया जाता है। विपणन कौशल दो शब्दों का योग है- 1.विपणन 2. कौशल। विपणन का आशय विक्रय योग्य बाजार से तथा प्रबन्ध से आशय लक्ष्यों की प्राप्ति से है। अतएव, 'विपणन कौशल' एक व्यापक शब्द है, जिसमें नियोजन तथा सम्पूर्ण विपणन कार्यक्रमों को लागू किया जाना एवं उन्हें नियंत्रण करना सम्मिलित है। दूसरे शब्दों में, विपणन कौशल प्रत्यक्ष रूप से लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का निर्धारण, विपणन योजनाओं का विकास, विपणन क्रियाओं का संगठन तथा विपणन कार्यक्रमों का कार्यान्वयन एवं नियंत्रण करता है।

विपणन की रणनीति मुख्यतया इसके विभिन्न वातावरण के तत्वों पर निर्भर करती है। विपणन प्रबन्ध के बाहरी वातावरण में विद्यमान वे शक्तियां या कारक जो विपणन प्रबंध की कार्य कुशलता को प्रभावित करती है तथा जिन पर विपणन कौशल द्वारा नियंत्रण किया जा सकता है। यदि उद्यमी इस कौशल को अपने उद्यम में अपनाता है, तब उसके उद्यम के सफल होने की सम्भावना बढ़ जाती हैं। विपणन व्यवसाय के अस्तित्व एवं सफलता का आधार होता है। विपणन नियोजन, निर्णयन एवं संचार में सहायक होता है। विपणन में ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पादन एवं वितरण किया जाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि विपणन से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भी सफलता प्राप्त होती है। अच्छे विपणन या विपणन कौशल से लाभों में निरंतर वृद्धि होती रहतीहै। संस्था या उद्यम का विकास और विस्तार उत्तरोत्तर होता जाता है। इससे उद्यम की ख्याति में भी वृद्धि होती है।

(1) विपणन का अर्थ एवं आवश्यकता: विपणन एक सामाजिक प्रक्रिया है जहां लोग मुद्रा के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान-प्रदान करते हैं। कोई भी वस्तु जो किसी दूसरे के लिए कीमती है, उसका विपणन किया जा सकता है। **(i)** भौतिक उत्पादन:- Phone, T.V. **(ii)** सेवाएं :- नेटवर्क Gas Cylinder **(iii)** व्यक्ति:- IPL **(iv)** स्थान:- ताजमहल, Tourism में। इसमें वस्तु के उत्पादन से पूर्व शुरू होकर उसके बाद तक की क्रियाएं शामिल हैं। विपणन में किसी उत्पाद सेवा की खरीद एवं बिक्री को बढ़ावा देने के लिए एक उद्यमी द्वारा की गई गतिविधियाँ जिसमें वस्तु निर्माण से संबंधित कच्चे माल को क्रय करना,विज्ञापन, बिक्री एवं उत्पादनों को ग्राहको या उपभोक्ता कम्पनी तक पहुँचाना शामिल है।

(2)विपणन क्यों किया जाना चाहिए – **(i)** उद्यम के विकास तथा बाजार में बने रहने के लिये, पर्याप्त लाभ उत्पन्न करने के लिए। **(ii)** विपणन की सारी गतिविधियां ग्राहक को संतुष्टि प्रदान करने पर केन्द्रित होती है। अतःवर्तमान ग्राहक बनाए रखने एवं संभावित ग्राहक खोज ने हेतु। **(iii)** विज्ञापन और बिक्री बढ़ाने के सभी प्रयत्नों के द्वारा विपणन का उद्देश्य अपने उत्पाद की अतिरिक्त मांग पैदा करना होता है। **(iv)** विपणन का उद्देश्य उद्यम के लिए लोगों के मन में एक अच्छी धारणा और ख्याति का निर्माण करना होता है। व्यापार के लम्बे जीवन काल के लिए। **(v)** निर्यात संवर्धन हेतु। **(vi)** भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु, हस्तशिल्प, कारीगरी से बनी वस्तुओं को विश्व बाजार तक ले जाने हेतु।

(3) विपणन कौशल का अर्थ : उद्यम संचालन में विपणन एक सतत् प्रक्रिया है। जिसके अन्तर्गत विपणन की योजना बनाई जाती है एवं क्रियान्वयन किया जाता है। यह प्रक्रिया व्यक्तियों और संगठनों के बीच उत्पादों सेवाओं या विचारों के विनिमय हेतु की जाती है। विपणन को एक रचनात्मक उद्योग के रूप में देखा जाता है, अतःइसमें विपणन कौशल की आवश्यकता होती है। जिसमें शामिल है- विज्ञापन (Advertising) वितरण (Distribution) और बिक्री (Selling)। इसका सम्बन्ध ग्राहकों की भावी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का पूर्व विचार करने से भी है, जो प्रायःबाजार शोध के माध्यम से पता लगाई जाती है।

(4) विपणन कौशल की आवश्यकता- व्यवसाय का मूलभूत उद्देश्य ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करके दीर्घकालीन लाभ अर्जित करना होता है। इस दृष्टि से विपणन कौशल की आवश्यकता व्यवसाय के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए होती है। उद्यमी का बेहतर विपणन कला कौशल, स्थापित उद्यम को आर्थिक रूप से सफल एवं लागत पूंजी पर, उचित लाभ अर्जित करने में सहायक होता है, जिससे उद्यमी अपनी सीमित पूंजी से शुरूआत कर निरंतर पूंजी का विस्तार कर सकते हैं। प्रभावी विपणन कला कौशल के विकास के लिए निश्चय ही इस दिशा में उद्यमी के प्रयास इकाई स्थापना के पूर्व से ही होना चाहिए। उद्योग / सेवा /व्यवसाय हेतु वस्तु के चयन से पूर्व वस्तु का वास्तविक नाम, प्रकार, गुणवत्ता, उपयोगिता, विक्रेता, खरीददार प्रतियोगियों आदि के बारे में गहन अध्ययन की आवश्यकता है तथा क्षमता, कमजोरियों, प्राप्त अवसर और उससे जुड़ी रुकावटों को ध्यान में रखते हुये, प्रभावी विपणन कला-कौशल के माध्यम से मुनाफे के साथ-साथ, धंधें को संचालित करने की योजना तय की जानी चाहिये।

(5) विपणन क्रियाओं का नियोजन एवं नियंत्रण – विपणन कौशल की आवश्यकता ग्राहकों को संतुष्टि प्रदान करने के लिए होती है। इस दृष्टि से उद्यमी को किसी उत्पाद को विपणन के लिए प्रस्तुत करने से पूर्व वैज्ञानिक रूप से ग्राहकों की आवश्यकताओं का अध्ययन करना चाहिए। माल अथवा सेवाओं का विक्रय उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि ग्राहकों की संतुष्टि। यदि देखा जाए तो विपणन का कार्य प्रारम्भ एवं अन्त सदैव ग्राहकों की संतुष्टि से ही होता है। **(i) ग्राहक-आधार का सृजन करना** ''यदि ग्राहक हैं तो व्यवसाय हैं, यदि ग्राहक नहीं तो व्यवसाय नहीं।' इस दृष्टि से व्यवसाय की स्थापना उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ पर ग्राहकों की संख्या अधिक होती है। ग्राहकों की संख्या जितनी अधिक होगी, व्यवसाय का उद्गम एवं विकास उतनी ही तीव्रगति से होता है। **(ii) लाभों में वृद्धि करना-** विपणन कौशल से व्यवसाय के लिए आय अर्जित करना सम्भव हो पाता है। व्यवसाय के उद्गम एवं विकास के लिए समुचित लाभों का अर्जित होना आवश्यक है। **(iii) विपणन-मिश्रण का निर्धारण करना-** विपणन मिश्रण से उद्यमी ग्राहकों की आवश्यकताएँ ज्ञात करता है। उत्पाद, मूल्य-निर्धारण, संवर्द्धन तथा भौतिक वितरण की योजना इस प्रकार से तैयार की जानी चाहिए, ताकि विभिन्न प्रकार के ग्राहकों की आवश्यकताओं की संतुष्टि की जा सके। **(iv) स्वच्छ छवि बनाना-**उद्यमी का उद्देश्य जनता में उत्पाद की अच्छी छवि स्थापित करना है। हम वही उत्पाद खरीदते हैं जिसकी बाजार में छवि अच्छी होती है, जैसे- मारुति कार, हल्दी राम का नमकीन आदि। संस्था की अच्छी ख्याति से विक्रेताओं के मनोबल में वृद्धि होती है। किसी उत्पाद की बाजार में अच्छी छवि होने से फिर उसका बाजार से बाहर होना कठिन हो जाता है। **(v) जीवन स्तर ऊँचा उठाना-** उद्यमी का उद्देश्य लोगों को विभिन्न प्रकार की अच्छी किस्म का उत्पाद उचित मूल्य पर उपलब्ध कराकर उनके जीवन को ऊँचा उठाना है। **(vi) विपणन एवं उपभोक्ता अनुसंधान करना-**ग्राहकों की आवश्यकता का पता लगाना एवं उनकी संतुष्टि करना।

(6) उद्यम संचालन में विपणन का योगदान : (i) उत्पादन में योगदान- एक उत्पाद के सिर्फ निर्माण मात्र से ही उद्यमी का कार्य पूर्ण नहीं हो जाता। उत्पाद निर्माण के पश्चात् उसे ग्राहकों के सामने आकर्षक रूप में प्रस्तुत करना भी आवश्यक है। यह आवश्यक नहीं है कि उद्यमी अपने व्यवसाय में उत्पाद निर्माण के साथ-साथ उसकी पैकेजिंग आदि हेतु आवश्यक सामग्री जैसे पेपर, लोगो आदि का भी निर्माण एवं प्रिंटिंग का कार्य करें। जिस प्रकार उद्यमी समस्त कार्यों को स्वयं नहीं कर सकता उसी प्रकार वह उत्पाद से संबंधित समस्त साधनों/आवश्यक वस्तुओं का निर्माण भी स्वयं नहीं कर सकता। इसके लिये उसे अन्य उद्यमियों से सम्पर्क कर उनके साथ साझेदारी अथवा अनुबंध के माध्यम से उन वस्तुओं को जो उत्पादन हेतु आवश्यक है को प्राप्त करना पड़ता है। यह उद्यमी के लिये स्त्रोत साझेदार होते हैं। जिनके माध्यम से वह अपने उत्पाद निर्माण आवश्यकताओं हेतु आवश्यक सामग्री प्राप्त करता है। **(ii) उत्पाद बेचने में योगदान** –विपणन नेटवर्क से आशय उद्यमी की बाजार में पहचान एवं उत्पाद के प्रचार-प्रसार एवं बिक्री से है। उत्पादन निर्माण से पूर्व ही उत्पाद के विपणन की योजना उद्यमी द्वारा तैयार कर ली जाती है। वह उत्पादन के प्रचार हेतु विज्ञापन आदि का सहयोग लेता है एवं अपने उत्पाद को कितनी मात्रा में किस प्रकार विक्रय करेगा अर्थात् थोक विक्रेता/फुटकर विक्रेता, अपनी दुकान खोलकर, ऑनलाईन App के माध्यम से, डिजिटल मार्केटिंग या सीधे ग्राहकों को विक्रय करेगा। इसका निर्धारण करता है। **(iii) विपणन रणनीतियां**– विपणन रणनीतियों से आशय उत्पाद के विक्रय में वृद्धि हेतु योजना बनाने से है। विपणन नीतियों में उत्पाद के बाजार प्रसार की रणनीतियों को भी शामिल किया जाता है। इसके अतिरिक्त मौखिक बाजार प्रसार एवं कुछ सेंपल उत्पाद निःशुल्क उपभोक्ताओं को उपलब्ध करवाये जाते है। उद्यमी द्वारा समय-समय पर कुछ छूट प्रदान कर अथवा अन्य प्रलोभनों के माध्यम से भी उपभोक्ताओं को आकर्षित किया जाता है। **(vi) बाजार सर्वेक्षण हेतु विपणन-** बाजार सर्वेक्षण व्यवसाय के विभिन्न कार्यों में से ही एक है। समय-समय पर बाजार सर्वेक्षण में भी विपणन कौशल की आवश्यकता है। बाजार सर्वेक्षण में उद्यमी विभिन्न संभावित क्रेताओं/विक्रेताओं से मिलता है तो इससे उनके व्यापारिक संबंधों का निर्माण होता है। भविष्य में यही विक्रेता उद्यमी के साझेदार होते हैं जो उत्पाद का विक्रय करते हैं। बाजार सर्वेक्षण के जरिए एकत्रित आंकड़ों को वित्तीय संस्थाओं के समक्ष प्रस्तुत कर उद्यमी ऋण भी प्राप्त कर सकता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय कवि :

भरतर्षिः कालिदासः श्रीभोजो जकणस्तथा।
सूरदासस्त्यागराजो रसखानश्च सत्कविः॥

श्रीमद्भगवतगीता

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन॥

हे अर्जुन ! यह योग न तो बहुत खाने वाले का, न बिलकुल न खाने वाले का, न बहुत शयन करने के स्वभाव वाले का और न सदा जागने वाले का ही सिद्ध होता है॥

युक्ताहार विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

दुःखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार विहार करने वाले का-, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य सोने तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है॥

यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते।

निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा॥

अत्यन्त वश में किया हुआ चित्त जिस काल में परमात्मा में ही भलीभाँति स्थित हो जाता है, उस काल में सम्पूर्ण भोगों से स्पृहारहित पुरुष योगयुक्त है, ऐसा कहा जाता है॥

यथा दीपो निवातस्थो नेंगते सोपमा स्मृता।

योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः॥

जिस प्रकार वायुरहित स्थान में स्थित दीपक चलायमान नहीं होता, वैसी ही उपमा परमात्मा के ध्यान में लगे हुए योगी के जीते हुए चित्त की दी गई है॥

यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया।

यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति॥

योग के अभ्यास से निरुद्ध चित्त जिस अवस्था में उपराम हो जाता है और जिस अवस्था में परमात्मा के ध्यान से शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा परमात्मा को साक्षात करता हुआ सच्चिदानन्दघन परमात्मा में ही सन्तुष्ट रहता है॥

रामचरितमानस

राम-लक्षमण संवाद

ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं॥

कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी॥

ज्ञान वह है, जहाँ मान आदि एक भी नहीं है और जो सबसे समान रूप से ब्रह्म को देखता है। हे तात ! उसी को परम वैराग्यवान् कहना चाहिए, जो सारी सिद्धियों को और तीनों गुणों को तिनके के समान त्याग चुका हो॥

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना। ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना॥

जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई। सो मम भगति भगत सुखदाई॥

धर्म (के आचरण), वैराग्य और योग से ज्ञान होता है तथा ज्ञान मोक्ष का देने वाला है, ऐसा वेदों ने वर्णन किया है और हे भाई! जिससे मैं शीघ्र ही प्रसन्न होता हूँ, वह मेरी भक्ति है, जो भक्तों को सुख देने वाली है॥

भगति कि साधन कहउँ बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी॥

प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती॥

अब मैं भक्ति के साधन विस्तार से कहता हूँ यह सुगम मार्ग है, जिससे जीव मुझको सहज ही पा जाते हैं। पहले तो ब्राह्मणों के चरणों में अत्यंत प्रीति हो और वेद की रीति के अनुसार अपने-अपने कर्मों में लगा रहे॥

एहि कर फल पुनि बिषय बिरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा॥

श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं॥

इसका फल, फिर विषयों से वैराग्य होगा। तब मेरे धर्म में प्रेम उत्पन्न होगा। तब श्रवण आदि नौ प्रकार की भक्तियाँ दृढ़ होंगी और मन में मेरी लीलाओं के प्रति अत्यंत प्रेम होगा॥

बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम।

तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा विश्राम॥

जिनको कर्म, वचन और मन से मेरी ही गति है और जो निष्काम भाव से मेरा भजन करते हैं, उनके हृदय कमल में मैं सदा विश्राम किया करता हूँ॥

मारीच बध :

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला । मैं कछु करबि ललित नरलीला ॥

तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा । जौ लगि करौं निसाचर नासा ॥

हे प्रिये! हे सुंदर पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली सुशीले! सुनो! मैं अब कुछ मनोहर मनुष्य लीला करूँगा, इसलिए जब तक मैं राक्षसों का नाश करूँ, तब तक तुम अग्नि में निवास करो ॥

जबहिं राम सब कहा बखानी । प्रभु पद धरि हियँ अनल समानी ॥

निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता । तैसइ सील रूप सुबिनीता ॥

श्री रामजी ने ज्यों ही सब समझाकर कहा, त्यों ही श्री सीताजी प्रभु के चरणों को हृदय में धरकर अग्नि में समा गईं। सीताजी ने अपनी ही छाया मूर्ति वहाँ रख दी, जो उनके जैसे ही शील-स्वभाव और रूपवाली तथा वैसे ही विनम्र थी ॥

लछिमनहूँ यह मरमु न जाना । जो कछु चरित रचा भगवाना ॥

तब मारीच हृदयँ अनुमाना । नवहि बिरोधें नहिं कल्याना॥

सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी । बैद बंदि कबि भानस गुनी ॥

भगवान ने जो कुछ लीला रची, इस रहस्य को लक्ष्मणजी ने भी नहीं जाना । तब मारीच ने हृदय में अनुमान किया कि शस्त्री, मर्मी, समर्थ स्वामी, मूर्ख, धनवान, वैद्य, भाट, कवि और रसोइया- इन नौ व्यक्तियों से विरोध करने में कल्याण नहीं होता ॥

सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग सुमनोहर बेषा ॥

सुनहु देव रघुबीर कृपाला । एहि मृग कर अति सुंदर छाला ॥

सीताजी ने उस परम सुंदर हिरन को देखा, जिसके अंग-अंग की छटा अत्यन्त मनोहर थी। (वे कहने लगीं-) हे देव! हे कृपालु रघुवीर! सुनिए। इस मृग की छाल बहुत ही सुंदर है ॥

सत्यसंध प्रभु बधि करि एही । आनहु चर्म कहति बैदेही ॥

तब रघुपति जानत सब कारन । उठे हरषि सुर काजु सँवारन ॥

जानकीजी ने कहा, हे सत्यप्रतिज्ञ प्रभो ! इसको मारकर इसका चमड़ा ला दीजिए। तब श्री रघुनाथजी (मारीच के कपटमृग बनने का) सब कारण जानते हुए भी, देवताओं का कार्य बनाने के लिए हर्षित होकर उठे ॥

मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा । करतल चाप रुचिर सर साँधा ॥

प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई । फिरत बिपिन निसिचर बहु भाई ॥

हिरन को देखकर श्री रामजी ने कमर में फेंटा बाँधा और हाथ में धनुष लेकर उस पर सुंदर (दिव्य) बाण चढ़ाया। फिर प्रभु ने लक्ष्मणजी को समझाकर कहा- हे भाई! वन में बहुत से राक्षस फिरते हैं ॥

सीता केरि करेहु रखवारी । बुधि बिबेक बल समय बिचारी ॥

प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी । धाए रामु सरासन साजी ॥

तुम बुद्धि और विवेक के द्वारा बल और समय का विचार करके सीताजी की रखवाली करना । प्रभु को देखकर मृग भाग चला । श्री रामचन्द्रजी भी धनुष चढ़ाकर उसके पीछे दौड़े ॥

लछिमन कर प्रथमहिं लै नामा । पाछें सुमिरेसि मन महुँ रामा ॥

प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा । सुमिरेसि रामु समेत सनेहा ॥

पहले लक्ष्मणजी का नाम लेकर उसने पीछे मन में श्री रामजी का स्मरण किया । प्राण त्याग करते समय उसने अपना (राक्षसी) शरीर प्रकट किया और प्रेम सहित श्री रामजी का स्मरण किया ॥

आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लछिमन सन परम सभीता॥

जाहु बेगि संकट अति भ्राता। लछिमन बिहसि कहा सुनु माता॥

भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहुँ संकट परइ कि सोई॥

इधर जब सीताजी ने दुःखभरी वाणी सुनी तो वे बहुत ही भयभीत होकर लक्ष्मणजी से कहने लगीं॥ तुम शीघ्र जाओ, तुम्हारे भाई बड़े संकट में हैं। लक्ष्मणजी ने हँसकर कहा- हे माता ! सुनो, जिनके भ्रकुटि विलास मात्र से सारी सृष्टि का लय हो जाता है, वे श्री रामजी क्या कभी स्वप्न में भी संकट में पड़ सकते हैं ?॥

बोध वाक्य : 'ऐसे देश को छोड़ देना चाहिए जहाँ धन तो है लेकिन सम्मान नहीं।'-विनोबा

बोध कथा **कुबेर का अहंकार**

देवराज इंद्र के कोषाध्यक्ष कुबेर अपने को देवकोष का मालिक समझ धन का निजी स्वार्थ में उपयोग करने लगे। एक दिन वह भगवान शिव के पास पहुंचे और कहा, महादेव, मैं एक भव्य भोज का आयोजन कर रहा हूँ। मेरी इच्छा है कि उसमें समस्त देवगण , यक्ष, गंधर्व आदि भाग लें और सभी वहां से तृप्त होकर लौटें। कृपया आप भी सपरिवार पधारे। शंकर जी समझ गए कि कुबेर अहंकार -ग्रस्त हो चुके हैं। उन्होंने कहा, ' मैं तो नहीं आ पाऊंगा, न पार्वती ही जा पाएंगी, किंतु गणेश जी को भेज दूंगा।

गणेश जी भोज में पहुंचे। उन्होंने जाते ही कुबेर से कहा,' मुझे भूख लगी है सबसे पहले मुझे भोजन कराएं।' गणेश जी के क्रोध से परिचित कुबेर ने उनकी थाली जल्द ही परोस दी। गणेश जी ने भोजन शुरु किया, तो खाते ही चले गए। देखते-देखते तमाम व्यंजन समाप्त होने लगे। कुबेर यह देख घबरा गए। अन्य अतिथि क्या भोजन करेंगे, यह सोचकर उन्होंने भोजन परोसना रुकवा दिया। गणेश जी क्रोधित होकर बोले, दावा कर रहे थे कि कोई भी अतृप्त नहीं लौटेगा। मुझ अकेले का पेट नहीं भर पाए। 'कुबेर जी कैलाश की तरफ भागे। वह शिव जी के चरणों में गिरकर भोज यज्ञ की रक्षा करने की प्रार्थना करने लगे। तभी गणेश जी वहां पहुंचे और अपने पिता से कहा, 'मुझे किस दरिद्र के भोज में भेज दिया ?' शंकर जी ने कहा, 'कुबेर, अहंकार के कारण तुम्हें लज्जित होना पड़ा है'। कुबेर शंकर जी के चरणों में गिरकर क्षमा मांगने लगे।

मासिक गीत /गान

वंदन मेरे देश-तेरा वंदन मेरे देश।
पूजन,अर्चन,आराधन,अभिनन्दन मेरे देश॥

तुझसे पाई माँ की ममता और पिता का प्यार
तेरे अन्न, हवा, पानी से देह हुई तैयार
तेरी मिट्टी-मिट्टी कब है, चंदन मेरे देश।

भिन्न-भिन्न भाषाएँ, भूषा यद्यपि धर्म अनेक
किन्तु सभी भारतवासी हैं और हृदय है एक
तुझ पर बलि है, हृदय - हृदय का स्पंदन मेरे देश।

पर्वत, सागर, नदियाँ ऐसा दृश्य कहाँ,
स्वर्ग अगर है कहीं धरा पर तो है सिर्फ यहाँ
तू ही दुनियाँ की धरती का वंदन मेरे देश
वंदन मेरे देश-तेरा वंदन मेरे देश।

(चंद्रसेन विराट)

---00---

अप्रैल

चैत्र: चैत्र सनातन पंचांग का पहला मास है। इसी महीने से भारतीय नववर्ष आरम्भ होता है। अनेक पर्व इस मास में मनाये जाते हैं। चैत्र मास की पूर्णिमा चित्रा नक्षत्र में होती है, इसी कारण इस महीने का नाम चैत्र पड़ा। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इसी महीने की प्रतिपदा को भगवान विष्णु के दशावतारों में से पहले अवतार मत्स्यावतार अवतरित हुए एवं जल प्रलय के बीच घिरे मनु को सुरक्षित स्थल पर पहुँचाया था, जिनसे प्रलय के पश्चात नई सृष्टि का आरम्भ हुआ। आचार्य शंकर ने पञ्च देव की कल्पना की है जिसमें- सूर्य, गणेश, शिव, विष्णु और आदिशक्ति मां दुर्गा को पंचदेव माना गया है,सनातन परम्परा में हर शुभ कार्य में इनके पूजन का विधान है।

शिक्षक-विद्यार्थी करणीय कार्यक्रम : 7 अप्रैल, विश्व स्वास्थ्य दिवस। 11 अप्रैल, राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस। 14 अप्रैल बी.आर. अम्बेडकर की जन्मतिथि। 18 अप्रैल विश्व विरासत दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किये जाए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री:

उद्यमित्ता संचालन में विपणन कौशल (भाग - दो)

(4) विपणन कौशल का महत्व : इस अभियान के अंतर्गत समस्त नागरिकों एवं राष्ट्र को डिजिटल रूप से सशक्त करने हेतु किसी भी व्यावसायिक उद्यम के सफल संचालन के लिए कुशल विपणन अति आवश्यक है। पीटर एफ ड्रकर मानते हैं कि एक व्यावसायिक उद्यम केवल एक विपणन संगठन है । वह आगे बताते हैं कि विपणन व्यवसाय का विशिष्ट कार्य है।

विपणन करने वाले व्यावसायिक संगठन को अन्य सभी मानव संगठनों से अलग किया जाता है, इस तथ्य से कि वह किसी उत्पाद या सेवा का विपणन करता है। विपणन कौशल आज व्यावसाय योजना में सबसे महत्वपूर्ण कारक है। विपणन एक व्यापारिक संगठन का दिल है। अल्प विकसित विपणन कौशल अल्प विकसित अर्थव्यवस्था का संकेत है। मार्केटिंग फंक्शन को सही ढंग से प्रबंधन का सबसे महत्वपूर्ण संचालन कार्य माना जाता है। (4.1) विपणन प्रबन्धन एवं ग्राहक प्रबन्धन के लिए विपणन कौशल जरूरी है। (4.2) विपणन कौशल की रणनीति बाजार के वातावरण पर निर्भर करती है। उद्यमी बाजार के वातावरण में बदलाव नहीं कर सकते, अपितु उत्पाद एवं सेवाओं की विपणन रणनीतियों में बदलाव लाकर अपने उद्यम को सफल बना सकते हैं। (4.3) विपणन उपभोक्ता को अपनी पसंद व जरुरत का बेहतर उत्पाद और सेवा चुनने का अवसर देता है और वस्तुओं के उपभोग में वृद्धि करता है। स्तरीय उत्पादों की सुगम और उचित मूल्य पर उपलब्धि सुचारु विपणन व्यवस्था के कारण होती है। (4.4) विपणन कौशल समय और स्थान से निरपेक्ष उत्पाद को उपलब्ध कराने में सहायता करता है। (4.5) विपणन व्यवसाय को अपनी बिक्री की मात्रा बढ़ाने, राजस्व उत्पन्न करने और लंबे समय में इसकी सफलता सुनिश्चित करने में मदद करता है। (4.6) विपणन प्रतियोगिता को प्रभावी ढंग से पूरा करने में व्यवसाय की मदद करता है। (4.7) विपणन जनता के लिये उत्पाद जागरूकता को बढ़ावा देता है। (4.8) विपणन उद्यम की प्रतिष्ठा का निर्माण करता है। सामान्य बाजार को जीतने के लिए, विपणक एक ब्रांड बनाने का लक्ष्य रखते हैं।

(5) डिजिटल इंडिया को फलीभूत करने हेतू चयनित संस्थाएं : (5.1) उद्देश्यों के निर्धारण की कला- किसी भी क्रिया के प्रभावशाली सम्पादन के लिए यह आवश्यक है कि उसके उद्देश्यों का पूर्व निर्धारण किया जाये। विपणन उद्देश्यों की निर्धारण प्रक्रिया मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन चरणों में विभाजित की जाती है-(i) उपभोक्ता आवश्यकताओं का निर्धारण(ii) बाजार विभक्तीकरण (iii) विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण (5.2) विपणन योजना का विकास करना (Developing the Marketing Plan) (5.3) विपणन हेतु संगठन कला (Organising skill) -संगठन विपणन प्रबन्ध का एक महत्वपूर्ण कार्य है। सी.केनेथ (C. Kenneth) के शब्दों में ‘‘एक कमजोर संगठन अच्छे संगठन के उत्पाद को मिट्टी में मिला सकता है किन्तु अच्छा संगठन, जिसके पास कमजोर उत्पाद हैं अच्छे उत्पाद को बाजार से भगा सकता है।’ अतःविपणन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विपणन क्रियाओं में संगठन आवश्यक है। (5.4) समन्वय क्षमता (Co-ordinating ability)-समन्वय ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा संगठन की समस्त क्रियाओं में इस प्रकार सामंजस्य स्थापित

किया जाता है कि संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके। (5.5) स्टाफिंग (Staffing) किसी भी संगठन की सफलता काफी सीमा तक उसमें कार्य करने वाले कर्मचारियों पर निर्भर करती है। इसके लिए कर्मचारियों की कार्य दशाएँ आवश्यक होती हैं। नियुक्ति को प्रबन्ध का एक महत्वपूर्ण कार्य माना गया है सही व्यक्ति सही स्थान पर होना चाहिए। (5.6) निर्देशन एवं नियन्त्रण क्षमता (Ability Control)- विपणन प्रबन्ध के उपर्युक्त कार्यों के प्रभावी सम्पादन के लिए कुशल निर्देशन का होना परम आवश्यक होता है। अंत में यह देखना कि यह कार्य योजनाओं, लक्ष्यों एवं नीतियों के अनुसार हो रहा है या नहीं और यदि नहीं तो उनके क्या कारण हैं और उन्हें दूर करने हेतु क्या-क्या कदम उठाए जाने चाहिए। यह देखना विपणन प्रबन्ध का महत्वपूर्ण कार्य है। (5.7) विश्लेषण एवं मूल्यांकन कौशल (Analysing and Evaluating capacity)- अंत में प्राप्त परिणामों का विश्लेषण और मूल्यांकन जिससे ज्ञात हो सके कि एक संस्था अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में किस सीमा तक सफल हो चुकी है। इसके विक्रेताओं के कार्य निष्पादन एवं उनकी उत्पादकता का मूल्यांकन किया जा सकता है। (5.8) नेतृत्व कला, तकनीकी एवं संचार कौशल-उद्यमी को विपणन हेतु एक टीम की आवश्यकता है टीम से विपणन कार्य कराने की क्षमता उद्यमी में होनी चाहिए। उद्यमी में सही व्यक्ति को सही कार्य पर रखने की समझ होनी चाहिए। Social media, Email Marketing के लिए तकनीकी ज्ञान आवश्यक है। इसके अंतर्गत प्रति पुष्टि लेना प्रेस रिलीज लिखना आदि शामिल होते हैं एक उद्यमी को लिखित एवं मौखिक संचार में पारंगत होना चाहिए। (5.9) रचनात्मक कौशल- यह वस्तु के प्रचार-प्रसार एवं वितरण के लिए नए विकल्प खोजने के लिए आवश्यक होता है (5.10) नवाचारी सोच एवं जिज्ञासा- उद्यमी को खुली सोच का होना चाहिए, लीक से हट कर सोचने की क्षमता होनी चाहिए। (5.11) समस्या निवारण दृष्टिकोण-समस्या सुलझाने का कौशल- समस्या सुलझाने के लिए उद्यमी को तीक्ष्ण बुद्धि, विद्वान एवं विश्वासोत्पादक (Convincing) होना चाहिये। साथ ही निर्णयन क्षमता, समय प्रबन्धन की योग्यता भी। (5.12) ग्राहक प्रबंधन हेतु विक्रय कला कौशल–अधिकतम विक्रय हेतु परिस्थिति को सम्भालने का साहस व क्षमता होनी चाहिए। बेहतर विक्रय कला कौशल के लिये निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है- (i) ग्राहकों की आवभगत (ii) ध्यानाकर्षण (iii) रूचि उत्पन्न करना (iv) इच्छा उत्पन्न करना (v) संतुष्ट करना (vi) क्रियाशीलता। (5.13) प्रतियोगिता से निपटने की कला- उद्यमी को निष्ठा, विश्वास, लगन एवं सही ढंग से अपने प्रतियोगियों का सामना करना चाहिये। जिसके लिए उद्यमी को कई बातों पर ध्यान रखना चाहिए, जैसे अपने प्रतियोगियों की क्षमता एवं कमजोरियों के बारे में जानकारी रखना। प्रतियोगिता से आँख बंद न करना। गलत ढंग से प्रतियोगियों की बुराई न करना। प्रतियोगिता में बिक्री के लिए मूल्य घटाना ही एक तरीका नहीं, अन्य तरीकों के बारे में सोचना। अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं के प्रति ग्राहक का मन जीतने की कोशिश करना और उनमें रूचि पैदा करना। उत्पादित वस्तु एवं ग्राहकों की खूबियों के बारे में जानना। ग्राहक को क्रय के पक्ष में निर्णय लेने के लिए प्रेरित करना। ग्राहकों की पसंदगी, ना पसंदगी तथा विक्रय की गई वस्तु सेवा अवधि पर विशेष ध्यान देना। विक्रय करने के लिए कई नये तरीकों का विकास करना। नई बातों को जानने की इच्छा रखना तथा ग्राहकों की जिज्ञासा को संतुष्ट करने की क्षमता विकसित करना एवं निर्धारित विक्रय लक्ष्य के लिए योजना बद्ध ढंग से काम करना।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय कलावंत :

रविवर्मा भातखण्डे भाग्यचन्द्रः स भूपतिः।
कलावंतश्च विख्याताः स्मरणीया निरन्तरम्॥

श्रीमद्भगवतगीता

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम्।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥

जो दुःखरूप संसार के संयोग से रहित है तथा जिसका नाम योग है, उसको जानना चाहिए। वह योग न उकताए हुए अर्थात धैर्य और उत्साहयुक्त चित्त से निश्चयपूर्वक करना कर्तव्य है॥

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।

ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥

सर्वव्यापी अनंत चेतन में एकीभाव से स्थिति रूप योग से युक्त आत्मा वाला तथा सब में समभाव से देखने वाला योगी आत्मा को सम्पूर्ण भूतों में स्थित और सम्पूर्ण भूतों को आत्मा में कल्पित देखता है ॥

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।

तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥

जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सबके आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता ॥

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥

श्री भगवान बोले हे महाबाहो! निःसंदेह मन चंचल और कठिनता से वश में होने वाला है। परन्तु हे कुंतीपुत्र - अर्जुन ! यह अभ्यास और वैराग्य से वश में होता है ॥

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।

वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥

जिसका मन वश में किया हुआ नहीं है, ऐसे पुरुष द्वारा योग दुष्प्राप्य है और वश में किए हुए मन वाले प्रयत्नशील पुरुष द्वारा साधन से उसका प्राप्त होना सहज है - यह मेरा मत है ॥

रामचरितमानस

सीता हरण :

सून बीच दसकंधर देखा । आवा निकट जती कें बेषा ॥

जाकें डर सुर असुर डेराहीं । निसि न नीद दिन अन्न न खाहीं ॥

रावण सूना मौका देखकर यति (संन्यासी) के वेष में श्री सीताजी के समीप आया, जिसके डर से देवता और दैत्य तक इतना डरते हैं कि रात को नींद नहीं आती और दिन में अन्न नहीं खाते ॥

नाना बिधि करि कथा सुहाई । राजनीति भय प्रीति देखाई ॥

कह सीता सुनु जती गोसाईं । बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं ॥

रावण ने अनेकों प्रकार की सुहावनी कथाएँ रचकर सीताजी को राजनीति, भय और प्रेम दिखलाया । सीताजी ने कहा- हे यति गोसाईं! सुनो, तुमने तो दुष्ट की तरह वचन कहे ॥

तब रावन निज रूप देखावा । भई सभय जब नाम सुनावा ॥

कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । आइ गयउ प्रभु रहु खल ठाढ़ा ॥

तब रावण ने अपना असली रूप दिखलाया और जब नाम सुनाया तब तो सीताजी भयभीत हो गईं । उन्होंने गहरा धीरज धरकर कहा- 'अरे दुष्ट! खड़ा तो रह, प्रभु आ गए' ॥

क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ ।

चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ ॥

फिर क्रोध में भरकर रावण ने सीताजी को रथ पर बैठा लिया और वह बड़ी उतावली के साथ आकाश मार्ग से चला, किन्तु डर के मारे उससे रथ हाँका नहीं जाता था ॥

सीता विलाप :

हा जग एक बीर रघुराया। केहिं अपराध बिसारेहु दाया॥

आरति हरन सरन सुखदायक। हा रघुकुल सरोज दिननायक॥

हा जगत के अद्बितीयवीर श्री रघुनाथजी! आपने किस अपराध से मुझ पर दया भुला दी। हे दुःखों केहरने वाले, हे शरणागत को सुख देने वाले, हा रघुकुल रूपी कमल के सूर्य!॥

हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा। सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा॥

बिबिध बिलाप करति बैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही॥

हा लक्ष्मण! तुम्हारा दोष नहीं है। मैंने क्रोध किया, उसका फल पाया। श्री जानकीजी बहुत प्रकार से विलाप कर रही हैं- (हाय!) प्रभु की कृपा तो बहुत है, परन्तु वे स्नेही प्रभु बहुत दूर रह गए हैं॥

जटायु-रावण युद्ध :

सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहउँ जातुधान कर नासा॥

धावा क्रोधवंत खग कैसें। छूटइ पबि परबत कहुँ जैसें॥

हे सीते पुत्री! भय मत कर। मैं इस राक्षस का नाश करूँगा। वह पक्षी क्रोध में भरकर ऐसे दौड़ा, जैसे पर्वत की ओर वज्र छूटता हो॥

रे रे दुष्ट ठाढ़ किन हो ही। निर्भय चलेसि न जानेहि मोही॥

आवत देखि कृतांत समाना। फिरि दसकंधर कर अनुमाना॥

रे रे दुष्ट! खड़ा क्यों नहीं होता ? निडर होकर चल दिया! मुझे तूने नहीं जाना ? उसको यमराज के समान आता हुआ देखकर रावण घूमकर मन में अनुमान करने लगा॥

सुनत गीध क्रोधातुर धावा। कह सुनु रावन मोर सिखावा॥

तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू। नाहिं त अस होइहि बहुबाहू॥

यह सुनते ही गीध क्रोध में भरकर बड़े वेग से दौड़ा और बोला, रावण! मेरी सिखावन सुन! जानकीजी को छोड़कर कुशलपूर्वक अपने घर चला जा, नहीं तो हे बहुत भुजाओं वाले ! ऐसा होगा कि॥

बोध वाक्य : "अतीत के सुखों के लिए सोच क्यों, अनागत भविष्य के लिए भय क्यों और वर्तमान को मैं अपने अनुकूल बना ही लूंगा फिर चिंता किस बात की ?" - जयशंकर प्रसाद

बोध कथा :

जूठा भोजन

कुरु प्रदेश के उषस्ति अपने वेद ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे। एक बार कुरु में भयंकर अकाल पड़ा। कई दिनों के भूखे उषस्ति ग्राम प्रमुख के द्वार पर पहुंचे और उनसे भोजन मांगा। ग्राम प्रमुख उस समय भोजन कर रहे थे। उन्होंने वेदनापूर्ण स्वर में कहा, 'विद्वान श्रेष्ठ ! मेरे पास महज थाली में ही भोजन है, भला मैं आपको जूठा भोजन कैसे दूं ? उषस्ति ने कहा, 'जूठे की चिंता मत कीजिए। मुझे इसी भोजन में से कुछ ग्रास दें। शरीर रक्षा हेतु यह जूठन भी पवित्र है। 'ग्राम प्रमुख ने अप्रसन्न मन से जूठे भोजन का कुछ अंश उषस्ति को दिया। जब वे भोजन कर चुके, तो ग्राम प्रमुख ने जूठे जल का पात्र भी पीने के लिए उनकी ओर बढ़ा दिया। उषस्ति ने जल पात्र वापस प्रमुख की ओर सरकाते हुए कहा, 'आर्य ! मेरे शरीर को जल की नहीं, अन्न की आवश्यकता थी। मैं पानी पीकर किसी के अधिकार का हनन नहीं करुंगा। धर्म पालन के लिए शरीर रक्षा आवश्यक है और शरीर रक्षा हेतु मैंने जो जूठा भोजन ग्रहण किया, वह धर्म सम्मत है। जल की इस समय शरीर को आवश्यकता नहीं, इसलिए उसे पीना अधर्म होगा। वेद पाठी उषस्ति की बात सुनकर ग्राम प्रमुख ने कहा, सचमुच आप सच्चे त्यागी हैं। आपने बिना जरूरत के पानी का एक घूंट पीना भी अधर्म समझा और जरूरत के अनुसार जूठन को भी प्रसाद समझ ग्रहण किया।

मासिक गीत /गान

धरती की शान तू है ,प्रभु की सन्तान,तेरी मुठ्ठियों में बन्द तूफ़ान है रे,
मनुष्य तू बड़ा महान है भूल मत,मनुष्य तू बड़ा महान है भूल मत ॥

तू जो चाहे पर्वत , पहाड़ो को फोड़ दे, तू जो चाहे नदियों के मुख को भी मोड़ दे,
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे, तू जो चाहे धरती को अम्बर से जोड़ दे ॥

अमर तेरे प्राण, मिला तुझको वरदान,तेरी आत्मा में स्वयम् भगवान है रे,
मनुष्य तू बड़ा महान है भूल मत ॥

नयनों से ज्वाल तेरी गति में भूचाल,तेरी छाती में छुपा महाकाल है,
पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरी सा भाल,तेरी भृकुटी में तान्डव का ताल है,
निज को तू जान, जरा शक्ति पहचान,तरी वाणी में युग का आव्हान है रे,
मनुष्य तू बड़ा महान है, भूल मत ॥

धरती-सा धीर तू है अग्नी-सा वीर,तू जो चाहे तो काल को भी थाम ले,
पापों का प्रलय रुके पशुता का शीश झुके,तू जो अगर हिम्मत से काम ले।
गुरु -सा मतिमान्, पवन सा तू गतिमान,तेरी नभ से भी ऊंची उड़ान है रे,
मनुष्य तू बड़ा महान है भूल मत ॥

---00---

मई

वैशाख: ऐसी मान्यता है कि वैशाख के महीने में भगवान विष्णु के साथ ही भगवान शिव और ब्रह्मा जी यानी त्रिदेव की पूजा करने से जीवन में आने वाली कठिनाइयों से मुक्ति मिलती है। समय और ऋतु काल में यह वह मास होता है, जब वासंतिक (वसंत का मौसम) पूरी तरह खत्म हो चुका होता है, जिससे सूर्य की तपिश बढ़ जाती है। सनातन परंपरा में वैशाख मास का बहुत महत्व बताया गया है। वेद काल से ही इस महत्व को वैशाख महात्म्य के नाम से जाना जाता है। सबसे बड़ा महत्व इस मास में प्यासे को जल पिलाने का माना जाता है।

गुरुदेव रविन्द्रनाथ का जन्म 7 मई, 1861 को कोलकाता में हुआ था। रवीन्द्रनाथ टैगोर को प्रकृति से अगाध प्रेम था। रविन्द्र नाथ टैगोर एक बांग्ला कवि, कहानीकार, गीतकार, निबंधकार, नाटककार और चित्रकार थे। महात्मा गाँधी ने रविन्द्र नाथ टैगोर को 'गुरुदेव' की उपाधि दी। रविन्द्र नाथ टैगोर को उनकी काव्य रचना 'गीतांजलि' के लिए सन 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। इनके गीतों में से एक- "अमार सोनार बांग्ला" बांग्लादेश का राष्ट्रीय गीत है और इन्ही का गीत 'जण गण मन अधिनायक जय हे' अपने देश भारत का राष्ट्रगान है। रविन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं -'केवल खड़े होकर पानी को ताकते रहने से आप नदी को पार नहीं कर सकते हो

।' उनका यह कथन सभी शिक्षकों को प्रेरणा देता है -'किसी बच्चे के ज्ञान को अपने ज्ञान तक सीमित मत रखिये क्योंकि वह किसी और समय में पैदा हुआ है।'

शिक्षक -विद्यार्थी करणीय कार्यक्रम : 7 मई को गुरुदेव रविन्द्रनाथ की जन्मतिथि ,19 मई हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की पुण्यतिथि, 24 मई महादेवी वर्मा की जन्मतिथि तथा 31 मई को तंबाकू निषेध दिवस पर आयोजन किए जाएं।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री:

एम. एस पॉवर पॉइंट-2019

वर्तमान समय में किसी भी विषय की अभिव्यक्ति के लिए पावर पॉइंट एक महत्वपूर्ण विधा है। विद्यार्थी से लेकर प्राध्यापक तक,उद्योगपति से लेकर वैज्ञानिक तक सभी को अपनी बात को प्रभावी तरीके से कहने या रखने में पावर पॉइंट की आवश्यक पड़ती है। अत: एम.एस पॉवर पॉइंट सॉफ्टवेयर के विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी होने से हम अपनी प्रस्तुति प्रभावी रूप से दे सकते हैं।

(1) प्रस्तुतिकरण की आवश्यकता क्यों : (i) किसी कम्पनी में भर्ती के दौरान आपके कौशल, योग्यता और अनुभव को बेहतर ढंग से समझाने के लिए। (ii) अपने संभावित ग्राहक को अपने उत्पाद या सेवा की खूबियों के बारे में बताने के लिए। (iii) व्यवसाय के लिए बैंक से ऋण लेने, ऋण चुकाने, राशि के औचित्य और व्यय आदि के लिए।

(2) प्रस्तुतिकरण में ध्यान रखने योग्य बातें: (i) प्रस्तुतीकरण में पहले स्लाइड की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, जिसमें कम से कम शब्द हों तथा ग्राफ/चार्ट आदि का उपयोग हो। (ii) टेक्स्ट का फॉंट साइज़ 24/28 न्यूनतम (अंग्रेजी/हिंदी) होना चाहिए। एक लाइन में सात (बड़े शब्द) या दस (छोटे शब्द) शब्द से ज्यादा न हों। (iii) स्मार्ट-आर्ट ग्राफ़िक्स तथा टेक्स्ट एनीमेशन का उपयोग करें।

(3) एम.एस. पावरपॉइंट क्या है ? : यह एक प्रस्तुतिकरण सॉफ्टवेयर है, जो एम.एस.ऑफिस पैकेज का एक भाग है। इसे कंप्यूटर में इसके आइकॉन पर डबल क्लिक करके ओपन किया जा सकता है। यहाँ पर आप या तो blank presentation या फिर पॉवर पॉइंट में इन्स्टाल कोई भी टेम्पलेट को क्लिक करके नया प्रेजेंटेशन शुरू कर सकते हैं।

(4) स्लाइड ले आउट, स्लाइड डिज़ाइन, स्लाइड ट्रांज़िशन : पॉवर पॉइंट में स्लाइड तैयार की जाती हैं, जो एक पेज की तरह होती है। पॉवर पॉइंट में विभिन्न प्रकार के तैयार स्लाइड लेआउट उपलब्ध हैं, जिसे पॉवर पॉइंट को ओपन करने के बाद "इन्सर्ट मेनू "में "न्यूस्लाइड" आइकॉन पर क्लिक करने पर विभिन्न लेआउट का विंडो खुल जाता है, जिसमें से आप अपनी आवश्यकता के अनुसार किसी भी स्लाइड लेआउट का चयन करके उसे इन्सर्ट कर सकते हैं। विभिन्न स्लाइड लेआउट निम्नानुसार हैं: (i) टाइटल स्लाइड: यह प्रथम स्लाइड है, जिसमें प्रस्तुतिकरण का शीर्षक, प्रस्तुतकर्ता का नाम तथा संस्था का नाम आदि दिये जाते हैं। (ii) सेक्शन हैडर स्लाइड: यदि प्रस्तुति में एक से ज्यादा उप विषय हों तो प्रत्येक सेक्शन के लिए इस स्लाइड लेआउट का चयन करें। (iii) तुलनात्मक स्लाइड: यदि आप किन्हीं दो विषयवस्तु पर तुलना दिखाना चाहते हैं, तो इस स्लाइड लेआउट का चयन कर सकते हैं। (iv) ब्लेंक स्लाइड: किसी चित्र या ग्राफ को पूरी स्लाइड में दिखाते समय लेआउट चयन के लिए उपयोग करते हैं। (v) कंटेंट विथ कैप्शन स्लाइड: विषयवस्तु के साथ कैप्शन देना हो तो इस स्लाइड का चयन कर सकते हैं। (vi) पिक्चर एंड कैप्शन स्लाइड: चित्र के साथ कैप्शन देने के लिए इस स्लाइड लेआउट का चयन करते हैं। (vii) तीन कॉलम स्लाइड: स्लाइड में अपने विषयवस्तु को 03 कॉलम में दिखाना चाहते हैं तो, इस स्लाइड लेआउट का चयन कर सकते हैं।

(5) प्रस्तुति के विभिन्न व्यूज: पॉवरपॉइंट में स्लाइड तैयार करते समय स्लाइड्स को विभिन्न प्रकार से देखने के लिए व्यूज लेआउट का उपयोग किया जाता है। इसके लिए व्यू (view) मेनू में क्लिक करने पर मेनू के नीचे बायीं तरफ "प्रेजेंटेशन व्यूज" के अंतर्गत निम्न प्रेजेंटेशन व्यू उपलब्ध होते हैं- (i) इस प्रेजेंटेशन व्यू में स्क्रीन ऊर्ध्वाधर रेखा द्वारा दो विंडो में बंट जाती है, बांयी तरफ की छोटी विंडो में सभी स्लाइड्स छोटे रूप में दिखती हैं तथा दांयीं तरफ की बड़ी विंडो में वर्तमान (current slide) दिखती है, जिसमें आप अपनी

विषयवस्तु को लिखते या जोड़ते हैं। (ii) आउटलाइन : इस प्रेजेंटेशन व्यू में भी स्क्रीन उपरोक्तानुसार दो विंडो में बंट जाती है, परन्तु इस व्यू में बांयी तरफ की विंडो में प्रत्येक स्लाइड का टाइटल दिखता है। यह व्यू तब काम आता है जब हम अपने प्रस्तुतिकरण को तैयार करने के बाद इसका पुनरावलोकन (रिव्यु) करते हैं। (iii) स्लाइड सॉर्टर: इस प्रेजेंटेशन व्यू में एक साथ कई सारी स्लाइड को छोटे रूप में स्क्रीन पर देख सकते हैं, नेविगेट कर सकते हैं, स्लाइड का क्रम बदल सकते हैं, नई जोड़ सकते हैं, स्लाइड को डिलीट कर सकते हैं अथवा किसी स्लाइड पर डबल क्लिक करके उस स्लाइड को एडिट के लिए नार्मल या आउटलाइन व्यू में खोल सकते हैं। (iv) नोट्स पेजेस : इस प्रेजेंटेशन व्यू का चयन करने से वर्तमान स्लाइड नोट्स विंडो के साथ खुल जाती है, जिसमें आप विषय वस्तु या नोट्स में एडिटिंग कर सकते हैं। (v) रीडिंग व्यू: इस प्रेजेंटेशन व्यू का चयन करने पर यह स्लाइड शो मोड में खुल जाती है, जिससे आप इसे वास्तविक प्रस्तुति में किस प्रकार दिखेगी, यह देख कर आवश्यक एडिटिंग करना हो तो कर सकते हैं।

(6) स्मार्ट-आर्ट ग्राफ़िक्स का उपयोग: पॉवरपॉइंट 2007 के संस्करण में स्मार्ट आर्ट ग्राफ़िक्स का फीचर जोड़ा गया हैं, स्मार्ट आर्ट में विभिन्न प्रकार के आर्ट ग्राफ़िक्स उपलब्ध हैं, जिन्हें आप अपनी विषयवस्तु के अनुसार किसी भी एक स्मार्ट आर्ट ग्राफ़िक्स को एक स्लाइड में जोड़ सकते हैं। स्मार्ट आर्ट को स्लाइड में जोड़ने के लिए "टाइटल स्लाइड" या "ब्लेंक स्लाइड" का चयन करें तथा इन्सर्ट मेनू क्लिक करने के बाद मेनू के नीचे "ribben tab" खुल जाते हैं। इसमें "illustration" tab में से स्मार्ट आर्ट आइकॉन को क्लिक करने पर एक विंडो खुल जाती है, जिसमें बाएं भाग में विभिन्न प्रकार के स्मार्ट आर्ट ग्राफ़िक्स की लिस्ट दिखती हैं। किसी भी आर्ट ग्राफ़िक्स को क्लिक करने पर उससे सम्बंधित विभिन्न ग्राफ़िक्स मध्य विंडो में दिखने लगते हैं। इन ग्राफ़िक्स में किसी एक पर क्लिक को करने पर इस ग्राफ़िक्स से क्या शो होता है, उसका विवरण दांयी विंडो में आ जाता है। आपकी विषय वस्तु के अनुसार उचित ग्राफ़िक्स का चयन करने पर स्लाइड में ग्राफ़िक्स इन्सर्ट हो जाता है। अब इसमें आपको केवल विषय वस्तु से सम्बंधित टेक्स्ट लिखते जाना है और आपका स्मार्ट आर्ट ग्राफ़िक्स तैयार हो जायेगा।

(7) स्मार्ट आर्ट ग्राफ़िक्स : (i) सूची (List) : यदि आपकी विषय वस्तु लिस्ट या बुलेट प्रकार की है तो इस आर्ट ग्राफ़िक्स का चयन कर सकते हैं, इसमें लगभग 40 प्रकार के आर्ट ग्राफ़िक्स उपलब्ध होते हैं। (ii) प्रक्रिया (Process): यदि आपकी विषय वस्तु एक के बाद दूसरा या प्रोसेस प्रकृति की है तो इस आर्ट ग्राफ़िक्स का चयन कर सकते हैं, इसमें लगभग 48 प्रकार के आर्ट ग्राफ़िक्स उपलब्ध होते हैं। (iii) चक्र (Cycle) : यदि आपकी विषय वस्तु एक के बाद दूसरा एवं चक्र प्रकृति से सम्बंधित है तो इस आर्ट ग्राफ़िक्स का चयन कर सकते हैं, इसमें लगभग 16 प्रकार के आर्ट ग्राफ़िक्स उपलब्ध होते हैं। (iv) पदानुक्रम (Hierarchy) : यदि आपकी विषय वस्तु पद के क्रम की प्रकृति की है तो इस आर्ट ग्राफ़िक्स का चयन कर सकते हैं, इसमें लगभग 15 प्रकार के आर्ट ग्राफ़िक्स उपलब्ध होते हैं। (v) संबंध (Relation) : यदि आपकी विषय वस्तु में विभिन्न अवयवों में किसी प्रकार का सम्बन्ध है तो इसके 40 आर्ट ग्राफ़िक्स में से उचित सम्बन्ध का चयन कर सकते हैं। (vi) आव्यूह (Matrix) : यदि आपकी विषय वस्तु आव्यूह के रूप में दर्शाया जाना है तो इस आर्ट ग्राफ़िक्स में से उचित सम्बन्ध का चयन कर सकते हैं, इसमें लगभग 04 प्रकार के आर्ट ग्राफ़िक्स उपलब्ध होते हैं। (vii) पिरामिड (Pyramid) : यदि आपकी विषय वस्तु को ऊपर बढ़ते हुए या नीचे घटते हुए दिखाना है तो इस आर्ट ग्राफ़िक्स में से उचित सम्बन्ध का चयन कर सकते हैं, इसमें लगभग 04 प्रकार के आर्ट ग्राफ़िक्स उपलब्ध होते हैं। (viii) चित्र (Picture) : यदि आपकी विषय वस्तु के विभिन्न अवयवों साथ चित्र अलग अलग चित्र के माध्यम से समझाया जाना है तो इस आर्ट ग्राफ़िक्स का चयन कर सकते हैं, इसमें लगभग 09 प्रकार के आर्ट ग्राफ़िक्स उपलब्ध होते हैं।

(8) चित्र को सम्मिलित करना: "InsertMenu" (इन्सर्टमेनू) पर क्लिक करें। अब "imagetab" में "picture" आइकॉन पर क्लिक करने पर "Insert Picture From" में दो आप्शन दिखेंगे : (i) डिवाइस: यदि आपके पास डिवाइस/हार्डडिस्क में से चित्र को जोड़ना या इन्सर्ट करना है तो इस विकल्प का चयन करें। इस पर क्लिक करने पर एक विंडो खुल जाता है, जिसमें से आप चित्र को फोल्डर में से चयनित कर ओपन बटन पर क्लिक करने पर चित्र स्लाइड में जुड़ जाता है। (ii) ऑनलाइन पिक्चर: यदि आपको किसी चित्र को इन्टरनेट से ऑनलाइन ढूंढकर जोड़ना है तो इस विकल्प का उपयोग करें।

(9) प्रस्तुतिकरण को सुरक्षित (save) करना: आपके प्रस्तुतिकरण को सुरक्षित (सेव) करने के लिए “फाइल मेनू” पर क्लिक करें, एक नयी विंडो खुलेगी जिसमें से “Save” या “Saveas” पर क्लिक करने पर एक और विंडो खुलेगी जिसमें आप “Browse” बटन पर क्लिक करें। एक और विंडो खुलेगी जिसमें आप अपना फोल्डर चयनित कर फाइल का नाम टाइप करें तथा “save” बटन पर क्लिक करें, आपके फाइल सेव हो जायेगी।

(10) स्लाइड शो: प्रस्तुति के लिए आपको “F5” फंक्शन key को दबाने पर स्लाइड शो पहली स्लाइड से शुरू हो जाता है। इसे आप slide show menu से “slide show from beginning” या “slide show from current slide” विकल्प के माध्यम से आवश्यतानुसार स्लाइड शो कर सकते हैं। “Esc” key को दबाने से स्लाइड शो को कभी भी ख़त्म या रोक सकते हैं। स्लाइड शो के दौरान आप स्क्रीन पर सबसे नीचे मेनू से “peni con” पर क्लिक करके high lighter, pen या laser pen को चयनित कर उसे उपयोग कर सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा :

स्मरणीय पुण्य आत्माएं :

अगस्त्यः कंबुकौण्डिन्यौ राजेन्द्रश्चोलवंशजः
अशोकः पुश्यमित्रश्च खारवेलः सुनीतिमान् ॥

श्रीमद्भगवतगीता

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥

योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है, शास्त्रज्ञानियों से भी श्रेष्ठ माना गया है और सकाम कर्म करने वालों से भी योगी श्रेष्ठ है। इससे हे अर्जुनतू योगी हो !।

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वतः ॥

हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता है और उन यत्न करने वाले योगियों में भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्व से अर्थात यथार्थ रूप से जानता है ॥

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार ये आठ प्रकार से विभाजित मेरी प्रकृति है। यह आठ प्रकार के भेदों वाली तो अपरा अर्थात मेरी जड़ प्रकृति है और हे महाबाहो इससे ! दूसरी को, जिससे यह सम्पूर्ण जगत धारण किया जाता है, मेरी जीवरूपा परा अर्थात चेतन प्रकृति जान॥

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥

हे अर्जुन तू ऐसा समझ कि सम्पूर्ण भूत इन दोनों प्रकृतियों से ही उत्पन्न होने वाले हैं और मैं सम्पूर्ण जगत का प्रभव तथा ! प्रलय हूँ अर्थात् सम्पूर्ण जगत का मूल कारण हूँ॥

जटायु रावण युद्ध :

तब सक्रोध निसिचर खिसिआना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना॥
काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अदभुत करनी॥

तब खिसियाए हुए रावण ने क्रोधयुक्त होकर अत्यन्त भयानक कटार निकाली और उससे जटायु के पंख काट डाले। पक्षी (जटायु) श्री रामजी की अद्भुत लीला का स्मरण करके पृथ्वी पर गिर पड़ा॥

राम की चिंता एवं विलाप :

रघुपति अनुजहि आवत देखी। बाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी॥
जनकसुता परिहरिहु अकेली। आयहु तात बचन मम पेली॥

श्री रघुनाथजी ने छोटे भाई लक्ष्मणजी को आते देखकर ब्राह्य रूप में बहुत चिंता की हे भाई! तुमने जानकी को अकेला छोड़ दिया और मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर यहाँ चले आए॥

निसिचर निकर फिरहिं बन माहीं। मम मन सीता आश्रम नाहीं॥
गहि पद कमल अनुज कर जोरी। कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी॥

राक्षसों के झुंड वन में फिरते रहते हैं। मेरे मन में ऐसा आता है कि सीता आश्रम में नहीं है। छोटे भाई लक्ष्मणजी ने श्री रामजी के चरण कमलों को पकड़कर हाथ जोड़कर कहा- हे नाथ! मेरा कुछ भी दोष नहीं है॥

हा गुन खानि जानकी सीता। रूप सील ब्रत नेम पुनीता॥
लछिमन समुझाए बहु भाँति। पूछत चले लता तरु पाँती॥

(वे विलाप करने लगे-) हा गुणों की खान जानकी! हा रूप, शील, व्रत और नियमों में पवित्र सीते! लक्ष्मणजी ने बहुत प्रकार से समझाया। तब श्री रामजी लताओं और वृक्षों की पंक्तियों से पूछते हुए चले॥

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी॥
खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रबीना॥

हे पक्षियों! हे पशुओं! हे भौंरों की पंक्तियों! तुमने कहीं मृगनयनी सीता को देखा है ? खंजन, तोता, कबूतर, हिरन, मछली, भौंरों का समूह, प्रवीण कोयल॥

कुंद कली दाड़िम दामिनी। कमल सरद ससि अहिभामिनी॥
बरुन पास मनोज धनु हंसा। गज केहरि निज सुनत प्रसंसा॥

कुन्दकली, अनार, बिजली, कमल, शरद् का चंद्रमा और नागिनी, अरुण का पाश, कामदेव का धनुष, हंस, गज और सिंह- ये सब आज अपनी प्रशंसा सुन रहे हैं॥

श्री फल कनक कदलि हरषाहीं। नेकु न संक सकुच मन माहीं॥
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू। हरषे सकल पाइ जनु राजू॥

बेल, सुवर्ण और केला हर्षित हो रहे हैं। इनके मन में जरा भी शंका और संकोच नहीं है। हे जानकी! सुनो, तुम्हारे बिना ये सब आज ऐसे हर्षित हैं, मानो राज पा गए हों।

किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं। प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ॥

एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी। मनहुँ महा बिरही अति कामी ॥

तुमसे यह अनख (स्पर्धा) कैसे सही जाती है ? हे प्रिये! तुम शीघ्र ही प्रकट क्यों नहीं होती ? इस प्रकार श्री रामजी सीताजी को खोजते हुए विलाप करते हैं, मानो कोई महाविरही और अत्यंत कामी पुरुष हो ॥

गीधराज से भेंट :

पूरकनाम राम सुख रासी। मनुजचरित कर अज अबिनासी ॥

आगें परा गीधपति देखा। सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा ॥

पूर्णकाम, आनंद की राशि, अजन्मा और अविनाशी श्री रामजी मनुष्यों के चरित्र कर रहे हैं। आगे (जाने पर) उन्होंने गृध्रपति जटायु को पड़ा देखा। वह श्री रामजी के चरणों का स्मरण कर रहा था, जिनमें (ध्वजा, कुलिश आदि की) रेखाएँ (चिह्न) हैं ॥

कर सरोज सिर परसेउ कृपासिंधु रघुबीर।

निरखि राम छबि धाम मुख बिगत भई सब पीर ॥

कृपा सागर श्री रघुवीर ने अपने करकमल से उसके सिर का स्पर्श किया। शोभाधाम श्री रामजी का मुख देखकर उसकी सब पीड़ा जाती रही ॥

तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा ॥

नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही ॥

तब धीरज धरकर गीध ने यह वचन कहा- हे भव के भय का नाश करने वाले श्री रामजी! सुनिए। हे नाथ! रावण ने मेरी यह दशा की है। उसी दुष्ट ने जानकीजी को हर लिया है ॥

लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाईं। बिलपति अति कुररी की नाईं ॥

दरस लाग प्रभु राखेउँ प्राना। चलन चहत अब कृपानिधाना ॥

हे गोसाईं! वह उन्हें लेकर दक्षिण दिशा को गया है। सीताजी कुररी (कुर्ज) की तरह अत्यंत विलाप कर रही थीं। हे प्रभो! आपके दर्शनों के लिए ही प्राण रोक रखे थे। हे कृपानिधान! अब ये चलना ही चाहते हैं ॥

राम कहा तनु राखहु ताता। मुख मुसुकाइ कही तेहिं बाता ॥

जाकर नाम मरत मुख आवा। अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा ॥

श्री रामचंद्रजी ने कहा- हे तात! शरीर को बनाए रखिए। तब उसने मुस्कुराते हुए मुँह से यह बात कही- मरते समय जिनका नाम मुख में आ जाने से अधम (महान् पापी) भी मुक्त हो जाता है, ऐसा वेद गाते हैं-॥

सो मम लोचन गोचर आगें। राखौं देह नाथ केहि खाँगें ॥

जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज तें गति पाई ॥

वही (आप) मेरे नेत्रों के विषय होकर सामने खड़े हैं। हे नाथ! अब मैं किस कमी (की पूर्ति) के लिए देह को रखूँ? नेत्रों में जल भरकर श्री रघुनाथजी कहने लगे- हे तात! आपने अपने श्रेष्ठ कर्मों से (दुर्लभ) गति पाई है ॥

बोध वाक्य – "सौंदर्य और विलास के आवरण में महत्त्वाकांक्षा उसी प्रकार पोषित होती है जैसे म्यान में तलवार। "-रामकुमार वर्मा

बोध कथा : **लालच बुरी बला**

एक बार दो भाई कारोबार के लिए दूसरे नगर जा रहे थे। यात्रा के लिए एक ऊंट था, सामान के लिए कुछ थैले थे और सुरक्षा के लिए एक बंदूक भी थी। रास्ते में जंगल पड़ता था, जिसमें एक जगह दो रास्ते निकलते थे। दोनों भाई उनमें से एक रास्ते पर आगे बढ़े कि अचानक सामने एक फकीर हाथ फैलाए खड़ा हो गया। व्यापारी भाइयों को जिस रास्ते जाना था, उधर जाने से उसने रोकने की कोशिश की और कहा इस रास्ते में लालच का राक्षस बैठा है, तुम्हे खा जाएगा। भाइयों ने फकीर की बात हंसी में उड़ा दी और वह उसी रास्ते चल दिए। वे अभी कुछ दूर ही चले थे कि उन्हें मार्ग पर एक खजाना पड़ा दिखा। उनकी आंखें चमक गई। उसे देखकर बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा, 'फकीर हमें मूर्ख बना रहा था। इस रास्ते से आने पर तो हमें बहुत लाभ हुआ। तुम ऐसा करो कि वापस जाओ और खजाना समेटने के लिए दस बारह ऊंट ले आओ। मैं बंदूक लेकर खजाने की हिफाजत करता हूं। 'छोटा भाई नगर पहुंचा। साथ में ऊंट और रास्ते के लिए भोजन लिया। फिर सोचा कि यदि इस भोजन में जहर मिला दूं, तो सारा खजाना मेरा हो जाएगा और उसने भोजन में जहर मिला दिया। इधर बड़े भाई के मन में भी लोभ जागा। जैसे ही छोटा भाई पहुंचा, पेड़ के पीछे से बड़े भाई ने गोली चला दी। छोटा भाई वहीं ढ़ेर हो गया। बडे ने सोचा पहले भोजन करें, फिर सामान समेटें। उसने पहला कौर मुंह में रखा ही था कि एक हिचकी आई और वह भी मर गया। कुछ देर बाद जब फकीर उधर से गुजरा तो दोनों भइयों की मृत्यु पर हंसने लगा और बोला - आखिर लालच के राक्षस ने दोनों को खा ही लिया। यदि बात मान लेते तो दोनों भाई जीवित रहते। धन -संपदा का लालच बहुत बुरा होता है।

मासिक गीत / गान:

उठो साथियों समय नहीं है
उठो साथियों समय नहीं है शोभा और श्रृंगार का,
आज चुकाना ऋण है सबको परमप्रभु के प्यार का ।।

जान हथेली पर ले कर के चलना है मैदान में,
फर्क नहीं आने देना है प्रभु जी की शान में ।
सत्य के पीछे मर मिट जाना धर्म यही इन्सान का
(आज चुकाना .. . .)

अत्याचार अनीति झूठ पाखण्डी जनों से लड़ना है,
दैहिक दैविक भौतिक कष्ट को धीरज पूर्वक सहना है।
टूट पड़ो मैदान जंग में खड़ग सम्भाले ज्ञान का
(आज चुकाना .. . .)

प्रभु सेवा सिद्धान्त का पालन करो सभी जी जान से,
मौत का संकट राह में आये डरो नहीं तूफान से।
कभी न भूलें याद करें हम परमप्रभु के एहसान को
(आज चुकाना .. . .)
ज्ञान क्रान्ति का बजा बिगुल बन्दर अंगद हनुमान बनो,
पाँचजन्य श्री कृष्ण का बोला, वीर अर्जुन बलवान बनो।
ग्रन्थ पुराण करें सब चर्चा प्रभु सेवक वीर महान का
(आज चुकाना .. . .)

--------------------------------00 ---------------------------

"मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मों का अध्ययन किया है, परन्तु मुझे उन सब में हिन्दू धर्म ही श्रेठ दिखाई देता है। मेरा विश्वास है कि इसके सामने एक दिन समस्त जगत को सर झुकाना पड़ेगा।" -रोम्या रोला

जून

ज्येष्ठ: शास्त्रों में ज्येष्ठ मास का काफी अधिक महत्व है, क्योंकि इस माह में सबसे बड़े दिन होते हैं। इसके साथ ही इसी माह में भगवान श्री राम की मुलाकात उनके परमभक्त हनुमान जी से हुई थी। इसी कारण इस माह में भगवान बजरंगबली की पूजा करने का विधान है। हनुमान विद्यावान, गुणी और चतुर हैं । उनके जीवन का ध्येय निश्चित है। जब मनुष्य -जीवन का गंतव्य एक बार स्थिर कर लेता है और जीवन का ध्येय सुनिश्चित हो जाता है तब उसकी पूर्ति हेतु योजना बनने लग जाती है ।अपने ध्येय की पूर्ति के लिए कार्यों का चयन करते हैं तब हमारे सामने जीवन के मूल्यों का प्रश्न उत्पन्न होता है। स्वामी विवेकानंद कभी बग्घी हांकने वाला बनाना चाहते थे, क्योंकि उनके पिता का सारथि बग्घी में आगे और ऊंचे स्थान पर बैठता था। बाद में हम जानते है की जब उन्हें जीवन का ध्येय मिल गया तब वे विश्व के पथ प्रदर्शक बने। जीवन का लक्ष्य तय करना एक कसौटी से गुजरना होता है। व्यक्ति का जीवन का ध्येय जैसे ही तय हो जाता है, तब उसके जीवन मूल्य प्रभात के भास्कर के सामान उदित होने लगता हैं ।

योग (भाग दो)

'योग' शब्द 'युज समाधौ' आत्मनेपदी दिवादिगणीय धातु में 'घं' प्रत्यय लगाने से निष्पन्न होता है। इस प्रकार 'योग' शब्द का अर्थ हुआ समाधि अर्थात् चित्त वृत्तियों का निरोध। वैसे 'योग' शब्द 'युजिर योग' तथा 'युज संयमने' धातु से भी निष्पन्न होता है, किन्तु तब इस स्थिति में योग शब्द का अर्थ क्रमशः योगफल, जोड़ तथा नियमन होगा। योग में आत्मा और परमात्मा के विषय में भी कहा गया है। भगवद्गीता में योग शब्द का कई बार प्रयोग हुआ है, कभी अकेले और कभी सविशेषण, जैसे- बुद्धियोग, ज्ञान योग, भक्ति योग, संन्यास योग, कर्मयोग आदि। वेदोत्तर काल में भक्तियोग और हठयोग नाम भी प्रचलित हो गए हैं। पतंजलि योगदर्शन में क्रियायोग शब्द देखने में आता है। पाशुपत योग और माहेश्वर योग जैसे शब्दों के भी प्रसंग मिलते हैं। तात्पर्य यह कि योग के शास्त्रीय स्वरूप, उसके दार्शनिक आधार को सम्यक् रूप से समझना अभ्यास का विषय है। संसार को मिथ्या मानने वाला अद्वैतवादी भी निदिध्याह्न के नाम से उसका समर्थन करता है। अनीश्वरवादी सांख्य विद्वान भी उसका अनुमोदन करता है। बौद्ध ही नहीं, मुस्लिम सूफ़ी और ईसाई भी किसी न किसी प्रकार अपने संप्रदाय की मान्यताओं और दार्शनिक सिद्धांतों के साथ उसका सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं।

योग के अन्तरंग पक्ष : महर्षि पतंजलि ने अष्टांग को इस प्रकार बताया है-यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहार धारणाध्यानसमाधयोऽष्टांगानि। योग के आठ अंगों में प्रथम पाँच बहिरंग तथा अन्य तीन अन्तरंग में आते हैं। इनमें पाँच वहिरंग हैं जो प्रथम वर्ष में पढ़ चुके हैं।

योग के इन आठ अंगों में अंतिम तीन - **धारणा, ध्यान और समाधि** इसकी अन्तरंग उच्चावस्था है। **(1) धारणा (एकाग्रता):** एक ही लक्ष्य पर ध्यान लगाना। किसी भी भगवत-प्रसंग में मन को लगा देना धारणा कहलाता है । मन को किसी मन्त्र अथवा दिव्या रूप पर स्थापित करो । यह ध्यान में पहुँचने की सीढी है। **(2) ध्यान :** ध्यान सर्वव्यापक और सर्वानन्दमय परमात्मा को प्रणाम है। सत, चित आनंद स्वरुप का गहन चिंतन है। ध्यान की अवस्था में साधक ईश्वरीय चेतना में डूब जाता है और इससे वह उच्चतर अतीन्द्रिय अवस्था को प्राप्त करता है। ध्यान एक ऊंचाई मापक यंत्र के सामान है जो हमें बताता है कि हम अध्यात्मिक उन्नति कर रहे है या अवनति की ओर जा रहे हैं । वास्तविक ध्यान एक अविच्छिन्न तेल धारा के सामान है। जब मन विचार शून्य नहीं हो जाता, विचार एक विषय की ओर बिना किसी चंचलता अथवा व्यवधान के प्रवाहित होते रहते हैं। ध्यान की तीन अवस्थाए हैं - (i) अनेक विचारों को एक विचार के साथ जोड़ना। हम अपने भीतर को पावित्र्य से भर लें। ये स्पन्दन हमारी सारी दुर्बलताएं नष्ट कर देता है (ii) उस एक ही विचार का चिंतन करना। हम अपने मन को शांत बनाए रखें और समग्र विश्व से शान्ति बनाए रखें। हम साक्षी या द्रष्टा की भूमिका ग्रहण का लें और अपने मन को समस्त बहिर्मुखी विचारों, ध्वनियों और एनी संवेदनाओं से खींच लें। ध्यान रखना होगा की - केवल बाह्य निर्जनता का आश्रय लेने मात्र से संसार विस्मृत नहीं हो जाता। सच्ची निर्जनता तो वह है , जिसमें साथक स्वयं को ब्रह्म के ध्यान में विलीन कर देता

है। (iii) परमात्मा के संस्पर्श की अनुभूति करना और साथ ही साथ चिंतन के प्रवाह को भी बनाए रखना। और इन सब के अंत में है उच्चतम अवस्था, जिसमें परमात्मा की अवस्थिति की अनुभूति चिंतन के अभाव में होती हैं। **(3) समाधि :** उपनिषदों ने अस्तित्व के विभिन्न धरातलों को तीन भागों में बांटा गया है - **(अ) शुद्ध सार्वभौम चेतना** (ब) **एकता व् अनेकता की मिश्रित चेतना** (स) **अनेकता से युक्त अशुद्ध चेतना।** ध्यान के वस्तु को चैतन्य के साथ विलय करना। यह योग पद्धति की चरम अवस्था है। समाधि की अवस्था के गहन एकांत का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस अवस्था में मन सत्य के प्रकाश को प्राप्त करता है , अत : नकारात्मक भावों का प्रभाव और भी क्षीण हो जाता है। अंततः प्रकाश की छाप मन में इस तरह पड़ती है कि बाहरी प्रभाव अवास्तविक, क्षणिक और नाशवान प्रतीत होने लगते हैं, उनकी क्षमता कम होती जाती है और मन पर उनका प्रभाव समाप्त हो जाता है। सत्य का साक्षात्कार मन में स्थाई आनंद में परिणत हो जाता है। इस तरह प्रेम और घृणा से मुक्त, सांसारिक राग और विराग , उत्थान और पतन से अप्रभावित , असरल किन्तु उच्च लक्ष्य की ओर उन्मुख मन वीरता एवं निरद्वंद्वता पूर्वक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है तथा जीवन -सागर की दारुण लहरों के बीच ठोस चट्टान की भांति स्थिर रहता है। उसका चरित्र इतना दृढ़ और वीरतापूर्ण होता है कि वह समाज से प्रभावित न होकर समाज को अपने ढंग से प्रभावित करता है । ऐसे व्यक्तिओं को जीवन मुक्त कहा जता है । वे संसार में रहते हुए भी सांसारिक बन्धनों से इसी जीवन में मुक्त हो जाते हैं।

योगश्चित्तिवृत्तिनिरोध:- चित्त की वृत्तियों का निरोध योग है। अर्थात चित्त की वृत्तियों का सर्वथा रुक जाना योग है। यह स्थिति कब आती है ? जब चित्त की वृत्तियों का पूर्ण निरोध हो जाता है, उस समय द्रष्टा (आत्मा) अपने स्वरूप में स्थिति हो जाती है; अर्थात केवल्य अवस्था को प्राप्त हो जाता है। यदि चित्त वृत्तियों का अंश मात्र भी निरोध शेष रह जाता है तब तक द्रष्टा अपने चित्त की वृत्ति के अनुरूप अपना स्वरूप समझता रहता है, उसे अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान नही होता है। फिर प्रश्न उठता है, यह होता कैसे है ? ये वृत्तियाँ कितने प्रकार की होती हैं। चित्त की वृत्तियाँ क्या हैं, आदि-आदि अनेक प्रश्न उठना जिज्ञासु के लिये स्वाभाविक है।

चित्त वृत्तियाँ- वैसे तो चित्त वृत्तियाँ असंख्य हैं किन्तु मोटे तौर पर उन्हें पाँच प्रकार से बाँटा जा सकता है। **चित्त वृत्तियाँ पाँच हैं-** ‘‘प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतय:’’ (1) प्रमाण (2) विपर्यय (3) विकल्प, (4) निद्रा- स्वप्न (5) स्मृति। यह सभी वृत्तियाँ दो प्रकार की होती हैं- ‘‘वृत्तय:पंचतय: क्लिष्टाक्लिष्टा ’’। क्लिष्ट अर्थात अविद्या आदि क्लेषों को पुष्ट करने वाली और योग साधना में विघ्न रूप होती हैं। अक्लिष्ट-क्लेशों को क्षय करने वाली और योग साधन में सहायक होती हैं। **(1) प्रमाण के तीन प्रकार हैं-** (i) **प्रत्यक्ष प्रमाण वृत्तियाँ**- मन और इद्रियों के जानने में आने वाले जितने भी पदार्थ हैं, जो वैराग्य के विरोधी भावों को बढ़ाने वाले हैं। उनसे होने वाला प्रमाण वृति क्लिष्ट है। (ii) **अनुमान प्रमाण-** किसी प्रत्यक्ष दर्शन के सहारे युक्तियों द्वारा जो अप्रत्यक्ष पदार्थ के स्वरूप का ज्ञान होता है, वह अनुमान से होने वाली प्रमाण वृत्ति है। (iii) **आगम प्रमाण-** वेद, शास्त्र और आप्त पुरुषों के वचन को आगम कहते है। (2) **विपर्यय-** ‘विपर्ययोमिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम’॥ जो उस वस्तु के स्वरूप में प्रतिष्ठित नहीं है, उसे उसमें मानना ऐसा मिथ्या ज्ञान विपर्यय है। अर्थात् विपरीत ज्ञान विपर्यय है। विपर्यय और अविद्या में कभी-कभी एकता ज्ञात होती है किन्तु ऐसा नहीं है। विपर्यय वृत्ति का नाश तो प्रमाण वृत्ति से हो जाता है किन्तु अविद्या चित्तवृत्ति नहीं मानी जाती। अविद्या तो केवल्य अवस्था तक निरनतर विद्यमान रहती है। अत: यही मानना ठीक है कि चित्त का धर्मरूप विपर्यय अन्य पदार्थ है तथा पुरुष और प्रकृति के संयोग के कारण रूपा अविद्या उससे सर्वथा भिन्न है। अविद्या का नाश असम्प्रज्ञात योग से होता है (जब विवेक ज्ञान उदित होता है तो योगी ऋतम्भरा हो जाता है, उक्त प्रकार से उस योगी के अविद्या के पाँचों क्लेश (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश) तथा शुक्ल, कृष्ण और मिश्रित तीनों प्रकार के कर्म संस्कार समूल नष्ट हो जाते हैं। ‘तत:क्लेशकर्मनिवृति’। अत: यह मानना उचित है कि चित्त का धर्मरूप विपर्यय वृत्ति अन्य पदार्थ है तथा पुरुष और प्रकृति के संयोग की कारण रूपा अविद्या उससे सर्वथा भिन्न है। **(3) विकल्प-** ‘शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्प’। अर्थात् जैसे कोई मनुष्य भगवान के रूप का ध्यान करता है पर जिस रूप का ध्यान करता है उसे न तो उसने देखा है, न वेद-शास्त्र सम्मत है, और न ही वह भगवान का वास्तविक स्वरुप है केवल कल्पना मात्र है, विकल्प है। किन्तु भगवान के ध्यान, चिन्तन में सहायक होने से अक्लिष्ट है। **(4) निद्रा-** ‘अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा’- ज्ञान के अभाव का ज्ञान जिस चित्तवृत्ति के आश्रित रहता है, वह निद्रावृत्ति है।’’ निद्रा

भी चित्त की वृत्तिविशेष है। कई दर्शनकार निद्रा को वृत्ति नहीं मानते, इसे सुषुप्ति अन्तर्गत मानते हैं। गीता में आया है- युक्ताहार विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु । युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दु:खहा ॥ **(5) स्मृति-** अनुभूतिविषयासम्प्रमोष: स्मृति:- उपर्युक्त प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, और निद्रा या स्वप्न इन चार प्रकार की वृत्तियों द्वारा अनुभव में आये हुए विषयों से जो संस्कार चित्त में पड़े हैं, उनका पुन: किसी निमित्त को पाकर स्फुरित हो जाना ही स्मृति है ।

चितवृत्तियों का निरोध- अब इन चित्तवृत्तियों का निरोध कैसे करें ? योगी कहता है 'अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोध:'। गीता कहती है- 'अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृहयते । चित्तवृत्तियों के निरोध के दो प्रकार हैं- **(i) अभ्यास और (ii) वैराग्य** । सामान्यत: चित्तवृत्तियों का प्रवाह परम्परागत संस्कारों के बल से सांसारिक भोगों की ओर बहता चलता है, उस प्रवाह को रोकने का उपाय **'वैराग्य'** तथा उसे 'कल्याण' मार्ग में ले जाने का उपाय **'अभ्यास'** है । **(i) अभ्यास** - अभ्यास क्या है ? 'तत्र स्थितौ यत्नोऽभ्यास' अर्थात जो स्वभाव से चंचल है ऐसे मन को किसी एक ध्येय में स्थिर करने के लिये बारम्बार चेष्टा करते रहने का नाम अभ्यास है । योग का अभ्यास बिना उकताये, बिना समय सीमा के निश्चित किये निष्ठापूर्वक करते रहना है । **(ii) वैराग्य** - वैराग्य क्या है? 'दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम'। यहाँ दो शब्द हैं, **(i) दृष्टा** और **(ii) अनुश्रविक** । **(i) दृष्टा** - अन्त:करण और इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव में आनेवाले इस लोक के समस्त भोगों का समाहार यहाँ **दृष्ट** शब्द में आया है । शुद्ध निर्विकार, कूटस्थ एवं असंग है । केवल चेतनामात्र ही जिसका स्वरूप है तो भी बुद्धि के सम्बध से बुद्धि तत्व के अनुरूप देखने वाला होने से **दृष्टा** कहलाता है । बुद्धिवृत्ति में रहकर जब तक आत्मतत्व दृष्ट बना रहता है तभी तक वह दृष्टा है, स्रष्टा है । दृष्य से सम्बन्ध होते ही वह चेतन मात्र, सर्वथा शुद्ध और निर्विकार हो जाता है । **(ii) अनुश्रविक** - जो प्रत्यक्ष उपलब्ध नहीं है, जिनकी बड़ाई वेद, शास्त्र उपनिषद और भोगों का अनुभव करने वाले पुरुषों से सुनी गयी है, ऐसे भोग्य विषयों का समाहार **अनुश्रविक** है । अत: यहाँ कहा जा सकता है कि देखे सुने हुए विषयों में सर्वथा तृष्णा रहित चित की जो वशीकार नामक अवस्था है, वह वैराग्य (तत्परमं पुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यम) है ।

चित्त के वशीकार संज्ञा - अन्त:करण और इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष में आने वाले इस लोक के समस्त भोगों का समाहार यहाँ दृष्ट शब्द में किया गया है । कामना रहित चित्त की जो वशीकार नामक अवस्था है, वह अपर वैराग्य है । संज्ञारूप वैराग्य से जब साधक की विषय कामना का आभाव हो जाता है और उसके चित्त का प्रवाह समान भाव से अपने ध्येय के अनुभव में एकाग्र हो जाता है, उसके बाद समाधि परिपक्व होने पर प्रकृति और पुरुष विषयक विवेक ज्ञान प्रकट होता है । उसके होने से जब साधक की तीनों गुणों (सत, रज, तम) और उनके कार्य में किसी प्रकार की किंचिन्मात्र भी तृष्णा नहीं रहती, जब वह सर्वथा आप्तकाम निष्काम हो जाता है, ऐसी सर्वथा रागरहित अवस्था को **अपर-वैराग्य** कहते हैं । गीता कहती है जब योगी न तो इन्द्रियों के विषयों में और न कर्मों में ही आसक्त होता है तथा सब प्रकार के संकल्पों का भली भांति त्याग कर देता है तब वह **योगारूढ़** कहलाता है **।**

सम्प्राप्त योग- विचार, वितर्क, आनन्द और अस्मिता इन चारों के सम्बन्ध से युक्त (चित्तवृति समाधान) 'सम्प्रज्ञात:', सम्प्रज्ञात योग है । सम्प्रज्ञात योग के ध्येय तीन पदार्थ माने गये हैं, **ग्राह्य** (इन्द्रियों के स्थूल एवं सूक्ष्म विषय), **ग्रहण** (इन्द्रियों और अन्त:करण), ग्रहीता (बुद्धि के साथ एकरूप पुरुष) । जब तक शब्द, अर्थ और ज्ञान का विकल्प वर्तमान है, तब तक **सवितर्क समाधि** है, जब यह विकल्प समाप्त हो जाता है, तब निर्वितर्क समाधि हैं । इसी को सविचार और निर्विचार कहा जाता है । कभी-कभी निर्विचार समाधि में आनन्द का अनुभव और अहंकार का सम्बन्ध रहता है तब वह आनन्दानुगता समाधि है ।

निर्वीज समाधि या कैवल्य अवस्था- प्रकृति के संयोग का अभाव हो जाने पर जब द्रष्टा की अपने स्वरूप में स्थिति हो जाती है, उसे कैवल्य अवस्था कहते हैं । **(i) योगभ्रष्ट साधक-** कैवल्य पद की प्राप्ति होने के पहले जिनकी मृत्यु हो गयी, वे योगकुल में जन्म ग्रहण करते हैं; तब उनको पूर्वजन्म के योगाभ्यास विषयक संस्कारों के प्रभाव से अपने स्वरूप या स्थिति का तत्काल ज्ञान हो जाता है । ऐसे साधक योगभ्रष्ट कहलाते हैं । **(ii) सिद्धि क्या है** - किसी भी साधन में प्रवृत्त होने का और अविचल भाव से उसमें लगे रहने का मूल कारण श्रद्धा (भक्तिपूर्वक विश्वास) ही है । ''श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक:'। श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रज्ञापूर्वक, (क्रम) से सिद्धि प्राप्त होती है।' **(iii) श्रद्धा एवं वीर्य-** इन दोनों का संयोग मिलने पर साधक की स्मरण शक्ति बलवली हो जाती है । उसमें योग साधन के

संस्कारों का ही बारम्बार प्राकट्य होता रहता है। अत: उसका मन विषयों से विरक्त होकर समाहित हो जाता है; इसी को समाधि कहते हैं। इसमें अन्त:करण के स्वच्छ हो जाने पर साधक की बुद्धि 'ऋतम्भरा' सत्य को धारण करने वाली हो जाती है। गीता में कहा है, 'श्रद्धा वान लभते ज्ञानं तत्पर: संयतेन्द्रिय: । ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिभचिरेणधिगच्छति'।।

सिद्धि प्राप्त करने हेतु योगी को अभ्यास और वैराग्य में तीव्रता लानी होती है। अभ्यास और वैराग्य का जो क्रियात्मक बाह्य स्वरूप है वह **'वेग'** नाम से जाना जाता है। 'ईश्वर प्राणिधनाद्धा'। ईश्वर प्राणिधान में भी निर्वीज समाधि की सिद्धि शीघ्र प्राप्ति होती है।

योगमार्ग में नौ प्रकार के विघ्न : इस भक्ति, नाम जप से विघ्नों का अभाव (अन्तरायाभाव:) होता है तथा अन्तरात्मा के स्वरूप का ज्ञान (प्रत्यच्केतनाधिगम) होता है। योग साधना में लगे हुए साधक के चित्त में विक्षेप उत्पन्न करने के लिये उसे साधना से विचलित करने के लिये योगमार्ग में नौ प्रकार के बिघ्न आते हैं- **(1) व्यधि-** शरीर, इन्द्रियों और चित्त में विकार (रोग) पैदा करना या हो जाना, **(2) स्त्यान-** अकर्मण्यता, साधन में प्रवृति न होना, **(3) संशय-** फल में सन्देह, **(4) प्रमाद-** योग साधना में (बे-परवाह), **(5) आलस्य-** चित्त और शरीर में भारीपन, **(6) अविरति-** इन्दियों में आसक्ति एवं वैराग्य का अभाव, **(7) अलब्ध भूमिकत्व-** साधना करने पर भी योगभूमि की अप्राप्ति, **(8) भ्रान्तिदर्शन-** मिथ्याज्ञान हो जाना, **(9) अनवस्थितत्व-** चित की एकाग्रता न होना।

योगमार्ग में अन्य पाँच विघ्न भी हैं- दु:ख, दौर्मनस्य, अंगमेजयत्व, श्वांस और प्रश्वांस। **(अ) दु:ख-** आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक। **आध्यात्मिक** - काम, क्रोधादि के कारण व्याधि अथवा इन्द्रियों के कारण जो शरीर में ताप या पीड़ा होती है ,उसे आध्यात्मिक दु:ख कहते हैं। **आधिभैतिक**- मनुष्य,पशु, पक्षी, सिंह, व्याघ्र, मच्छर और अन्यान्य जीवों के कारण होने वाली पीड़ा का नाम 'अधिभौतिक दु:ख' है। **आधिदैविक**- सर्दी, गर्मी, वर्षा, भूकम्प आदि दैवी घटना से होनेवाली पीड़ा का नाम 'आधिदैविक' दु:ख है। **(ब) दौर्मनस्य-** इच्छा की पूर्ति न होने के कारण मन में क्षोभ होता है, उसे 'दौर्मनस्य' कहते हैं। **(स) अंगमेजयत्व**- शरीर के अंगों में कम्प होना 'अंगमेजयत्व' है। **(द) श्वांस**- बिना इच्छा के बाहर की वायु का शरीर के भीतर प्रवेश करना। **(इ) प्रश्वांस-** बिना इच्छा के भीतर की वायु का बाहर निकलना।

चित्त शुद्ध के दो उपाय हैं - **(1) एकातत्वाभ्यास-** इसके अन्तर्गत सुख, दुख, पुण्य-पाप, जिनके विषय हैं, उन्हें चित्त के राग, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, क्रोध और मलों का नाशकर चित्त को शुद्ध करना चाहिए। यह अभ्यास से होता है। **(2) प्राणायाम** -प्राणवायु को शरीर से बाहर निकालना तथा रोकना। रेचक, पूरक, कुम्भक का यथा साध्य नियमानुसार अभ्यास करना। इससे साधक को विषयों का अनुभव कराने वाली विषयवती प्रवृति (योग-3-36) जगती है और योगमार्ग में उत्साह बढ़ जाता है। अभ्यास के साधक की स्थिति 'विशोका' वा 'ज्योतिश्मती' की बन जाती है। जिस व्यक्ति के राग-द्वेष सर्वथा नष्ट हो जाते हैं, वह विरक्त होता जाता है। कभी-कभी स्वप्न और निद्रा के ज्ञान भी इसमें सहायक होते हैं क्योंकि चित्त से यदि राग-द्वेष हट गया है तो चित्त और इन्द्रियों में सत्वगुणों की वृद्धि होती है। इसके लिये जिसका जिसमें मन लगे, चित स्थिर हो उसी को ध्यान में लाकर अभ्यास करना चाहिए।

वशीकार- साधक को अभ्यास से प्राप्ति ऐसी स्थिति जिसमें साधक अपने चित्त को सूक्ष्म से सूक्ष्म और बड़े से बड़े पदार्थ पर स्थित कर लेता है। इसे ही सम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं। सम्प्राज्ञात समाधि दो प्रकार की होती है-**(1) सवितर्का (2) निर्वितर्का (3) निर्विचार समाधि** । **(i) सवितर्का-** पदार्थ दो प्रकार के होते हैं - सूक्ष्म और स्थूल। इनमें से स्थूल को भी लक्ष्य बनाकर साधक उसके स्वरूप को जानने को चित्त में धारणा करता है तो पहले अनुभव में नाम, रूप और ज्ञान आता है जो विकल्पों का मिश्रण होता है। इस समाधि को **सवितर्क समाधि** कहते हैं। **(ii) निविर्तका** - स्मृति के भलीभांति लुप्त हो जाने पर रूप, नाम, ज्ञान शून्य हो जाता है, केवल ध्येय मात्र के स्वरूप को प्रत्यक्ष करने की चित्त की स्थिति **निर्वितर्का समाधि** है। इसमें शब्द और प्रतीत का कोई विकल्प नहीं रहता। अत: इसे **'निर्विकल्प'** समाधि भी कहते हैं।

सूक्ष्म ध्येय पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाली समाधि के दो भेद हैं- **(i) सविचार समाधि-** नाम, रूप, ज्ञान के विकल्पों से मिला हुआ जो अनुभव होता है, वह स्थिति सविचार समाधि है। **(ii) निर्विचार समाधि-** जब चित्त के जिन स्वरूप का भी विस्मरण हो जाय तथा मात्र ध्येय का अनुभव हो **निर्विकार समाधि** कहलाती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा :

अनुकरणीय राजकर्ता :

चाणक्यचन्द्रगुप्तौ च विक्रमः शालिवाहनः।

समुद्रगुप्तः श्रीहर्षः शैलेन्द्रो बप्परावलः॥

श्रीमद्भगवतगीता

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।

प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु॥

हे अर्जुनमैं जल में रस हूँ !, चन्द्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ,सम्पूर्ण वेदों में ओंकार हूँ,आकाश में शब्द और पुरुषों में पुरुषत्व हूँ॥

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।

जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु॥

मैं पृथ्वी में पवित्र शब्द,स्पर्श,रूप,रस, गंध और अग्नि में तेज हूँ तथा सम्पूर्ण भूतों में उनका जीवन हूँ और तपस्वियों में तप हूँ॥

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।

बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्॥

हे अर्जुनतू सम्पूर्ण भूतों का सनातन बीज मुझको ही जान। मैं बुद्धिमा !नों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूँ॥

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ॥

हे भरतश्रेष्ठ मैं बलवानों का आसक्ति और कामनाओं से रहित बल अर्थात सामर्थ्य हूँ और सब भूतों में धर्म के ! अनुकूल अर्थात शास्त्र के अनुकूल काम हूँ॥

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्चये।

मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि॥

और भी जो सत्त्व गुण से उत्पन्न होने वाले भाव हैं और जो रजो गुण से होने वाले भाव हैं, उन सबको तू 'मुझसे ही होने वाले हैं' ऐसा जान, परन्तु वास्तव में उनमें मैं और वे मुझमें नहीं हैं॥

रामचरितमानस

शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश:

ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी कें आश्रम पगु धारा॥

सबरी देखि राम गृहँ आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए॥

उदार श्री रामजी उसे गति देकर शबरीजी के आश्रम में पधारे। शबरीजी ने श्री रामचंद्रजी को घर में आए देखा, तब मुनि मतंगजी के वचनों को याद करके उनका मन प्रसन्न हो गया॥

सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला॥

स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई॥

कमल सदृश नेत्र और विशाल भुजाओं वाले, सिर पर जटाओं का मुकुट और हृदय पर वनमाला धारण किए हुए सुंदर, साँवले और गोरे दोनों भाइयों के चरणों में शबरीजी लिपट पड़ीं॥

प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा॥

सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे॥

वे प्रेम में मग्न हो गईं, मुख से वचन नहीं निकलता। बार-बार चरण-कमलों में सिर नवा रही हैं। फिर उन्होंने जल लेकर आदरपूर्वक दोनों भाइयों के चरण धोए और फिर उन्हें सुंदर आसनों पर बैठाया॥

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।

प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥

उन्होंने अत्यंत रसीले और स्वादिष्ट कन्द, मूल और फल लाकर श्री रामजी को दिए। प्रभु ने बार-बार प्रशंसा करके उन्हें प्रेम सहित खाया॥

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता॥

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई॥

भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥

रघुनाथजी ने कहा- हे भामिनि! मेरी बात सुन! मैं तो केवल एक भक्ति ही का संबंध मानता हूँ॥ जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, कुटुम्ब, गुण और चतुरता इन सबके होने पर भी भक्ति से रहित मनुष्य कैसा लगता है, जैसे जलहीन बादल दिखाई पड़ता है॥

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥

मैं तुझसे अब अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ। तू सावधान होकर सुन और मन में धारण कर। पहली भक्ति है संतों का सत्संग। दूसरी भक्ति है मेरे कथा प्रसंग में प्रेम॥

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।

चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥

तीसरी भक्ति है अभिमान रहित होकर गुरु के चरण कमलों की सेवा और चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करें॥

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकाशा॥

छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा॥

मेरे (राम) मंत्र का जाप और मुझमें दृढ़ विश्वास यह पाँचवीं भक्ति है, जो वेदों में प्रसिद्ध है। छठी भक्ति है इंद्रियों का निग्रह, शील (अच्छा स्वभाव या चरित्र), बहुत कार्यों से वैराग्य और निरंतर संत पुरुषों के धर्म (आचरण) में लगे रहना॥

सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा॥

आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा॥

सातवीं भक्ति है जगत् भर को समभाव से मुझमें ओतप्रोत देखना और संतों को मुझसे भी अधिक करके मानना। आठवीं भक्ति है जो कुछ मिल जाए, उसी में संतोष करना और स्वप्न में भी पराए दोषों को न देखना॥

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना॥

नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥

नौवीं भक्ति है सरलता और सबके साथ कपटरहित बर्ताव करना, हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और दैन्य का न होना। इन नवों में से जिनके एक भी होती है, वह स्त्री-पुरुष, जड़-चेतन कोई भी हो॥

सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥

जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई॥

हे भामिनि! मुझे वही अत्यंत प्रिय है। फिर तुझ में तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ है। अतएव जो गति योगियों को भी दुर्लभ है, वही आज तेरे लिए सुलभ हो गई है॥

मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा॥

जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु करिबरगामिनी॥

मेरे दर्शन का परम अनुपम फल यह है कि जीव अपने सहज स्वरूप को प्राप्त हो जाता है। हे भामिनि! अब यदि तू गजगामिनी जानकी की कुछ खबर जानती हो तो बता॥

पंपा सरहि जाहु रघुराई। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई॥

सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानतहूँ पूछहु मतिधीरा॥

(शबरी ने कहा-) हे रघुनाथजी ! आप पंपा नामक सरोवर को जाइए। वहाँ आपकी सुग्रीव से मित्रता होगी। हे देव! हे रघुवीर! वह सब हाल बतावेगा। हे धीरबुद्धि! आप सब जानते हुए भी मुझसे पूछते हैं! ॥

बोध वाक्य: ‘परमात्मा मन का भी मन है, प्राण का भी प्राण है, वह वाक का भी वाक है, चक्षु का भी चक्षु है, श्रोत का भी श्रोत है , जो उस परमात्मा ज्योति का हृदयंगम कर लेते हैं, वे इस लोक से बनने के बाद अमर हो जाते हैं।’-केनोपनिषद

बोध कथा:

परोपकार भावना

बड़े शहरों में आजकल भूमिगत नालियां, सीवर लाइन आदि बन गयी हैं। इन्हें साफ करने के लिए गड्ढे बनाकर उसे ढक्कन से ढक देते हैं। पर कई बार इनके ढक्कन खुले रह जाते हैं। कोलकाता में एक मौहल्ले में ऐसी ही एक नाली का ढक्कन खुला रह गया। दो बच्चे वहीं पास में खेल रहे थे। खेलते- खेलते गिर पड़े और जोर-जोर से चिल्लाने लगे, उनकी आवाज सुनकर अपने काम पर जा रहे एक व्यक्ति ने गड्ढे में झाँका। बच्चों को चिल्लाता देखकर वह साइकिल से उतरा और गड्ढे में उतर गया। उसने प्रयासपूर्वक दोनों बच्चों को अपने कंधे पर उठा लिया और किसी तरह गड्ढे से बाहर निकाल दिया, पर इस बीच वह स्वयं बेहोश हो गया क्योंकि इन नालियों में मलमूत्र प्रवाहित होते रहने के कारण जहरीली गैस भर जाती हैं। वह व्यक्ति उस गैस के दुष्प्रभाव से बेहोश होकर वहीं गिर गया। जब तक लोगों ने उसे बाहर निकला, तब तक उसने दम तोड़ दिया। उस व्यक्ति का उन दोनों से कोई परिचय नहीं था। उनको बचाने के लिए रुपये- पैसे का लाभ भी मिलने वाला नहीं था। फिर भी वह अपनी जान की परवाह किए बिना वह गड्ढे में उतरा। स्पष्ट है कि हर जगह पैसा ही महत्वपूर्ण नहीं होता। कई बार परोपकार की भावना और संस्कार भी व्यक्ति की गतिविधियों को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मासिक गीत /गान:

मैं अमर शहीदों का चारण उनके गुण गाया करता हूँ
जो कर्ज राष्ट्र ने खाया है, मैं उसे चुकाया करता हूँ।

यह सच है, याद शहीदों की हम लोगों ने दफनाई है
यह सच है, उनकी लाशों पर चलकर आज़ादी आई है,
यह सच है, हिन्दुस्तान आज जिन्दा उनकी कुर्वानी से
यह सच अपना मस्तक ऊँचा उनकी बलिदान कहानी से।

वे अगर न होते तो भारत मुर्दों का देश कहा जाता,
जीवन ऐसा बोझा होता जो हमसे नहीं सहा जाता,
यह सच है दाग गुलामी के उनने लोहू सो धोए हैं,
हम लोग बीज बोते, उनने धरती में मस्तक बोए हैं।
इस पीढ़ी में, उस पीढ़ी के मैं भाव जगाया करता हूँ।
मैं अमर शहीदों का चारण उनके यश गाया करता हूँ।

यह सच उनके जीवन में भी रंगीन बहारें आई थीं,
जीवन की स्वप्निल निधियाँ भी उनने जीवन में पाई थीं,
पर, माँ के आँसू लख उनने सब सरस फुहारें लौटा दीं,
काँटों के पथ का वरण किया, रंगीन बहारें लौटा दीं।

उनने धरती की सेवा के वादे न किए लम्बे-चौड़े,
माँ के अर्चन हित फूल नहीं, वे निज मस्तक लेकर दौड़े,
भारत का खून नहीं पतला, वे खून बहा कर दिखा गए,
जग के इतिहासों में अपनी गौरव-गाथाएँ लिखा गए।
उन गाथाओं से सर्द खून को मैं गरमाया करता हूँ।
मैं अमर शहीदों का चरण उनके यश गाया करता हूँ।

(-श्रीकृष्ण सरल)

---------------------------------------00--------------------------------

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भागभवेत।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

आलोक -

- स्वामी विवेकानन्द कॅरियर मार्गदर्शन योजना एवं कॅरियर मित्र के उद्देश्यों एवं गतिविधियों की जानकारी दी जाए।
- सुभाषित पंक्तियों और बोध वाक्यों में जीवन का सार होता है, इनमें अगाध जीवनानुभव होता है, इनको समझने से न केवल विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण होगा, अपितु वे इनसे जीवन में मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकेंगे इसलिए सभी विद्यार्थियों को सुभाषित और बोध वाक्यों तथा बोध कथाओं का मर्म समझाते हुए इनको कंठस्थ भी कराया जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को ध्यान में रखते हुए आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संकल्प बढ़ाया जाए। एक साल में सर्टिफिकेट, दो साल में डिप्लोमा एवं तीन साल में डिग्री सहित मल्टीपल एंट्री, मल्टीपल एग्जिट सिस्टम औरचॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस)की जानकारी प्रत्येक विद्यार्थी को दी जाए।
- व्याख्यानों हेतु बाह्य विशेषज्ञों की सहायता के लिए भोपाल कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है। महाविद्यालय के प्राध्यापकों /सहायक प्राध्यापकों के माध्यम से कक्षावार विद्यार्थियों को अभ्यास करवाया जाए ताकि वे अपनी क्षमता एवं रुचि को पहचान पायें।
- विद्यार्थियों को कॅरियर के प्रति जागरूक बनाने हेतु सप्ताह के हर शनिवार को विशेषज्ञों की सहायता से संकायवार प्रेरणात्मक व्याख्यानों का आयोजन ऑनलाइन/ऑफ़लाइन किया जाए तथा संबंधित संकाय में उपलब्ध कॅरियर अवसरों की अनिवार्यतः जानकारी दी जाए।
- संकाय और कक्षावार विद्यार्थियों से प्लेसमेंट हेतु उनकी रुचि, रुझान एवं कौशल की जानकारी लिखित में प्राप्त की जाए तथा महाविद्यालय में इसका संधारण किया जाए। उक्त जानकारी लेते समय जिले, प्रदेश एवं देश में उपलब्ध रोजगार अवसरों/संस्थाओं की प्रोफाइल/जॉब प्रोफाइल की जानकारी भी विद्यार्थियों को दी जाए। प्लेसमेंट हेतु स्थानीय एवं बाह्य रोजगार प्रदाताओं को आमंत्रित किया जाए। प्रकोष्ठ की कॅरियर लायब्रेरी को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।
- प्राचार्यो से आग्रह है कि वे व्यक्तिगत रुचि लेकर अपने स्तर से इस हेतु कार्यवाही सुनिश्चित करने का कष्ट करें, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके। प्रत्येक महाविद्यालय में एक कॅरियर बोर्ड एवं कॅरियर मैगज़ीन का होना सुनिश्चित किया जाए। विद्यार्थियों कोरोजगार के अवसरों / सेवाओं की जानकारी अनिवार्यतः दी जाए।
- प्रदेश के सभी जिलों के महाविद्यालयों में निरंतर ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन कॅरियर अवसर मेलों का आयोजन किया जाएगा। समस्त महाविद्यालय अपने जिले में आयोजित होने वाले कॅरियर अवसर मेलों की संपूर्ण जानकारी एवं आयोजन तिथि, संबंधित आयोजक महाविद्यालय से प्राप्त कर विद्यार्थियों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें ताकि इच्छुक विद्यार्थियों को कॅरियर अवसर मेलों एवं प्लेसमेंट का लाभ प्राप्त हो सके ।
- महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कैंपस प्लेसमेंट के साथ व्यक्तित्व विकास में शासन की शिक्षक- अभिभावक योजना के माध्यम से सतत प्रयत्नशील रहना है। इस हेतु वार्षिक कैलेण्डर में व्यक्तित्व विकास के विषय भी शामिल किये जा रहे हैं ।
- आत्मनिर्भर भारत को दृष्टिगत रखते हुये जो महाविद्यालय ग्रामीण पृष्ठभूमि के हैं एवं जहाँ कृषि या कृषि इतर कार्यों से जुड़े परिवारों के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, ऐसे महाविद्यालय रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को कृषि उपकरणों यथा- वाटरपंप-मोटर, सीड ड्रील, स्प्रिंकलर, ड्रिप इरीगेशन उपकरण के संस्थापन, रख-रखाव एवं मरम्मत की जानकारी के साथ-साथ जैविक खेती, उद्यानिकी, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती, वर्मी कम्पोस्ट आदि की जानकारी/ प्रशिक्षण भी उपलब्ध करायें।

  क्रीड़ा के क्षेत्र में भी आजीविका के काफी अवसर मौजूद हैं, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में स्पोर्ट्स कोटा अंतर्गत। अतः महाविद्यालय में पदस्थ/ कार्यरत क्रीड़ा अधिकारी भी इच्छुक विद्यार्थियों को समय-समय पर क्रीड़ा के क्षेत्र में रोजगार संभावनाओं की जानकारी उपलब्ध कराएं।

(आयुक्त उच्च शिक्षा से अनुमोदित)

जावक क्रमांक 348 / एस.व्ही.सी.जी.एस/22 दिनांक 21.09.2022

निदेशक

स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना